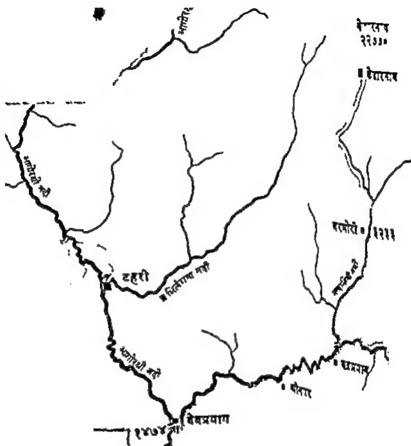


भागीरथी नदी
टहरी
भागीरथी नदी
देवप्रयाग

तीर्थ-यात्रा-मार्ग

हरिद्वार से बद्रीनाथ
और केदारनाथ को

उ
प
पू
द

कामेट
२५४४७

केदारनाथ
२२७७०

केदारनाथ

बद्रीनाथ
२३१९०

१०१५९
बद्रीनाथ

नीलकंठ
२१६४०

६१०५
जोशीमठ

बरमोरी
४२१३

मन्दाकिनी नदी

चमोली

गोहना झील

अलकनन्दा नदी

रुद्रप्रयाग

नन्दप्रयाग

कर्णप्रयाग

श्रीनगर

देवप्रयाग
१४७४

मील

पक्की सड़क
पगडंडी

रुद्रप्रयाग का आदमखोर बघेरा

लेखक

जिम कॉर्बेट

अनुवादक

श्रीराम शर्मा

विशालभारत सम्पादक



ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी प्रेस

बम्बई कलकत्ता मद्रास

१९५७

THE MAN EATING LEOPARD
OF
RUDRAPRAYAG
(in Hindi)
RUDRAPRAYAG KA ADAMKHOR
BAGHERA

JIM CORBETT

Printed in India by V N Bhattacharya, M.A.
at the Inland Printing Works 60/3 Dharamtala Stre t, Calcutta-13
and published by J hn Brown Oxford University Press
Mercantile Buildings, Calcutta-1

अनुवादक की ओर से

गत वर्ष जब इन पंक्तियों के लेखक ने कौर्बेट साहब की अंग्रेजी पुस्तक 'दी मैन ईटिंग लेपर्ड आफ रुद्रप्रयाग' का हिन्दी अनुवाद करना प्रारम्भ किया था तब कौर्बेट साहब जीवित थे। अतः हमारा विश्वास था कि कौर्बेट साहब से इस अनुवाद के कारण निकटतम सम्बन्ध हो जायगा, यों शिकार खेलने के नाते उनसे आत्मिक सम्बन्ध तो था ही। पर अनुवाद छपने से पूर्व कौर्बेट साहब परलोक सिधार गये! निधन के समय उनकी आयु ८० वर्ष थी।

यह बड़े दुःख की बात है कि कौर्बेट साहब जैसे महान् तथा लोकसेवी व्यक्ति को भारत छोड़ना पड़ा और फिर वे पूर्वी अफ्रीका में जाकर बस गये। गढ़वाल और कुमायूँ की निरीह जनता में कौर्बेट साहब के प्रति जो श्रद्धा है वह बड़े बड़े भारतीय कार्यकर्ताओं को प्राप्त नहीं है। इसका मूल कारण है कि कौर्बेट साहब जहाँ विश्व विख्यात शिकारी थे वहाँ वे सच्चे मानव भी थे। हमारा दावा है कि पहले वे मनुष्य थे पीछे एक आखेटक।

कौर्बेट साहब के परिचय के लिए एक अलग लेख की आवश्यकता है। यह काम तो शायद फिर किसी पुस्तक के साथ सम्पन्न हो सके। गढ़वाल और कुमायूँ के लाखों व्यक्ति उनका नाम बड़े आदर से लेते हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो हिमालय के गगनचुम्बी शिखर उनकी याद में अब भी मूक श्रद्धा प्रकट कर रहे हों।

पाठकों को यह बताना आवश्यक है कि अंग्रेजी शब्द leopard के लिए हमने 'बघेरे' शब्द का प्रयोग किया है। कई वर्ष पूर्व तक लोग panther और leopard में भेद करते थे। पर ये एक के ही दो नाम हैं। हिन्दी में इसके अनेक नाम हैं। कहीं गुलबाघ कहते हैं कहीं तेंदुआ कहते हैं और कहीं 'गुलदार' शब्द का प्रयोग होता है। गत तीस वर्षों से लेखक leopard के लिए बघेरा शब्द प्रयोग करता आया है। tiger के लिए शेर का प्रयोग किया गया है।

अनुवाद करने में सुबोध और सरल भाषा का ही प्रयोग किया गया है। कहीं कहीं भाषा-सौष्ठव की दृष्टि से एक दो पंक्तियाँ छोड़ भी दी हैं पर मूल कथा या घटनाचक्र में तनिक भी परिवर्तन नहीं किया गया है।

अंत में पाठकों को यह बताना भी कुछ अनुचित नहीं है कि कौर्बेट साहब विश्व विख्यात शिकारियों में से थे। वन्य पशुओं की वार्ता जानने में तो वे अद्वितीय थे। आशा है हिन्दी में उनके रोमांचकारी वर्णन सीधी-सादी भाषा में पाठकों को रोचक और उपयोगी सिद्ध होंगे।

नवजीवन फार्म — श्रीराम शर्मा
आगरा
विजयादशमी १९५६

विषय सूची

१४२
१४५
१६२
१७८

चित्र सूची

मानचित्र

केदारनाथ का सुप्रसिद्ध मन्दिर



बद्रीनाथ के ऊपर हिमाच्छादित हिमशिखर

१

तीर्थ यात्रा-मार्ग

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से हिमालय का वह भाग जिसे उत्तरा खंड कहते हैं बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। प्राकृतिक सौन्दर्य के अतिरिक्त बदरी और केदार तीर्थ स्थान होने के कारण यह भूभाग समस्त हिन्दुओं के लिए अत्यन्त आकर्षक है। भारतवर्ष के प्रत्येक कोने से भाषाओं की भिन्नता होने पर भी समस्त धार्मिक वृत्तियों के हिन्दू केदारनाथ और बदरीनाथ के मार्गों की यात्रा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। उत्तराखंड की यात्रा का आरम्भ शास्त्रीय विधान से हरिद्वार से होना चाहिए और उचित रूप से यात्रा करने के लिए और पूर्ण पुण्य प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि यात्री हरिद्वार से केदारनाथ तक पैदल यात्रा करें और वहां से बदरीनाथ की पहाड़ी मार्ग से नंगे पैर जायं। हरि की पौड़ी के कुंड में स्नान कर और पवित्र होकर अनेक मंदिरों और मठों के दर्शन हरिद्वार में करें और उनमें श्रद्धानुसार चढ़ावा भेंट करें और हरि की पौड़ी के ऊपर तीर्थ-यात्रा मार्ग के संकीर्ण भाग में बैठे कोढ़ियों को जिनकी अंगुलियां गलकर गिर गई हैं पैसा दो पैसा देना भक्तलोग आवश्यक समझते हैं क्योंकि कुछ न मिलने से कोढ़ी भक्त यात्रियों को अभिशाप देते हैं। इस बात की कोई चिन्ता नहीं करता कि इन अभागे कोढ़ियों के पास उनके चिथड़ों में छिपी इतनी सम्पत्ति होती है जिसकी यात्री को स्वप्न में भी कल्पना नहीं होती। वे अपनी सम्पत्ति को चट्टानों की गुफाओं में भी रखते हैं जिन्हें वे अपना घर कहते हैं। ऐसे व्यक्तियों की गालियों से बच सकें या अभिशाप से मुक्त रह सकें कुछ तांबे के टुकड़े खर्च करके ही तो कोई बुरी बात नहीं है।

रीति रिवाज और धार्मिक दृष्टि से जो कुछ पूजा-अर्चना तथा दान

दक्षिणा हरिद्वार में करने के बाद भारत हिन्दू अपनी लम्बी और कठिन तीर्थ यात्रा प्रारम्भ करने को स्वतन्त्र हो जाते हैं।

हरिद्वार के बाद तीर्थ-यात्रा का पहला रोचक और मनोहर स्थान ऋषीकेश है। यहां पर काली कमलीवाला से प्रथम सम्पर्क होता है। काली कमली वाला नाम इसलिए पड़ा कि काली कमलीवाले क्षेत्र के प्रवर्तक काला कम्बल पहनते थे। बाबा काली कमलीवाले के अनेक शिष्य अब भी काला कम्बल या ढीला लबादा पहनते हैं जिसके बीच में यानी कमर पर बकरी के बालों की रस्सी को चारों ओर बांधे रहते हैं। काली कमली वाले क्षेत्र के लोग देश भर में अनेक जनहितकारी कामों के लिए प्रसिद्ध हैं। पता नहीं तीर्थ यात्रा मार्ग में मिलने वाले अन्य धार्मिक संस्थाओं में से किसी को भी प्रतिष्ठा का कोई अधिकार है पर यह मैं जानता हूं कि काली कमलीवालों को यह अधिकार अवश्य है और उस प्रतिष्ठा के वे अधिकारी भी हैं क्योंकि अपने अनेक मंदिरों और मठों में चढ़नेवाले चढ़ावे में से उन्होंने अस्पताल, दवाखाने, यात्रियों के ठहरने के स्थान-चट्टियां बनवाए हैं और उनको वे भलीभांति चलाते हैं। साथ ही वे गरीबों और दीन दुखियों को धर्मार्थ भोजन देते हैं।

ऋषीकेश के बाद लछमनझूला आता है। लछमनझूले से तीर्थ यात्रा मार्ग झूले का पुल पार कर गंगा के दाहिनी ओर से उसके बाईं ओर को जाता है। यहां ज्ञान-गुण-सागर बन्दरों से सावधान रहना चाहिए। पुल बन्दरों से घिरा और भरा रहता है। सावधान इसलिए रहना चाहिए क्योंकि वे हरिद्वार के कांड़ियों की अपेक्षा अधिक स्वार्थसाधक हैं। अगर उनको यात्री लोग भुने चने या मिठाई की पूजा से प्रसन्न करना भूल जाते हैं तो लम्बे और संकीर्ण पुल पर का उनका रास्ता कठिन और कष्टपूर्ण हो जाता है। गंगा के बाईं ओर तीन दिन की यात्रा के बाद यात्री गढ़वाल की पुरानी राजधानी श्रीनगर पहुंच जाते हैं। श्रीनगर

ऐतिहासिक धार्मिक और व्यापारिक दृष्टि से बड़े महत्व का केन्द्र है और प्राकृतिक सौन्दर्य भी उसका अपूर्व है। उच्च पर्वत शिखरों से घिरी एक चौड़ी और खुली घाटी में वह स्थित है। यही पर सन् १८०५ में गढ़वाली सैनिकों के पुरखों ने गोरखों के विरुद्ध अपना अन्तिम तथा असफल मोर्चा लिया था। स्मरण रहे गत दो महायुद्धों में गढ़वाली सैनिक बड़ी वीरता पूर्वक लड़े हैं। गढ़वाल निवासियों के लिए यह बड़े दुख की बात है कि उनका श्रीनगर उनके राजाओं के प्रासादों के साथ गोहना झील के बांध के फटने से सन् १८९४ में पूर्णतया बह गया। यह बाँध गंगा की सहायक नदी बिरही गंगा की घाटी में पहाड़ के टूटने से बना था। नीचे आधार पर वह ग्यारह हजार फीट चौड़ा ऊपर शिखर पर वह दो हजार फीट चौड़ा तथा नौ सौ फीट ऊंचा था। जब वह बांध फटा तो छ घंटे की सूक्ष्म अवधि में एक नील घन फीट पानी भभराता और धड़धड़ाता बह निकला। बांध के फटने का समय पहले से ही इतना ठीक बता दिया गया था कि यद्यपि बाढ़ से हरिद्वार तक गंगा की घाटी नष्ट हो गई थी और उस पर हर एक पुल बह गया था तब भी केवल एक ही कुटुम्ब की जान वहां गई। इसका कारण था कि उस कुटुम्ब के व्यक्ति वहां से बलपूर्वक हटाए जाने पर भी खतरे के स्थान में वापस पहुंच गए थे।

श्रीनगर से मार्ग को छातीखाल तक कठिन चढ़ाई पड़ती है और यात्री चढ़ाई से परेशान हो जाते हैं। पर इस श्रम जन्य परेशानी का बदला उनको गंगा की घाटी के मनोहर दृश्य और केदारनाथ के ऊपर हमेशा जमी बरफ के दृश्य से हो जाता है। छातीखाल से एक दिन की यात्रा में ही यात्री गुलाबराय का सामने देखते हैं जिसमें यात्रियों के निवास के लिए घास फूस के छप्परों की एक पंक्ति बनी है। वहां एक कमरे का पत्थर का बना मकान है और पास में पानी की हौजें बनी हुई हैं।

यह विशाल और शानदार पौध के पानी की हौदी एक कोण पर निर्मल धारा से भरी जाती है। ग्रीष्म काल में यह धारा देवदार के पौधों के मार्गों द्वारा पहाड की ओर को धीरे धीरे लाई जाती है। साल के अन्य मौसमों में बिना किसी रुकावट के ठाठ से चट्टानों के ऊपर पानी फूट निकलता है। उन चट्टानों पर काई और नए मखमल वाला जैसी कालीन सी बिछी रहती है। साथ ही पानी ग्रीष्मकाल को छोड कर जल की हरी घास की तरह और नीलाम्बर रंग की घास में होकर बहता है।

यात्रियों की पट्टियों से सौ गज आगे और सडक के दाहिनी ओर वहां एक आम का पेड है। यह वृक्ष और उसके ऊपर दुतल्ला मकान एक पंडित महाराज का घर है। यात्रियों के निवास स्थान भी इन पंडितजी महाराज के है। यह इसलिए स्मरणीय है क्योंकि मुझे जो कहानी कहनी है उसमें इन पंडितजी का महत्वपूर्ण स्थान है।

दो मील और आगे समतल भूमि पर जिसे यात्री बहुत दिनों बाद देखते है रुद्रप्रयाग आ जाता है। रुद्रप्रयाग में यात्रीगण और मै अपना अपना रास्ता पकडते है क्योंकि यात्रियों का रास्ता अलकनन्दा पार मंदाकिनी के बाई ओर केदारनाथ को जाता है और मेरा मार्ग पहाडों में से होकर ननीताल को।

यात्रियों के सामने का मार्ग जिसपर करोडों यात्रियों के पदभार पडे है बहुत ही ढलवा और ऊबड खाबड है। उन यात्रियों को जिनके फेफडों ने समुद्रतट से ऊंची वायु में कभी सांस नहीं लिया है—जो अपने मकान की छत की ऊंचाई से किसी और ऊंचाई पर नहीं चढ़े है और जिनके पद मरकती बालू से अधिक कठोर भूमि पर नहीं पडे है बहुत कष्ट होगा। अनेक बार ऐसे अवसर आयेंगे जब यात्री दम फूले हुए सांस मन के प्रयास में पहाडों की तेज चढाई पर परिश्रम से

थकते हुए रक्तरंजित और फटे पैरों से अपने शरीर भार को सँभालते हुए तथा डगमगाते हुए ऊबड़ खाबड़ मार्ग नुकीली चट्टानों और बर्फीली ज़मीन पर परिश्रम करते हुए यात्रियों के मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या इस श्रम और तपस्या द्वारा भविष्य में जो पुण्य मिलेगा और जिसकी वे याचना करते हैं उस मूल्य का * जिसको वे यातनाओं और कष्ट भोगकर अदा करते हैं। पर एक अच्छे हिन्दू को इसियन हाइड्रोसेशन पिरोलिज्म की भांति धीरे धीरे आगे बढ़ने और पथभ्रष्ट होने का उनका खयाल न होगा वरन इस बात में उन्हें संताप होगा कि बिना तपस्या और कष्ट के कल्याण और पुण्य की प्राप्ति नहीं होती और इस विश्व में जितना कष्ट भोगना पड़े यातनाएं जितनी ही अधिक होती हैं उतनी ही अन्त में सुख की प्राप्ति होती है।

२

आदमखोर

सगम के लिए हिन्दी शब्द प्रयाग है। रुद्रप्रयाग में दो नदियाँ मिलती
ह —मदाकिनी केदारनाथ की ओर से और अलकनन्दा बदरीनाथ की ओर
स। रुद्रप्रयाग स आग दोना नदियो की सम्मिलित धारा का भक्तजन
गगा माई कहत ह दुनिया के नाव लाग गगा।

जब कोई जानवर चाहे वह बघरा हो या शेर आदमखोर हो जाता
हैं तो सिमारत के खयाल से उस स्थान का नाम दे दिया जाता ह। जब
किसी आदमखोर का किसी स्थान का नाम दिया जाता ह तब उसका मतलब
यह नहीं कि उस जानवर न अपनी आदमखोरी उस स्थान पर प्रारम्भ
की या उसने जितने मनुष्य मारे वे सब उसी स्थान पर मारे। यह बिल्कुल
स्वाभाविक बात है कि वह बघरा जिसन अपनी आदमखोरी का जीवन
केदारनाथ तीर्थ-यात्रा-मार्ग पर रुद्रप्रयाग स बारह मील की दूरी पर एक
छोटे गाव में प्रारम्भ किया अपने जीवन के दीर्घकाल तक रुद्रप्रयाग के
आदमखोर के नाम स मशहूर हुआ। बघरा के आदमखोर होने के ठीक
वही कारण नहीं है जो शेरो के आदमखोर होने के होते ह। बघरे हमारे
जंगलो के सब पशुओ में सुन्दरतम और आकर्षक होते ह और जब वे
घिराव में आ जाते ह या घायल हो जाते ह तो वे जगल के किसी भी
जानवर स साहस में कम नहीं हैं। पर—यद्यपि ऐसा मानने को
मेरी तबियत नहीं करती—वे उस सीमा तक मुर्दार खानेवाले ह कि वे
भूख से पीडित होन पर जगल में पाई जानेवाली किसी भी मुर्दार चीज
को खा जायेंगे ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अफ्रीका की घनी झाडियों
में सिंह किसी भी मुर्दार को खाते ह।

गढ़वाल के निवासी हिन्दू ह। इसलिए अपने मृतको को वे जलाते ह।

दाव-दाह की क्रिया नियमित रूप से किसी जल धारा या नदी के किनारे होती है ताकि शव भस्म गंगाजी में बह जाय और वहां से फिर समुद्र में पहुंच जाय। चूंकि अधिकांश गांव पर्वत शिखरों पर बसे होते हैं और जल-धाराएं अथवा नदियां अधिकतर मीलों दूर घाटियों में होती हैं, इसलिए यह बात अच्छी तरह समझ में आ जायगी कि दाह-संस्कार में एक छोटे समाज में बहुत से आदमियों की आवश्यकता पड़ती है और उसमें काफी खर्च पड़ता है। शव को ले जाने के अतिरिक्त जलाने के लिए लकड़ी ले जाने और लकड़ी इकट्ठा करने के लिए मजदूरों की भी आवश्यकता पड़ती है। साधारण समय में ये रस्म रिवाज भलीभांति सम्पन्न किए जाते हैं। पर जब पहाड़ों में कोई महामारी—बबा फैलती है, वहां के निवासी इतनी तेज़ी से मरते हैं कि शवों का क्रिया-कर्म नहीं हो सकता तब गांवों में एक सरल और सीधी रीति व्यवहृत होती है और वह यह कि मृतक के मुंह में एक जलता हुआ कोयला रख दिया जाता है तथा शव को एक पहाड़ के किनारे ले जाया जाता है और नीचे घाटी में फेंक दिया जाता है।

उस क्षेत्र में जिसमें बघेरे का प्राकृतिक भोजन स्वल्प हो जाता है, इन शवों को पाकर वह बहुत जल्दी मानव मांस का स्वाद प्राप्त कर लेता है। जब बीमारी खत्म हो जाती है और साधारण स्थिति पुनः स्थापित हो जाती है तब अपने भोजन की उपलब्धि समाप्त हो जाने से वह मनुष्यों को मारना शुरू कर देता है। १९१८ में जब भारतवर्ष में इन्फ्लुएँज़ा की महामारी फैली थी जिसमें दस लाख से अधिक जानें गईं, गढ़वाल को तो उसमें बहुत बुरी तरह भुगतना पड़ा और इस महामारी की समाप्ति पर ही गढ़वाल में यह आदमखोर प्रकट हुआ।

९ जून १९१८ को बजी गांव में रुद्रप्रयाग के आदमखोर बघेरे ने पहली नरहत्या की। उसकी पहली मार का यही लेखा है और अंतिम नरहत्या जो इस आदमखोर ने की वह थी भैसवाड़ा गांव में १४ एप्रिल

सन् १९२६ का। इन दोनों तिथियों के बीच जितने स्त्री-पुरुष इस बघेरे द्वारा मारे गए उनकी संख्या सरकारी कागजात में १२५ है। यह १२५ की संख्या जिसको कि गढ़वाल के तत्कालीन सरकारी कर्मचारी मानते हैं, कुछ ठीक नहीं है। मैं जानता हूँ कि यह संख्या गलत है क्योंकि उन व्यक्तियों का नाम सरकारी लेख में नहीं लिखा गया है जिनको उस बघेरे ने तब मारा जब मैं वहाँ था।

जितने व्यक्ति इस आदमखोर ने मारे उससे कम उसके जिम्मे रखने पर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं किसी प्रकार गढ़वाल के लोगों की यातनाओं को कम करके बताऊँ वे लम्बी यातनाएँ जो उन्होंने आठ दीर्घ वर्षों में सहीं। न मैं उस बघेरे की ख्याति को किसी प्रकार कम करना चाहता हूँ जो गढ़वाल के लोगों ने उसे दी अर्थात् लोग उसे सब काल का अत्यन्त कुख्यात आदमखोर बघेरा कहते हैं।

अस्तु जितने मनुष्य उस बघेरे ने मारे उनकी संख्या कुछ भी हो गढ़वाल का यह दावा है कि यह बघेरा जितना प्रकाशन में आया उतना कभी भी कोई और पशु नहीं आया। स्वयं मेरी जानकारी में उसकी चर्चा यूनाइटेड किंगडम अमेरिका कनाडा दक्षिणी अफ्रीका कीनिया मलाया हाँगकाँग आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड और भारतवर्ष के अधिकांश दैनिक और साप्ताहिक पत्रों में रही थी।

समाचार पत्रों के इस प्रकाशन के अतिरिक्त इस आदमखोर की चर्चा और कहानियाँ भारत के प्रत्येक भाग में साठ हजार यात्रियों द्वारा फैलाई गईं, जो प्रतिवर्ष बद्री और केदार के दर्शनों के लिए आते हैं। आदमखोर द्वारा मारे गए आदमियों के लेखे का सरकारी तरीका यह है कि इस प्रकार मारे गए लोगों के रिश्तेदार या मित्र गाँव के पटवारी को एक रिपोर्ट यथासंभव घटना के बाद ही लिखाते हैं। रिपोर्ट के मिलने पर पटवारी घटनास्थल पर जाता है और अगर उसके आने तक लाश नहीं मिलती

ता वह खाज के लिए कुछ आदमी एकत्र करता है और उनकी सहायता
से वह मरे व्यक्ति की तलाश करता है। अगर पटवारी के आने से
पहले लाश मिल जाती है या खाज करनेवाला दल लाश पा लेता है तो
पटवारी मौके की जाँच करता है और जब उसे विश्वास हो जाता कि
मृतक का सचमुच ही आदमखोर ने मारा है और कत्ल का मामला नहीं
है तब वह शव दाह की आज्ञा दे देता है। स्पष्ट है कि मृतक के
हिसाब से ही दाह और दफन की क्रियाएं होती है। अगर मारे आत्मखोर
द्वारा की गई है तो पटवारी उस क्षेत्र के आदमखोर के सामने नाम रजिस्टर
में दर्ज कर देता है और घटना की पूरी रिपोर्ट जिले के अधिकारी डिप्टी
कमिश्नर को भेजी जाती है। डिप्टी कमिश्नर खुद भी एक रजिस्टर
रखता है जिसमें आत्मखोर द्वारा मारे गए व्यक्तियों का लेखा रहता है।
यदि आदमखोर द्वारा मारे गए व्यक्ति का शव नहीं मिलता या उसका
कोई भाग नहीं मिलता तो मामले की तहकीकात बाद में की जाती
है और उस मौत का जिम्मेदार आदमखोर नहीं रखा जाता। स्मरण
रहे कि आदमखोरों के बारे, में प्राय यह होता है कि उनकी मारी लाश
या टुकड़े नहीं मिला करते क्यों कि वे अपने मानवी शिकार को बहुत दूर
तक ले जाने के आदी होते है। इसके अतिरिक्त जब लोग किसी आत्मखोर
द्वारा घायल किए जाते है और बाद को वे मर जाते है तब उनकी मौत
की जिम्मेदारी भी आत्मखोर पर नहीं रखी जाती।

इस प्रकार स्पष्ट हो गया होगा कि यद्यपि आदमखोर द्वारा मारे गए
लोगों की संख्या का सरकारी लेखा उतना ही अच्छा है जितना उपयुक्त
परिस्थितियों में हो सकता है फिर भी किसी असाधारण आत्मखोर के
लिए सम्भव है कि वह उससे अधिक मनुष्यों के मारने का जिम्मेदार हो जितने
कि उसके बारे में सरकारी कागजों में दर्ज है विशेषकर उस परिस्थिति
में जब कि उसकी आत्मघाती की प्रवृत्ति एक लम्बी अवधि तक चले।

३

आतंक

आतंक शब्द साधारणतया तथा सार्वभौमतया प्रतिदिन की साधारण बातों में इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि इससे वह वास्तविक अर्थ नहीं निकलते जिसमें हमारा वास्तविक मतलब होता है। इसलिए मैं यह पसंद करूंगा कि पाठकों को मैं अपनी भावना बता सकूं कि आतंक का—वास्तविक आतंक का—मानी गढ़वाल के ५०० वर्ग मील में रहने वाले पचास हजार निवासियों के लिए क्या था—उस क्षेत्र के निवासी जिसमें आदमखोर अपनी मानवी शिकार पकड़ता था और उन साठ हजार यात्रियों के लिए जो सन १९१८ से सन १९२६ के बीच उस इलाके से गुजरते थे। मैं कुछ उदाहरण दूंगा यह बताने के लिए कि वहां के यात्रियों और निवासियों के लिए उस आतंक के क्या कारण थे।

कभी भी कोई कर्फ्यू आर्डर इतनी कड़ाई से और इतने ठीक अर्थों में नहीं बरता गया जितना कि रुद्रप्रयाग के आदमखोर बघेरे द्वारा वहां लगाया गया।

केवल दिन में उस क्षेत्र का जीवन साधारण रूप से बीतता था—लोग काम के लिए दूर के बाजारों को जाते थे सबंधियों और मित्रों से मिलने दूर के गांव जाते थे स्त्रियां छप्परों के लिए घास या पशुओं के लिए चारा काटने पहाड़ों पर जाती थीं बच्चे स्कूल जाते थे या जंगलों में बकरियां चराने जाते या सूखी लकड़ी इकट्ठी करने जाते थे और ग्रीष्म काल में यात्री लोग एक-एक करके या बड़ी संख्या में केदारनाथ या बदरीनाथ के पवित्र तीर्थों के मार्ग पर आते-जाते थे। पर ज्योंही सूर्य अपनी दिन चर्या में पश्चिमी क्षितिज की ओर पहुंचता और जैसे ही छाया लम्बी होने लगती वैसे ही उस क्षेत्र की सम्पूर्ण आबादी,

का व्यवहार विचित्र गति से भिन्न प्रकार परिवर्तित हो जाता। जो लोग दूर के बाजारों या गाँवों में पहल-कदमी के लिये गए थे वे घरों की ओर भागदौड़ करने लगते। स्त्रियाँ घास के भारी बोझ लादे हुए ढलवाँ पहाड़ों की ओर रेंगती-सी दिखाई पड़तीं। बच्चे स्कूल के रास्ते में जो खेलकूद में लग जाते या जो बकरियों के झुंडों को लाने में देर करते या जिन्हें सूखी लकड़ियों को इकट्ठा करने में देर होती उन्हें उनकी चिन्तित माताएँ बुलाने में जुट जातीं और थके माँदे यात्रियों को निवासस्थान की ओर जल्दी जाने को कहा जाता यदि कोई स्थानीय निवासी उनके पास होकर गुजरता।

रात्रि के आगमन पर उस सम्पूर्ण क्षेत्र पर एक अपशकुनपूर्ण नीरवता का साम्राज्य छा जाता—वहाँ किसी प्रकार की कोई गति या शब्द नहीं सुनाई पड़ता। सम्पूर्ण स्थानीय आबादी जकड़कर बन्द किए किवाड़ों के पीछे हो जाती और बहुत सी जगह तो लोगों ने नए दरवाजे बनाकर अपनी रक्षा का प्रबन्ध किया था। जिन यात्रियों को मकानों के भीतर ठहरने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता वे यात्रियों के निवास-स्थानों में भेड़-बकरियों की तरह चिपटकर पड़े रहते थे पर सब के सब चाहे वे मकान के अन्दर हों चाहे चट्टियों में आदमखोर के भय को अपनी ओर बुलाने के डर से निस्तब्ध रहते थे।

आठ लम्बे वर्षों की अवधि के लिए गढ़वाल के लोगों और यात्रियों के लिए आतंक मानो यह था।

अब मैं कुछ उदाहरण दूँगा यह समझाने के लिए कि उस आतंक के कारण क्या थे।

एक चौदह वर्षीय अनाथ बालक को ४० बकरियों के झुंड की रखवाली के लिए नौकर रखा गया। वह अछूत जाति का था और प्रतिदिन सायंकाल को जब वह वापस आता तो उसे भोजन दिया जाता और एक छोटे कमरे

में बकरियों के साथ ही उसे बंद कर दिया जाता। यह कमरा नीचे के तल्ले में था। ऊपर दुतल्ले मकानों की एक पंक्ति थी। जिस कमरे में लड़का और बकरियाँ रहती थीं वह लड़के के मालिक यानी बकरियों के मालिक के ऊपर के तल्ले के कमरे के ठीक नीचे था। सानी पर बकरियाँ उसके ऊपर चर न सकें इसलिए लड़के ने कमरे के बाईं ओर के कोने में अपने लिए एक खाट लगा ली थी। इस कमरे में खिड़कियाँ नहीं थीं एक ही दरवाज़ा था और जब लड़का और बकरियाँ सुरक्षित रूप से अन्दर हो जाते तो लड़के का मालिक दरवाज़ा बंद कर देता और कुंडी को देहरी में लगा देता। दरवाज़े में एक अरगड़ा लगा दिया जाता और लड़का भीतर से अपनी सुरक्षा के लिए एक पत्थर अड़ा देता था।

जिस रात्रि को वह अनाथ अपने माता-पिता से मिलने यमपुर सिधारा दरवाज़ा नियमानुसार उसी तरह बंद था और मुझे लड़के के मालिक की बात में संदेह करने का तनिक भी कारण नहीं मिला। प्रमाणस्वरूप दरवाज़े में अनेक नख चिह्न थे और संभवतः दरवाज़े को पंजों से खोलने के प्रयास में बघेरे ने अरगड़े को स्थान से हटा दिया हो और उसके बाद उसके लिए यह बड़ा आसान था कि वह पत्थर को सरका दे और भीतर घुस जाय। एक कमरे में ४० बकरियाँ ठसी थीं। कमरे का एक कोना कुछ अंधेरा सा था ऐसी अवस्था में बघेरे को घूमने फिरने का स्थान नहीं था। यह अनुमान की बात है कि बघेरे ने दरवाज़े से कमरे के लड़के वाले कोने तक का फासला बकरियों की पीठ पर से पार किया या उनके पेट के नीचे से क्योंकि बकरियाँ उस समय खड़ी अवश्य होंगी।

यह मान लेना उचित होगा कि लड़का उस समय गहरी सो रहा होगा और बघेरे ने दरवाज़ा खोलने में आवाज़ की होगी। उस समय भी लड़का सोता ही रहा जब बघेरा कमरे में घुस आया और बकरियाँ न खड़बड़ और ... किया।

घिरे हुए कान में लड़के को मारने के बाद बघेरा उस खाली कमरे के पार—बकरियों के कमरे से बाहर भाग गई थी—नीचे की ओर पहाड़ के ढाल उतार की ओर ले गया और तब कुछ दूरी तक नदी बन खेतों में होकर पत्थरों से पूरित नाले में सूर्योदय के कई घंटों बाद मालिक ने अपने नौकर के शरीर का यह अवशेष पाया जो बघेरे ने छोड़ दिया था। लड़के का यह अवशेष परमात्मा की उस अनुपम सृष्टि का प्रमाण मात्र था।

यह बात अविश्वसनीय भले ही मालूम हो पर वास्तविकता यह थी कि बकरियों के कोई चोट-फेंट नहीं आई थी। चालीस बकरियों में से एक के भी कोई खरोंच तक नहीं आई थी।

*　　　*　　　*　　　*

एक पड़ोसी अपने मित्र के यहाँ हुक्का पीने देर तक बैठा रहा। कमरे का आकार इस प्रकार था जैसे एक बड़ी रेखा के कोने पर एक खड़ी रेखा समकोण बनाये और कमरे में जो दरवाजा था वह वहाँ से नहीं दिखाई पड़ता था जहाँ दोनों आदमी फर्श पर बैठे दीवार से पीठ लगाए हुक्का पी रहे थे। दरवाजा बन्द था पर साँकल नहीं लगी थी क्योंकि उस रात तक उस गाँव में कोई व्यक्ति मारा नहीं गया था। कमरे में अँधेरा था और मालिक मकान ने जैसे ही अपने मित्र को हुक्का दिया वैसे ही वह जमीन पर गिर गया और धधकते कोयले तथा तमाखू फर्श पर फैल गये। अपने मित्र से यह कहते हुए कि उसे अधिक सावधानी से हुक्का लेना चाहिए वरना जिस कम्बल पर वे बैठे हैं उसमें यह आग लगा देगा आदमी आग समेटने को आगे को झुका और ज्योंही उसने ऐसा किया वैसे ही दरवाजा उसे दिखाई दिया। क्षीण चन्द्रमा अस्त हो रहा था और धूमिल चाँदनी में उसने देखा कि एक बघेरा दरवाजे से उसके मित्र को लिए जा रहा है।

कुछ दिनों बाद जब उस आदमी ने उस घटना को मुझसे बयान किया तब उसने कहा "साहब मैं सत्य बोल रहा हूँ जब मैं आपसे कहता हूँ कि

मन साम ट्रेन तक की आवाज़ नहीं सुनी। न कोई ध्वनि मेरे मित्र से ही हुई हालांकि मेरा मित्र मुझसे एक हाथ की दूरी पर ही बैठा हुआ था। जब बघेरा मेरे मित्र को मार रहा था या लिए जा रहा था तब भी किसी प्रकार की न कोई आवाज़ हुई न आहट। मैं अपने मित्र के लिए कुछ भी नहीं कर सका। इसलिए मैंने तब तक प्रतीक्षा की जब तक बघेरा कुछ देर के लिए चला नहीं गया और तब मैं दरवाजे की ओर सरका और जल्दी से कुंडी लगादी।

*   *   *

एक गांव के मुखिया की पत्नी ज्वर से पीड़ित थी और उसकी परिचर्या के लिए दो सहेलियां बुलाई गई थीं।

मकान में दो कमरे थे। बाहर के कमरे में दो दरवाजे थे। एक दरवाज़ा बाहरी छाए सहन की ओर खुलता था और दूसरा भीतरी कमरे में जाने के लिए था। बाहरी कमरे में एक संकीर्ण खिड़की थी जो फर्श से चार फीट ऊंची थी और इस खिड़की में जो खुली हुई थी पीतल का एक बड़ा बर्तन रखा था जिसमें रोगिणी के लिए पीने का पानी भरा था।

एक दरवाजे के सिवाय जिससे बाहर के कमरे में आया जाता था भीतर के कमरे में कोई खुला स्थान न था।

अहाते की ओर जानेवाले रास्ते वाले द्वार बन्द था और उसकी मजबूती से कुंडी लगी थी और दोनों कमरों के बीच का द्वार पूरा खुला था।

तीनों स्त्रियां भीतर के कमरे में ज़मीन पर लेट रही थीं। रोगिणी का पति बाहरी कमरे में चारपाई पर था। कमरे के उस ओर जो खिड़की से निकटतम था और उसकी चारपाई के निकट फर्श पर एक टिमटिमाती लालटेन जल रही थी जिसकी रोशनी भीतर के कमरे में भी थोड़ी सी ही जाती थी। लालटेन की बत्ती तेल कम जलाने के विचार से धीमी कर दी गई थी।

आधी रात के लगभग जब दोनों कमरों के लोग सो रहे थे बघेरा खिड़की के सकीर्ण भाग से भीतर घुस आया। न मालूम कौन से रहस्यपूर्ण ढंग से उसने पीतल के बर्तन को गिराया नहीं जब कि पीतल का बर्तन खिड़की में पूरी तौर से समाया हुआ था। आदमी की चारपाई के चारों ओर उसने चक्कर काटा और भीतर घुसकर बीमार स्त्री को मार डाला। सोनेवाले उस समय जगे जब बघेरे ने अपने शिकार को खिड़की से बाहर उठाकर ले जाने के प्रयास में पीतल के भारी बर्तन को फर्श पर धड़ाम से गिरा दिया।

जब लालटेन की बत्ती ऊपर की गई तब बीमार स्त्री खिड़की के नीचे सिमटी-सिकुड़ी पड़ी दिखाई दी और उसके गले में चार बड़े दाँतों के चिह्न थे।

एक पड़ोसी ने जिसकी पत्नी उस रात को परिचर्या के लिए गई थी इस घटना के विषय में मुझसे कहा, वह स्त्री ज्वर से बहुत बीमार थी और उसकी हालत बहुत खराब थी आशंका यही थी कि वह मर जाती। इसलिए यह सौभाग्य की ही बात है कि बघेरे ने अपने शिकार के लिए उसे ही चुना।

* * *

दो गूजर अपने तीस भैंसों के टोल को एक चरान से दूसरे चरान को लिए जा रहे थे। वे दोनों भाई थे। उनके साथ बड़े भाई की बारह वर्षीया लड़की भी थी।

उस स्थान के लिए वे दोनों अजनबी थे। या तो उन्होंने आदमखोर के बारे में सुना नहीं था या सम्भवतः यह बात अधिक ठीक होगी कि उन्होंने यह सोचा होगा कि भैंसों से उन्हें संरक्षण मिलेगा।

सड़क के निकट और ग्यारह हजार फीट की ऊँचाई पर समतल भूमि की एक सकीर्ण टुकड़ी थी जिसके नीचे हुसिया के आकार या घाटी से

बनाया हुआ खेत था। खेत एक चौथाई एकड़ के बराबर था। खेत बहुत दिनों से बंजर पड़ा था। दोनों भाइयों ने अपने ठहरने के लिए वह स्थान चुना और चारों ओर से घिरे जंगल में उन्होंने खूंटे काट खेतों में गाड़ दिए और एक लम्बी पंक्ति में उनमें भैंसों को बांध दिया। सायंकाल को लड़की ने भोजन तैयार किया और सब ने खाया। खेत और भैंसों के बीच जो संकीर्ण भूखंड था उस पर तीनों ने कम्बल बिछाए और सो गए।

रात अंधेरी थी इतनी अंधेरी कि हाथ को हाथ दिखाई न पड़ता था। चारों ओर अंधकार का साम्राज्य था। प्रातःकाल के लगभग दोनों भाई भैंसों के घंटे बजने और डरी भैंसों के फुंकारने से जग गए। अपने लम्बे अनुभव से वे समझ गए कि भैंसों की इस प्रकार की आवाज़ से स्पष्ट है कि वहां कोई मांसाहारी जीव है। दोनों ने लालटेन जलाई और भैंसों को शान्त करने और अगर किसी ने रस्सी तोड़ डाली हो तो उसे बांधने को गए। दोनों भाई कुछ मिनटों के लिए ही अपने शयन-स्थान से गए थे और जब वे लौटे तो उन्होंने देखा कि लड़की जिसे वे सोता छोड़ गए थे गायब है। जिस कम्बल पर वह सो रही थी उस पर काफी खून फैला हुआ था।

सवेरा होने पर लड़की के पिता और चाचा खून के खोज पर चले। खोज बंधी हुई भैंसों की पंक्ति के चारों ओर होकर संकीर्ण खेत के पार नीचे ढलान की ओर गया तथा वहीं पर बघेरे ने लड़की को खा लिया था।

लड़की के चाचा ने इस विषय में करुण मुद्रा से कहा 'साहब मेरा भाई अशुभ नक्षत्र में पैदा हुआ था क्योंकि उसके कोई लड़का नहीं है। यही एक लड़की थी। लड़की का जल्दी ही विवाह होने वाला था और लड़की से ही उसे आशा थी कि समय पाकर उसके लड़का होगा जो मेरे भाई का उत्तराधिकारी बनेगा। बघेरे ने उसे पूरी तरह लूट लिया।

अनवरत रूप से मैं ऐसी घटनाएँ लिख सकता हूं क्योंकि उस बघेरे ने



कुमायूं की एक नदी और
वहाँ के मनोरम
प्राकृतिक दृश्य
[पृ १६

का भी ज्ञान हो जाता है। पहले पहल जब मैंने आदमखोर के चिह्नों को देखा था तब मैंने यह गौर से परीक्षा की थी और मुझे मालूम हो गया था कि वह नर बघरा है तथा उसकी जवानी ढल चुकी है और आकार में साधारण बघरों से वह काफी बड़ा है।

ज्योंही मैं उस प्रातःकाल आदमखोर की खोज को चला मैं समझ सका कि वह मुझसे कुछ ही मिनट पहले चला था और मंद तथा समान गति से जा रहा था।

सड़क पर उस अवसर पर कोई यातायात न था पर चूंकि सड़क छोटे और बड़े नाले से घूम फिर कर गई थी और संभवतः बघरा दिन में बाहर न चलने के नियम को भंग कर दे इस कारण मैं हर एक कोने को सावधानी से देखता आगे बढ़ा। एक मील आगे जाकर मैंने देखा कि बघरे ने सड़क छोड़ दी है तथा गांव की ओर की सघन झाड़ियों के जंगल में प्रवेश कर गया है।

जिस स्थान पर बघरे ने यात्रा-मार्ग छोड़ा था वहां से सौ गज पर एक छोटा खेत था जिसके बीचों बीच काटों का एक बाड़ा था। उस को खेत के मालिक ने इसलिए बना दिया था ताकि भेड़ों पर लदान करने वाले लोग यहां डेरा डालें और उस खेत की उर्वरा शक्ति बढ़े। उस बाड़े में भेड़ों और बकरियों का एक झुंड था जो गत संध्या को वहां आया था। झुंड का मालिक एक स्वस्थ व्यक्ति था और उसकी मुखाकृति से प्रकट था कि लगभग अर्धशताब्दी से वह तीर्थ-यात्रा मार्ग पर सामान ढोने का काम करता रहा है। जब मैं वहां पहुंचा तो वह अहाते के दरवाजे से झांककर हटा रहा था। मेरे प्रश्नों के उत्तर में उसने कहा कि उसने बघरे को तो नहीं देखा पर ठीक सूर्योदय के समय उसके दो कुत्ते भौंके थे और कुछ ही मिनटों बाद यात्रा-मार्ग के ऊपर जंगल में काकड़ बोला था।

जब मैंने वृद्ध लदान वाले से पूछा कि क्या वह अपना एक बकरा

वचन का मयार हू तब प्रत्युत्तर में उसने पूछा कि मैं उस क्या चाहता हूं। जब मैंने उसे बताया कि मैं उस आदमखोर के लिए साधना चाहता हू तो वह अहाते के बाहर आया द्वार पार झाँककर रखा मेरी सिगरेट स्वीकार की और पास वाली ही वगुलवाली चट्टान पर बैठ गया।

कुछ देर तक हम सिगरेट पीते रहे पर मेरे प्रश्न का उत्तर उसने अभी कुछ नहीं दिया पर थोड़ी ही देर बाद वह बोला 'साहब आप निश्चय यह ही है जिनके बारे में मैंने बदरीनाथ के निकट वाले अपने गाँव से लगा कर यहां तक सुना है और मुझे दुख होता है कि आप अपने घर को छोड़ कर यहां निरर्थक काम के लिए आए हुए हैं। प्रेतात्मा जिसने कि इस इलाके में इतनी हत्या की है वह जानवर नहीं है जिसे गोली या छर्रे या किसी और साधन से जिसे आपने या आपसे पहले जो कुछ कर चुके हैं मारा जा सकता है। अपनी बात के प्रमाण में आपको एक कहानी सुनाऊंगा तथा दूसरी सिगरेट पीता रहूंगा। यह कहानी मुझसे मेरे पिता ने कही थी और यह सर्व विदित है कि मेरे पिता ने कभी झूठ नहीं बोला। कहानी इस प्रकार है बात तब की है जब मेरा जन्म नहीं हुआ था और मेरे पिता युवा थे। उस समय एक दुष्ट आत्मा हमारे गाँव में प्रकट हुई ठीक उस प्रेतात्मा की भांति जो इस देश को बदनाम पहुंचा रही है। सब लोग कहते थे कि वह एक बघेरा था। पुरुष स्त्री और बच्चे अपने घरों में ही मारे गए और उस जानवर को मारने के लिए सब प्रयत्न किए गए जैसे अब किए जा रहे हैं। फन्दे लगाए गए मचान पेड़ों पर बैठे और बघेरे पर गोली और छर्रे चलाए गए, जब उसे मारने के सब प्रयत्न विफल हुए तब सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच कोई भी अपने घर से बाहर निकलने का साहस न करता था।

'तब मेरे पिता ने गाँव के पंच और पास पड़ोस के गाँव के पंचों ने एक पंचायत करने की आज्ञा दी और जब इकट्ठे हो गए सब पंचों ने

पंचायत को संबोधित करके कहा 'हमलोग यहाँ पर इस आदमखोर बघेरे से पिंड छुड़ाने के लिए नया ढंग निकालने को एकत्र हुए हैं।' तब एक बूढ़ा जो श्मशान घाट से फौरन ही आया था जिसका नाती पिछली रात को मारा गया था उठा और उसने कहा 'वह बघेरा नहीं था जो मेरे मकान में घुसा और मेरे बगल में सोते नाती को मार डाला वरन वह हमारे ही समाज में से वह व्यक्ति है जब उसे मानव-मांस खाने की इच्छा होती है तो बघेरे का रूप धर लेता है। ऐसा जीव उन प्रयत्नों से नहीं मारा जा सकता जिनका अब तक प्रयोग होता रहा है। वह तो अग्नि द्वारा ही मारा जा सकता है। मेरा शक उस मोटे साधू पर है जो टूटे मन्दिर के निकट झोपड़े में रहता है।'

'इस बात को सुनकर बड़ा शोर मचा और कुछ ने कहा कि नाती के दुःख में बुड्ढे की अक्ल मारी गई है। कुछ ने जोर देकर कहा और स्मरण दिलाया कि बुड्ढा ठीक कहता है क्योंकि बघेरे की मार ठीक उसी समय से शुरू हुई है जब से साधू गाँव में आया। साधू की यह भी आदत है कि बघेरे की मार के अगले दिन वह धूप में अपनी चारपाई पर पड़ा सोता रहता है।

जब मीटिंग में शान्ति स्थापित हुई तब मामले पर काफी विचार हुआ और पंचायत ने यह फैसला किया कि फौरन ही कोई कदम नहीं उठाना चाहिए पर साधू की गतिविधि पर ध्यान रखना चाहिए। उपस्थित लोगों ने अपने आपको तीन दलों में विभाजित कर लिया। पहले दल का काम था कि वह साधू पर तब तक नजर रखे जब तक बघेरे की दूसरी मार की आशंका हो। बात यह थी कि नियत अवधि में ही बघेरा गाँव में मार करता था।

'रातों में जब पहले और दूसरे दल निगरानी पर थे साधू ने अपनी कुटिया नहीं छोड़ी।

'मेरे पिता तीसरे दल के साथ थे और रात पड़ते ही वे चुपचाप अपने स्थान पर जा बैठे। शीघ्र ही कुटिया का दरवाजा धीरे-धीरे खुला और साधु उसमें से निकला और रात में विलीन होगया। कुछ घंटों के बाद पहाड़ के ऊपर की ओर से एक कोयला बनानेवाले की झोंपड़ी की ओर से वायु के सहारे कँपकँपाती-सी उत्पीड़ित आवाज़ आई और उसके बाद फिर घोर शांति छा गई।

उस रात को मेरे पिता के दल के किसी व्यक्ति ने आँख तक न झपकाई और प्राची में जैसे ही उषा ने अंगड़ाई ली उन्होंने देखा कि साधु तीव्र गति से कुटिया की ओर बढ़ा चला आ रहा है। उसके हाथों और मुँह से खून बह रहा था।

जब साधु अपनी कुटिया में प्रवेश कर गया और जब उसने किवाड़ बन्द कर लिए तब उसके रखवाले उसकी कुटिया तक गए और चौखट से उस कुंडे में कुंडी लगी। तब मेरे पिता के दल का प्रत्येक व्यक्ति साधु के पास के ढेर पर गया और सूखी घास का एक एक ढेर लेकर वे लौटे और उस प्रातःकाल जब सूर्योदय हुआ तब उस कुटिया के स्थान पर बस सुलगती हुई राख थी और उसी दिन से बघेरे का भाग भी बन्द हो गई।

'इस इलाके में अभी तक यहाँ के अनेक साधुओं में से किसी पर भी किसी को सन्देह नहीं हुआ था। पर जब किसी पर सन्देह होगा तब जो तरीका मेरे पिता के समय में व्यवहृत हुआ वह यहाँ भी काम में लाया जायगा और जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक गढ़वाल के लोगों को यातनाएँ भुगतनी पड़ेंगी।

"आप मुझसे पूछते हैं कि क्या मैं अपना बकरा बेचूँगा? साहब मैं बकरा नहीं बेचूँगा क्योंकि बिक्री के लिए मेरे पास कोई बकरा नहीं है। पर अगर मेरी कहानी सुनने के बाद भी आप किसी जानवर को उसके लिए बाँधना चाहते हैं जिसे आप आदमखोर बघेरा समझते हैं तो मैं आपको

मैं एकान्त और नीरव स्थानों में इतना रहा हूँ कि मैं शायद ही कल्पना में भी स्वप्न देखता। जो मास मैंने रुद्रप्रयाग में कई बार दिन और रात बैठकर बिताए एक अवसर पर तो मैं २८ रात पुल की निगहबानी करते बैठा रहा गाँव की ओर आनेवाले रास्तों को देखते मेरा तथा पशुओं की लाशों को देखते-देखते मैं कभी-कभी आदमखोर की कल्पना कर बैठता कि वह बड़ा हल्के रंग का पशु है जिसका शरीर बघेरे का और सिर दैत्य का।

यह भी कल्पना आई जब मैं रात भर बैठा देख रहा था कि दैत्य लुढ़कता और हिलता डुलता एक विचित्र अट्टहास के साथ मेरी ओर आया और उसको उल्लू बनाने के मेरे निरर्थक प्रयत्नों पर हँसता हुआ बढ़ा और उस समय की आशा में उसने होंठ चाटे कि एक क्षण की असावधानी में जब उसे मेरे गले में दाँत गाड़ने का मनोवांछित अवसर मिलेगा।

यह पूछा जा सकता है कि जब गढ़वाल के लोग रुद्रप्रयाग के आदमखोर बघेरे से उत्पीड़ित और खतरे में थे तब आखिर सरकार क्या कर रही थी। मैं सरकार का वकील नहीं हूँ इसलिए गवर्नमेंट की ओर से कहने का मुझे कोई हक नहीं है पर दस सप्ताह उस इलाके में घूमने के बाद —और उस अवधि में मैं सैकड़ों मील पैदल चला और भय-ग्रस्त इलाके के अधिकांश गाँवों में गया—मैं इस बात को दावे से कह सकता हूँ कि सरकार ने उस खतरे को दूर करने के लिए जो कुछ उसकी शक्ति में था किया। इनामों की घोषणा की गई। स्थानीय लोगों का विश्वास था कि यह इनाम नकद रुपयों में दस हजार रुपये और दो गाँव साथ पुरस्कार में थे। ये इनाम और पुरस्कार गढ़वाल के चार हजार लाइसेंस-धारियों में से प्रत्येक को आदमखोर को मारने या घातक बनाने को काफी प्रेरणामूलक थे। अच्छी तनख्वाहों पर चुने शिकारी नौकर रखे

गये और उनसे वायदा किया गया कि अगर वे सफल हुए तो उन्हें विशेष पुरस्कार भी मिलेगा। चार हजार लाइसेंस-धारी तो गढ़वाल में थे ही पर उनके अतिरिक्त तीन सौ से अधिक बन्दूकों के विशेष लाइसेंस इसलिए दिए गए ताकि आदमखोर मारा जा सके। लैंसडाउन स्थित गढ़वाली सैनिकों को आज्ञा दी गई कि जब वे छुट्टी पर जायें तब राइफल साथ लेते जायें या उनके अफसरों ने उनको शिकार खेलने के हथियार लिए। सम्पूर्ण भारत के शिकारियों से समाचारपत्रों द्वारा अपील की गई कि वे इस आदमखोर को पकड़ने में सहायता दें। दर्जनों ही दरवाजेनुमा कटघरे बनाए गए जिनमें जीवित बकरे रखे गए। गांव को आनेवाले रास्ते में जिससे यह आदमखोर आया-जाया करता था, दस पिंजड़े लगाए गए। पटवारियों और अन्य सरकारी अफसरों को जहर इसलिए बाँटा गया कि जब बघेरा किसी मनुष्य को मारे तब उसकी लाश में वे जहर डाल दें। स्वयं सरकारी अफसर अपने काम में समय निकाल कर तथा बड़ा खतरा उठा कर उस आदमखोर की तलाश में लगे रहते थे। इन सब अनेक तथा सामूहिक प्रयत्नों का कुल जमा यह नतीजा निकला कि बघेरे की पिछली टांग के पंजे की गद्दी में जरा-सी खरोंच बन्दूक की गोली से हो गई और उसके एक नाखून की नोक का एक छोटा टुकड़ा उड़ गया। दूसरा नतीजा यह हुआ कि गढ़वाल के डिप्टी कमिश्नर ने अपने कागजात में इन्दराज किया कि अब तक किसी बुरे असर की अपेक्षा बघेरा ठाठ से अपने जीवन-यापन में डटा है और जो जहर मानवी लाशों द्वारा उसके पेट में पहुंचा है उससे उत्तेजना ही मिली प्रतीत होती है।

सरकारी रेकार्डों में तीन दिलचस्प घटनाओं का उल्लेख है जिन्हें मैं सार रूप से दे रहा हूं —

प्रथम समाचारपत्रों द्वारा शिकारियों से जो अपील की गई थी उसके उत्तर में दो युवक अफसर अक्तूबर सन १९२१ में रुद्रप्रयाग आए। उनको

निश्चित ध्येय था कि वे आदमखोर को मारें। इसका क्या कारण था जो उन्होंने सोचा कि बघेरा रुद्रप्रयाग में सस्पेंशन ब्रिज से होकर अलकनंदा के एक किनारे से दूसरे किनारे की ओर जाता है मैं नहीं कह सकता। कारण कुछ भी हो उन्होंने यह निश्चय किया कि वे अपने प्रयत्नों को उसी पुल पर सीमित रखेंगे और जैसे ही बघेरा रात में पुल पार करेगा वे उसे मार देंगे। झूलते हुए लोहे के रस्सों को पुल के एक सिरे से दूसरे तक ले जाने के लिए पुल के हर छोर पर मीनार है। इसलिए एक मेजर तिवारी नदी की बाईं ओर की मीनार पर बैठा और उसका साथी नदी की दाईं ओर की मीनार पर बैठा।

इस प्रकार वे उन मीनारों पर दो मास बैठे होंगे कि एक रात को बाएं किनारे की मीनार पर बैठे आदमी ने अपने नीचे महराब से होकर बघेरे को पुल पर आते देखा। जब तक बघेरा काफी पुल पर न आ गया वह प्रतीक्षा करता रहा और तब एकदम उसने फायर किया और बघेरा जैसे ही पुल पर से भागा दाएं किनारे की मीनार पर बैठे आदमी ने ६ कारतूस उस पर दाग दिए। अगले दिन पुल के ऊपर खून पाया गया और पहाड़ी पर जिस ओर बघेरा गया था वहां भी खून मिला चूंकि यह खयाल किया गया कि घाव घातक होगा कई दिनों तक बघेरे की तलाश की गई। कहा जाता है कि घायल होने के ६ माह बाद तक बघेरे ने कोई मनुष्य नहीं मारा।

यह बात मुझसे उन लोगों ने कही जिन लोगों ने सात फायर स्वयं सुने थे और घायल पशु की प्राप्ति के लिए जिन्होंने योग दिया था। दोनों शिकारियों का और मुझे खबर देने वालों का खयाल था कि पहली गोली बघेरे की पीठ में लगी है और संभवतः बाद की गोलियों में से कुछ उसके सिर में लगी हैं और इसी कारण बड़े परिश्रम के साथ विस्तृत खोज होती रही। मन की खोज की जो बातें मुझे बताई गईं उनसे मेरी राय

यह हुई कि शिकारी यह सोचने में गलत थे कि बघेरे को उन्होंने उसके सिर और शरीर में चोट पहुंचाई है क्योंकि खून की खोज जो मुझे बताई गई उससे यह ही सम्भव था कि बघेरे के पैर में ही चोट आई है और बाद में यह जान कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैं जिस नतीजे पर आया वह ठीक था और बाएं किनारे की मीनार पर बैठे आदमी ने जो गोली चलाई उससे बघेरे की पिछले पांव की गद्दी में हल्की खराश हुई थी और उसके नाखून का एक भाग कट गया था और दाएँ किनारे की मीनार पर बैठे आदमी की सब गोलियाँ खाली गई थीं।

दूसरे, लगभग बीस बघेरे जब दरवाजानुमा कटघरों में पकड़ कर मारे गए तब एक बघेरा पकड़ा गया। हर एक का विश्वास था कि वह कुख्यात आदमखोर बघेरा है। पर हिन्दू जनता उसको मारने के लिए तैयार न थी क्योंकि उन्हें इस बात का डर था कि उनकी प्रेतात्माएँ जिनको बघेरे ने मारा था उन्हें सतायेंगी। इसलिए एक भारतीय ईसाई को बुलाया गया। यह ईसाई तीस मील दूर के गांव में रहता था और घटनास्थल पर उसके आने के पूर्व बघेरा कटघरे में रास्ता खोद कर भाग गया।

तीसरे, एक आदमी को मारने के बाद बघेरा अपनी मार के साथ जंगल के एक छोटे-से पर अलग से टुकड़े में लेटा था। अगले दिन जब आदमी की तलाश के लिए खोज की गई तब बघेरा जंगल से जाता हुआ दिखाई पड़ा। थोड़ा पीछा किया जाने के बाद लोगों ने बघेरे को एक गुफा में घुसते देखा। गुफा का मुंह कांटों से बन्द कर दिया गया और उस पर चट्टानों के बड़े-बड़े टुकड़े लाद दिए गए। प्रतिदिन लोगों की भीड़ इस दृश्य को देखने जाती। पांचवें दिन जब लगभग पांच सौ आदमी वहां एकत्र थे एक आदमी जिसका नाम नहीं दिया जाता पर रिपोर्ट में उसे प्रभावशाली कहा है आया और बड़ी घृणापूर्वक उसने कहा 'इस गुफा में बघेरा नहीं है'—यह कहते हुए उसने गुफा के मुंह से कांटे अलग

कर दिए। ज्योंही उसने काँटे उठाये त्योंही से ही गुफा के भीतर से बघरा झपट कर बाहर निकला और लगभग ५ आदमियों की भीड़ में होकर मजे से भाग गया।

ये घटनाएँ तब हुई जब बघरा आदमखोर हो गया था। अगर बघरा पुल पर कटघर में मारा जाता या गुफा में ही मुहर लगा दी जाती तो कई सौ आदमी नहीं मारे गए होते और गढ़वाल बरसों की यातना से बच जाता।

४

आगमन

सन् १९२५ में नैनीताल के बालेट थियेटर में एक खेल देख रहा था। पर्व के अवकाश (इंटरवल) में मुझे रुद्रप्रयाग के आदमखोर की प्रथम बार निश्चित खबर मिली कि गढ़वाल में एक आदमखोर बघेरा है। उस जानवर के विषय में समाचार पत्रों में मैंने खबर भी पढ़ी थी। पर यह जानकर कि चार हजार से ऊपर लाइसेंसवाले गढ़वाल में हैं और केवल ७० मील की दूरी पर लैंसडाउन में अनेक उत्कंठित शिकारी हैं मैंने अनुमान लगाया कि बाघ के मारने की उत्सुकता में मानो लोगों की धक्कापेल हो और ऐसी दशा में वहाँ एक अजनबी का कोई स्वागत न होगा। बालेट थियेटर में मैं एक मित्र के साथ पेय ले रहा था और मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब मैंने यू. पी. के तत्कालीन चीफ सेक्रेटरी (और बाद को आसाम के गवर्नर) माइकेल कीन द्वारा लोगों के समूह में आदमखोर के बारे में कहते हुए तथा आग्रह करते हुए सुना कि लोग उस बघेरे को मारने को जायँ। उस समूह में एक व्यक्ति ने मुझसे जो बात की और जिसकी बात में ताईद हुई उससे मुझे ज्ञात हुआ कि माइकेल कीन की अपील को लोगों ने उत्साह के साथ स्वीकार नहीं किया। लोगों ने जो बात कही वह थी 'ऊँह उस आदमखोर की शिकार को जाया जाय जिसने सौ आदमी मार लिये हैं।'

अगले दिन प्रातःकाल मैं माइकेल कीन से मिलने गया और जो बातें मुझे मालूम करनी थीं कर लीं। माइकेल कीन मुझे ठीक नहीं बता सके कि आदमखोर का दौरदौरा किस इलाके में है। उन्होंने रुद्रप्रयाग जाने और इबटसन से बात करने की राय दी। घर पहुँचने पर मुझे अपनी मेज पर इबटसन का एक पत्र मिला।

इबट्सन—अब सर विलियम इबटसन और बाद को यू पी के गवर्नर के परामर्शदाता—की नियुक्ति हाल में ही डिप्टी कमिश्नर के पद पर गढ़वाल में हुई थी और उनके पहले कार्यों में से एक कार्य यह था कि अपने जिले को उस आदमखोर के भय से मुक्त करने का प्रयत्न करें। इसी सिलसिले में उन्होंने मुझे पत्र लिखा था।

मैंने शीघ्र ही तयारी कर ली। रानीखेत, आदरी और कर्णप्रयाग होते हुए मैं दसवें दिन की शाम को नगरासू के निकट डाक बंगले पर आया। नैनीताल से चलते समय मुझे यह पता नहीं था कि इस बँगले में ठहरने के लिए आवश्यक होगा कि मैं परमिट से सुसज्जित हूं और वहाँ के डाक बंगले के रखवाले को यह आदेश था कि वह किसी को वहां तब तक न ठहरने दे जब तक कि ठहरनेवाले के पास परमिट न हो। इसलिए ६ गढ़वाली जो मेरे सामान के लिए मेरे साथ थे, मेरा नौकर और मैं दो मील और आगे रुद्रप्रयाग की ओर को बढ़े जब तक कि हम रात को टिक सकने योग्य उचित स्थान पर न आ गये।

जब मेरे आदमी पानी और लकड़ियां लाने में व्यस्त थे और मेरा नौकर खाना बनाने का स्थान तयार करने को पत्थर इकट्ठे कर रहा था मैंने कुल्हाड़ी उठाई ताकि मैं रात बिताने के लिए कांटेदार झाड़ी का बाड़ा बनाने के लिए काट लूं। इस मील ऊपर ही हमें चेतावनी दे दी गई थी कि हम आदमखोर के क्षेत्र में प्रवेश कर गए हैं। सायंकाल का भोजन बनाने के लिए अभी ही आग जली उसके थोड़ी ही देर बाद ऊपर पहाड़ पर स्थित गांव से एक उत्तेजित पुकार हमारी ओर आई। हम से पूछा जा रहा था कि हम खुले मैदान में क्या कर रहे हैं और जहां हम थे वहां रहे तो हममें से कोई न कोई आदमखोर द्वारा मारा जायगा। जब हमको कल्याणकारी चेतावनी मिल चुकी और उस चेतावनी देने में उसने एक बड़ा खतरा उठाया था क्योंकि उस वक्त अंधेरा हो गया था। माधो सिंह ने जिसे

कि पाठक पहले ही मिल चुके है* यह इच्छा सब की ओर से प्रगट की 'साहब हम यहा टिकेंगे क्योकि सम्पूर्ण रात रोशनी रखने के लिए लालटेन में पर्याप्त तेल है और आपके पास अपनी राइफल है।

अगले दिन हम रुद्रप्रयाग आ गए और हमारा उन आदमियों द्वारा हार्दिक स्वागत हुआ जिनको इब्टसन ने हमसे मिलने के लिए आदेश दे दिया था।

---

* लेखक की 'कमायूँ के आदमखोर' पुस्तक में चौगढ के नर भक्षक पढ़िए।

५

तहकीकात

मैं रुद्रप्रयाग में दस सप्ताह रहा पर मैं पाठकों को वहाँ के कार्यक्रम की उन दिनों की दिनचर्या देने का प्रयत्न नहीं करूँगा क्योंकि पहले तो इतने दिनों के बाद उसका उल्लेख करना ही कठिन है और इससे पाठक उस उलझन में ऊब जायेंगे। मैं तो केवल अपनी चर्चा अपने अनुभवों में से कुछ अनुभवों के विवरण तक ही सीमित रखूँगा। कुछ ये अनुभव मेरे अपने एकाकी दिनचर्या के संबंध में होंगे और कुछ व्यक्तियों के साथवाले। पर उस उल्लेख से पहले मैं लोगों को उस क्षेत्र के विषय में कुछ जानकारी कराना चाहता हूँ जिस भाग में आदमखोर उस बघेरे का दौर-दौरा रहा और जिसकी शिकार में मैंने दस सप्ताह बिताए।

रुद्रप्रयाग के पूर्व की ओर के पहाड़ पर अगर कोई चढ़े तो उसको उस पाँच सौ वर्ग मील प्रदेश के अधिकांश भाग को देखने का अवसर मिलेगा जिसमें रुद्रप्रयाग का आदमखोर अपना मानवी शिकार करता था। यह क्षेत्र लगभग दो समान भागों में अलकनन्दा द्वारा विभाजित किया जाता है। अलकनन्दा कर्णप्रयाग होती हुई रुद्रप्रयाग के दक्षिण में बहती है और वहाँ पर मन्दाकिनी से यह मिल जाती है। मन्दाकिनी उत्तर और पश्चिम से आती है। दो नदियों के बीच त्रिभुजाकार क्षेत्र अलकनन्दा के बाएँ किनारेवाले क्षेत्र की अपेक्षा कम ऊँचा और ढलवाँ है। इसीलिए दो नदियों के बीच के त्रिभुजाकार क्षेत्र में दूसरे की अपेक्षा अधिक गाँव हैं।

रुद्रप्रयाग के पूर्वी ओर के पहाड़ पर चढ़ने से ऊपर पहाड़ों की आकृति के आर-पार एक पंक्तियाँ सी कम दूरी पर दिखाई पड़ता है वह कृषि भूमि है। यह पंक्तियाँ सकड़ी बने हुए खेत हैं जो कि चौड़ाई में एक गज से लगाकर पचास और कुछ ज्यादा गज हैं। निवासस्थान हर जगह

फारस की जमीन के ऊपरी कोन पर बने हैं। मकान वहाँ इसलिए बनाए जाते हैं ताकि आवारा और जंगली पशुओं से खेती की रखवाली हो सके। खेतों के चारों तरफ झाड़ियाँ या बाड़ नहीं हैं अपवाद स्वरूप ही भले कहीं खेतों के चारों ओर झाड़ियाँ और बाड़ हों। जमीन पर जो प्राकृतिक हरियाली के भूरे और हरे टुकड़े दिखाई पड़ते हैं वे घास पूरित भूमि और जंगल हैं। पहाड़ की ऊँचाई से यह भी दृष्टिगोचर होगा कि कुछ गाँव घास से सम्पूर्णतया घिरे हैं और शेष सम्पूर्णतया जंगल से घिरे हैं मानो उन्होंने घास और जंगल की करधनी पहिन रखी हो। सब पर नजर डालने से सम्पूर्ण भूमि ऊबड़-खाबड़ और कठोर प्रतीत होती है और उसमें अनगिनत गहरे खाल और चट्टानों की चोटियाँ हैं। इस इलाके में केवल दो ही सड़कें हैं। एक रुद्रप्रयाग में आरम्भ होकर केदारनाथ को जाती है और दूसरी मुख्य तीर्थ-यात्रा-मार्ग बदरीनाथ को। इन पंक्तियों के लिखते समय तक दोनों मार्ग संकीर्ण और ऊबड़-खाबड़ थे और उन पर से पहिएवाला कोई वाहन कभी नहीं निकला।

रुद्रप्रयाग के आदमखोर ने १९१८ और १९२६ के बीच जितने मनुष्य मारे उनकी संख्या गाँवों के नामों के सामने दी जाती है।

इस बात को मानना अधिक औचित्यपूर्ण है कि खेती से घिरे गाँवों की अपेक्षा जंगलों से घिरे गाँवों में अधिक मनुष्य मारे जाने चाहिए। पर अगर वह आदमखोर शेर होता तो यह बात निस्सन्देह ठीक बैठती पर आदमखोर बघेरे के लिए जो केवल रात्रि में ही अपना कुत्सित कार्य करता है झाड़ी या खेत का होना या न होना कोई मानी नहीं रखता। फिर भी एक गाँव की अपेक्षा किसी दूसरे गाँव में बघेरे ने अधिक मनुष्य मारे—उसका कारण केवल यह ही है कि जिन गाँवों में लोग सतर्क और सावधान रहे वहाँ अपेक्षाकृत बघेरा कम हत्याएँ कर सका।

५

तहकीकात

मै रुद्रप्रयाग दस सप्ताह रहा पर मैं पाठकों को वहां के कार्यक्रम की उन दिनों की दिनचर्या देने का प्रयत्न नहीं करूंगा क्योंकि पहले तो इतने दिनों के बाद उसका उल्लेख करना ही कठिन है और इससे पाठक उस उल्लेख से ऊब जायेंगे। मैं तो केवल अपनी चर्चा अपने अनुभवों में से कुछ अनुभवों को लिखने तक ही सीमित रखूंगा। कुछ वे अनुभव मेरे अपने एकाकी दिनचर्या के संबंध में होंगे और कुछ इवटसन के साथवाले। पर उस उल्लेख से पहले मैं लोगों को उस क्षेत्र के विषय में कुछ जानकारी कराना चाहता हूं जिस क्षेत्र में आठ वरस तक उस आदमखोर का दौर-दौरा रहा और जिसकी शिकार में मैंने दस सप्ताह बिताए।

रुद्रप्रयाग के पूर्व की ओर के पहाड़ पर अगर कोई चढ़े तो उसको उस पाँच सौ वर्ग मील प्रदेश के अधिकांश भाग को देखने का अवसर मिलेगा जिसमें रुद्रप्रयाग का आदमखोर अपना मानवी शिकार करता था। यह क्षेत्र लगभग दो समान भागों में अलकनन्दा द्वारा विभाजित किया जाता है। अलकनन्दा कर्णप्रयाग होती हुई रुद्रप्रयाग के दक्षिण में बहती है और वहीं पर मन्दाकिनी में वह मिल जाती है। मंदाकिनी उत्तर और पश्चिम से आती है। इन नदियों के बीच त्रिभुजाकार क्षेत्र अलकनन्दा के बाँए किनारेवाले क्षेत्र की अपेक्षा कम ऊंचा और ढलवाँ है। इसीलिए दो नदियों के बीच के त्रिभुजाकार क्षेत्र में दूसरे की अपेक्षा अधिक गांव हैं।

रुद्रप्रयाग के पूर्व ओर के पहाड़ पर चढ़ने से ऊंचे पहाड़ों की आकृति के आर-पार एक पत्तियों का क्रम दूरी पर दिखाई पड़ता है वह कृषि भूमि है। यह पत्तियां मेड़बन्दी बंधे हुए खेत हैं जो कि चौड़ाई में एक गज से लगाकर पचास और कुछ ज्यादा गज है। निवासस्थान हर जगह

नाश्त की जमीन के ऊपरी कोने पर वा ह्। मकान वहा इसलिए वनाए जात ह् ताकि आवारा और जगली पशुआ स खती की रखवाली हो सके। खता के चारा तरफ झाडिया या वाड नहीं ह् अपवाद स्वरूप ही भल कहा खता क चारा ओर झाडिया और बाड हो। जमीन पर जो प्राकृतिक हरियाली के भूरे और हरे टकड दिखाई पडत ह् वे घास पूरित भूमि और जगल ह्। पहाड की ऊँचाई से यह भी दृष्टिगाचर हागा कि कुछ गाँव घास से सम्पूणतया घिरे ह और गव सम्पूणतया जगल से घिर ह् माना उन्होन घास और जगल की करधनी पहिन रखी हो। इस पर नजर डालन से सम्पूण भूमि ऊबड-खाबड़ और कठोर प्रतीत होती ह् और उसमें अनगिनत गहर नाल और चट्टाना की घाटियां ह्। इस इलाके में केवल दो ही सड़कें ह्। एक रुद्रप्रयाग स आरम्भ होकर केदारनाथ को जाती ह् और दूसरी मुख्य तीथ-यात्रा माग बदरीनाथ को। इन पक्तिया क लिखते समय तक दोना मार्ग सकीर्ण और ऊबड-खावड़ थ और उन पर स पहिएवाला काई वाहन कभी नहो निकला।

रुद्रप्रयाग क आदमखोर न १९१८ और १९२६ के बीच जितन मनुष्य मारे उनकी सख्या गावा के नामा के सामन आग दी जाती ह्।

इस् बात का मानना अधिक औचित्यपूण ह् कि खती स घिरे गाँवा की अपक्षा जगलो से घिरे गावों में अधिक मनुष्य मारे जान चाहिए। परअगर वह आदमखोर गर होता तो यह बात निःसदेह ठीक बैठती पर आदमखोर बघरे के लिए जो केवल रात्रि में ही अपना कुत्सित काय करता ह् झाडी या रोक का होना या न होना कोई मानी नहा रखता। फिर भी एक गाव की अपक्षा किसी दूसर गांव में बघरे न अधिक मनुष्य मारे—उसका कारण केवल यह ही ह् कि जिन गावों में लाग सतक और सावधान रहे वहा अपेक्षाकृत बघरा कम हत्याएँ कर सका।

रुद्रप्रयाग के आदमखोर बघरे द्वारा मारे गये लोगों की सूची —
(गांव वार १९१८–२६)

बघरे द्वारा मारे गए लोगों की संख्या प्रति गांव पीछे	नाम गांव
६	चोपड़ा
५	कोठकी रतूड़ा
४	विजराकोट
३	नवाल गायारी कोखडी डडोली कथी भिरमोली गुलाबराय और लमडी
२	बजदू रामपुर मकानी छतोली कानी मन्दाग रौना काई (जोशी) बीरन सारी राना पुनाड तिल्नी बौंथा नगरासू ग्वाड मरवाड
१	आर्मी पीरू भौंसाल मामू बजी भरवाडि बमाटि ग्वाडी पल्लसी काडा धारकोल डगी गर्नों भल्गों बवाई बमिल भसगाव नारी मल्र तमल सत्याण शिवपुरी मान स्यूल कमडा दरमाडी बला बलाकुड सोड भसाडी बजनू बीली धारकोट भगाव आवा धुग क्वारो बामनकाठई फाल थपल्गों बामू लाग बमाडी रुद्र प्रयाग ग्वाड मारल्ना भुकर कमरा सल पावो भमकाड।

वार्षिक योग

सन १९१८	१
सन १९१९	३
सन १९२०	६
सन् १९२१	४
सन १९२२	२४
सन १९२३	२६
सन १९२४	२०
सन १९२५	८
सन १९२६	१४
योग	१२५

यह मैंने पहले लिखा है कि रुद्रप्रयाग का आदमखोर बघेरा नर था। जवानी उसकी ढल गई थी और आकार में अपेक्षाकृत बड़ा था। यद्यपि उमर उसकी ढल गई थी पर वह बेहद मजबूत था। मांसाहारी पशु के शिकार खाने का स्थान इस बात पर अवलम्बित रहता है कि उनमें अपनी शिकार को उतनी दूर ले जाने की कितनी क्षमता है जहां पर वे उसे बिना रोक टोक के खा सकते हैं।

रुद्रप्रयाग के आदमखोर के लिए सब स्थान समान थे क्योंकि वह अपनी भारी से भारी मानवी शिकार को बहुत दूर तक ले जाने की शक्ति रखता था और मेरी जानकारी में एक अवसर पर तो वह अपने शिकार को चार मील तक ले गया। इस अवसर पर जिसकी मैं चर्चा कर रहा हूं बघेरे ने एक स्वस्थ और पूरी उमर के आदमी को उसके अपने मकान में ही मारा और दो मील तक उसे घने जंगल के पहाड़ की तह रेख पर ले गया और फिर नीचे का दूसरी ओर जंगल की घनी झाड़ियों में से दो मील और ले गया। इतनी दूर ले जाने का कोई कारण भी न था क्योंकि बघेरे ने उस आदमी को रात्रि के प्रथम प्रहर में ही मारा था और अगले दिन दोपहर से पहले बघेरे का पीछा भी नहीं किया गया।

बघरे घ्राण शक्ति हीन होते हैं इसलिए आदमखोर बघरों का अपवाद समझ कर अन्य बघरों का मारना जंगल के अन्य सब पशुओं की अपेक्षा सरल है।

किसी अन्य पशु के मारने में इतने तरीके नहीं बरते जाते जितने बघरों को मारने में काम में लाए जाते हैं। इन तरीकों में परिवर्तन इस विचार से होता है कि बघरा केवल शिकार के शौक से मारा जाता है या लाभ की खातिर। अत्यंत रोचक तरीका शिकार की खातिर मारने का यह है कि उनकी खोज से उनके रहने का स्थान मालूम करके पीछा करके गोली मारी जाय। अत्यंत क्रूर तरीका मुनाफे के लिए बाघ मारने का यह है कि जिस जानवर को बघरे ने मारा है उसके मांस में एक छोटा पर अत्यंत विस्फोटक बम रख दिया जाय। बहुत-से गांव वालों ने ऐसा बम बनाना सीख लिया है और जब इस प्रकार का बम बघरे के दांत के सम्पर्क में आता है तो वह धड़ाके से फटता है और बघरे के जबड़े को उड़ा देता है। कुछ प्रहारों में तो मौत क्षण भर में ही हो जाती है पर प्रायः अभागा पशु दुःखपूर्ण और तड़प-तड़प कर मौत के लिए कहीं सरक जाता है। जो ऐसा करते हैं उनमें इतना साहस नहीं होता कि वे बघरे के खून पर उसकी खोज के लिए जाय।

बघरे की खोज, स्थान का पता लगाना, पीछा जाना, जहां तक उत्तेजक और दिलचस्प है, वहां वे आसान भी हैं। कारण यह है कि बघरों की पांवों की गद्दी कोमल होती है और यथासंभव वह पगडंडियों और जंगली जानवरों के रास्तों पर चलता है। उनके स्थान का भी पता लगाना कठिन नहीं है। जंगल के पशु और पक्षी भी शिकारी के सहायक होते हैं। उनका छिपकर पीछा करना भी आसान है। यद्यपि उनकी श्रवण शक्ति और दृष्टि बड़ी तेज होती है पर साथ ही उनमें कमी है कि उनके घ्राण शक्ति नहीं होती। शिकारी इस लिए अपने लिए वह ही रास्ता चुनते हैं जो उनके लिए सुगम हो। इस बात का ख्याल नहीं किया जाता कि हवा किस दिशा से चल रही है।

बघरे की चुपचाप खोज और पीछा करने उसके स्थान का पता लगाकर

शिकार के लिए वहां पहुँचने पर राइफल के घोड़े की अपेक्षा कैमरे का बटन दबाने में अधिक आनंद मिलता है। कैमरे के शिकार में उसे घंटों देखा जा सकता है। जंगल में बघेरे से बढ़ कर कोई भी सुन्दर और मनोहर पशु नहीं होता। कैमरे का बटन अपनी तबियत से दबाया जाता है और उसके रिकार्ड की दिलचस्पी कभी कम नहीं होती। राइफल के शिकार में बस एक क्षण घोड़े का खींचना और अगर निशाना ठीक है तो पुरस्कार की प्राप्ति जिसकी कि सुन्दरता और मनोहरता दोनों ही नष्ट हो चुकी होती है।

६

पहली मार

मेरे आने से पूर्व रुद्रप्रयाग में इबटसन ने बघेरे के हाँके का प्रबन्ध किया था। अगर यह हाँका सफल हो जाता तो उसमें १५ मनुष्यों की जानें बच जातीं। हाँका और वे परिस्थितियाँ जिनके कारण हाँका हुआ उल्लेखनीय हैं।

यात्रा-मार्ग की एक छोटी दुकान पर एक दिन सायंकाल के क़रीब बद्री नाथ को जानेवाले २ यात्री थके मांदे आए। दुकानदार ने जब उनकी ज़रूरत पूरी कर दी तो यात्रियों से आग्रह किया कि वे आगे बढ़ जायँ और सूचना दी कि आगे चार मील दूर चट्टी पर भोजन और सुरक्षित स्थान मिल जायगा। यात्री इस सलाह को मानने को तैयार न थे। उन्होंने कहा कि वे लम्बा सफ़र करके आए हैं तथा इतने थके हैं कि उनसे चार मील न चला जायगा। वे केवल यह ही चाहते थे कि उन्हें भोजन बनाने की सुविधा मिल जाय और साथ ही दुकान से लगे चबूतरे पर सोने की आज्ञा। दुकानदार ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया और बताया कि उसकी दुकान पर आदमख़ोर प्रायः आता है और खुले में बाहर सोने के मानी होंगे मौत को आमन्त्रित करना।

इस मामले पर गरमागरम बहस हो रही थी कि इतने में ही घटनास्थल पर मथुरा का एक साधू आया जो बदरीनाथ जा रहा था। साधू ने यात्रियों का पक्ष लिया और उनकी हिमायत में साधू ने दुकानदार से कहा "आप अगर इस दल की स्त्रियों को सुरक्षित स्थान दे दें तो मैं आदमियों के साथ चबूतरे पर सोऊँगा और अगर किसी बघेरे ने चाहे वह आदमख़ोर हो या चाहे वैसा ही लोगों को हानि पहुँचाने का साहस किया तो मैं उसके कान पकड़ कर दो भागों में चीर कर दो टुकड़े कर दूँगा।"

दुकानदार को मजबूरन इस प्रस्ताव से सहमत होना पड़ा। इसलिए उस दल की दस स्त्रियों ने ताल्लेदार दरवाज़े के भीतर एक कमरेवाली दुकान

में शरण ली। दस पुरुष चबूतरे पर एक पंक्ति में लेट गए और साधु उनके बीच में लेटा।

जब चबूतरे वाले यात्री प्रातःकाल जागे तो उन्होंने साधु को गायब पाया। जिस कम्बल पर साधु सो रहा था वह भौंडे ढंग से इकट्ठा मिला। ओढ़ने की जो चादर थी वह चबूतरे पर खिचड़ा पड़ी मिली जिस पर खून के धब्बे थे। आदमियों की उत्तेजित बड़बड़ाहट की आवाज से दुकानदार ने दरवाजा खोला और वह एक नजर में ही समझ गया कि क्या घटना घटी है। जब सूरज निकल आया तब उन आदमियों के साथ दुकानदार नीचे पहाड़ का खून के खोज पर गया। तीन खेतों के पार एक सीमा की दीवार पर वे पहुंचे वहां पर उन्होंने दीवार पर साधु को मरा पड़ा पाया। साधु के शरीर के निचले भाग को बघेरा खा गया था।

इस समय रुद्रप्रयाग में इबटसन का कयाम था। वह इस कोशिश में थे कि आदमखोर को मार सकें। इबटसन के कयाम के दौरान में बघेरे ने कोई मार नहीं की थी इसलिए इबटसन ने निश्चय किया कि बघेरे के संभावित छिपाव के स्थानों में हांका किया जाय। वह स्थान अलकनन्दा के दूर की ओर को था जिसके बारे में स्थानीय लोगों का खयाल था कि आदमखोर दिन का समय वहां लेटकर गुजारता है। इसलिए जब बीस यात्री छोटी दुकान की ओर अपना रास्ता नाप रहे थे तब पटवारी लोग और इबटसन के स्टाफ के अन्य सदस्य पास पड़ोस के गांव में घूम कर चेतावनी दे रहे थे कि वे हांके के लिए तैयार हो जायें और हांका अगले दिन प्रातःकाल होगा।

अगले दिन प्रातःकाल जल्दी ही नाश्ते के बाद अपनी पत्नी और मित्र के साथ जिसका नाम मुझे याद नहीं है इबटसन ने अपने स्टाफ़ के कुछ आदमियों और लगभग दो सौ हांकेवालों के साथ झूले के पुल से अलकनन्दा को पार किया और लगभग एक मील ऊपर के पहाड़ पर गए और हांके के लिए अपने स्थानों पर बैठ गए।

हाँका अभी शुरू हुआ ही था कि हरकारा साधू के मारने की खबर लाया। हाँके का कोई फल नहीं निकला पर हाँका पूरा किया गया। थोड़ी देर के लिए सलाह-मशविरा हुआ फलस्वरूप इबटसन दलबल सहित नदी से दाहिनी ओर ऊपर को बढ़ ताकि वे चार मील ऊपरवाले पुल से नदी को पार कर नदी के दाईं ओर बघेरे की मार के घटनास्थल पर आ जाये। इबटसन का स्टाफ गांवों की ओर बढ़ गया ताकि अधिक से अधिक आदमी दुकान पर इकट्ठे किए जा सकें।

मध्याह्न के उपरान्त तक दो हजार हाँकेवाले और कई एक अतिरिक्त बन्दूकें इकट्ठी हो गईं। दुकान से ऊपरवाला ऊबड़ खाबड़ पहाड़ चोटी से लेकर तलहटी तक छान डाला गया। जो इबटसन को जानते हैं उन्हें यह बताने की जरूरत नहीं कि हाँके का प्रबन्ध बड़े सुसगठित ढंग से हुआ था। हाँके के उद्देश्य में असफलता का कारण यह था कि बघेरा उस क्षेत्र में था ही नहीं।

जब बघेरा या शेर अपनी तबियत से अपने शिकार को खुले में छोड़ देता है तो वह इस बात का चिह्न है कि उस जानवर की उस शिकार में आगे कोई दिलचस्पी नहीं है। अपने शिकार को खाने के बाद वह निश्चय ही काफी दूर चला जाता है। वह फासला दो मील हो, तीन मील हो और आदमखोरों के मामले में तो वह फासला दस या अधिक मील भी होता है। इसलिए जब उस पहाड़ का हाँका हो रहा था तब शायद वह आदमखोर दस मील दूर सुख की नींद सो रहा था।

बघेरे के स्थान की खोज

आदमखोर बघेरे प्रायः कम हुआ करते हैं, इस कारण उनके बारे में कम जानकारी है।

बघेरों का मेरा व्यक्तिगत अनुभव अतिसीमित था। बस इतना कि कई वर्ष पूर्व एक बघेरे से मेरी मुठभेड़ हुई थी। यद्यपि मेरा खयाल था कि जानवरों के मांस की खुराक से हट कर मनुष्य और पशुओं के मांस खाने से बघेरे की आदत उतनी ही बदल जाती है जितनी एक शेर की, फिर भी मुझे यह पता नहीं था कि मनुष्य का मांस खाने से स्वभाव उसका कितना बदलता है। इसलिए मैंने वही ढंग प्रयोग किए जो अन्य बघेरों के मारने में बरते जाते हैं। बघेरों को मारने का सरलतम तरीका यह है कि उनके मारे जानवर या किसी जिन्दा पशु भेड़ या बकरी को बांध कर उनके लिए बैठा जाय। इन दोनों ढंगों में से किसी का भी प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि एक हालत में तो उसकी मारी हुई चीज तलाश की जाय और दूसरे में बघेरे का स्थान निश्चित किया जाय।

रुद्रप्रयाग जाने का मेरा ध्येय यह था कि मैं यह प्रयत्न करूं कि भविष्य में आदमियों की मृत्यु बघेरे द्वारा न हो। मेरा यह इरादा नहीं था कि मैं इस बात की प्रतीक्षा करूं कि बघेरा किसी आदमी को मारे और मैं उसकी लाश पर बैठूं। इसलिए साफ बात यह थी कि मैं आदमखोर के स्थान का पता लगाऊं और जिन्दा जानवर बांध कर उसे मारूं।

अब मेरे सामने बड़ी भारी कठिनाई पेश आई। मुझे आशा थी कि समय पाकर आंशिक रूप में मैं इसका हल निकाल लूंगा। जो मानचित्र मुझे दिए गए थे उनसे पता चला कि आदमखोर का दौर दौरा लगभग पांच सौ वर्ग मील के इलाके में था। अभी भी देश के पांच सौ वर्ग मील का इलाका किसी भी जानवर को ढूंढ लेने और मार लेने के लिए बहुत बड़ा होता है और गढ़वाल के

इस पहाड़ी और ऊबड़ खाबड़ भाग में उस जानवर का कुछ पता लगाना जो रात में ही शिकार करता था पहली दृष्टि में लगभग असम्भव ही प्रतीत हुआ और यह तब तक असम्भव प्रतीत हुआ जब तक मैंने अलकनन्दा नदी का विचार नहीं किया। अलकनन्दा नदी इस क्षेत्र को लगभग दो सम भागों में विभाजित करती है।

लोगों का विश्वास था कि आदमखोर के लिए अलकनन्दा नदी किसी प्रकार से बाधक न थी क्योंकि जब बघरे को नदी के एक किनारे की ओर कोई मनुष्य मारने को नहीं मिलता तो वह नदी को तैर कर दूसरी ओर जाता। मैं इस विचार से सहमत न था। मेरी राय में कोई भी बघरा किसी भी हालत में अपनी इच्छा से अलकनन्दा के बरफ जैसे ठंडे पानी की तेज धार में न उतरेगा। मेरा विश्वास था कि जब आदमखोर नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे जाता था तो वह झूले के किसी एक पुल से जाता था।

उस इलाके में दो ही झूला के पुल थे। एक रुद्रप्रयाग में और दूसरा लगभग बारह मील ऊपर छतवापीपल में। इन दो पुलों के बीच एक तीसरा एक छींके का पुल था। उसी पुल से इबटसन तथा उसके दल और दो सौ व्यक्तियों ने होली के दिन नदी पार किया था। यह रस्सियों का पुल जिसको चूहे को छोड़ कर और कोई पशु पार नहीं कर सकता था अपनी तरह का ही बहुत भयात्मक ढांचा था जैसा कि मैंने पहले कभी नहीं देखा था। हाथ के बने घास के रस्से उमर पाकर जो काले पड गए थे और नीचे नदी से उठनेवाले कोहरे से जिन पर काई-सी पड़ गई थी नीचे नदी के फनदार पानी के ऊपर दोनों ओर बंधे थे। यहां से भी गज नीचे को चट्टान की दो दीवारों के बीच अलकनन्दा हुंकारती हुई फेनी गरजती उफान-सा लेती जाती है। कहते हैं जंगली कुत्तों से पीछा किए जाने पर एक बार काकड़ एक ओर की चट्टान से दूसरी ओर की चट्टान पर कूद गया था। दोनों रस्सों के बीच पर रखने के लिए डेढ़ इंच से लगा कर दो इंच के व्यास की लकड़ियां दो-दो फीट की दूरी पर घास की रस्सी से बँधी थीं। इस सड़े बुरे ढांचे को पार करने में एक और कठिनाई थी वह यह कि एक



[illegible]



मन्दाकिनी और अलकनन्दा
का संगम

[पृ ८२

रस्सी ढीली होकर कुछ लटकी हुई थी फलस्वरूप वे लकड़ियाँ जिन पर पैर रख कर पार करना होता था ४५ के कोण पर हो गई थी। प्रथम बार जब मैंने यह भयानक झूला देखा तो उतरने का टैक्स वसूल करने वाले से मूर्खतापूर्ण प्रश्न किया कि क्या इस पुल की कभी परीक्षा हुई है और उसकी मरम्मत हुई है या नहीं? यह भी स्पष्ट है कि एक पैसे की अदायगी पर टैक्स लेने वाले ने मूल को पार करने के खतरे को उठाने की आज्ञा दी थी। टैक्स वाले ने मुझे दार्शनिक मुद्रा से देखा और कहा 'पुल की कभी परीक्षा नहीं हुई न उसकी मरम्मत पर पुल को तब बदल दिया जाता है जब पुल पार करनेवालों के बोझ से यह टूट जाता है।' बात सुन कर मुझे कँपकँपी आ गई और पुल पार करने के बाद तक यह भावना बनी रही।

झील का पार करना आदमखोर के बूते से बाहर था तब फिर दो ही झूले के पुल रह जाते हैं और मुझे विश्वास हो गया कि अगर मैं बघेरे का उनसे आना जाना बंद कर दूं तो मैं उसको अलकनन्दा के एक किनारे ही सीमित रख सकूँगा। इस प्रकार बघेरे के क्षेत्र का इलाका आधा हो रह जायगा।

इसलिए पहला काम जो था वह यह था कि मैं मालूम कर सकूं कि नदी के किस किनारे की ओर बघेरा था। बघेरे की आखिरी मार यानी साधू का मारा जाना नदी के बाईं ओर हुई थी अर्थात् छतवापीपल के झूले के पुल से कुछ मील दूर और मुझे यह भी यकीन था कि साधू के अवशेष को छोड़ने के बाद बघेरे ने पुल पार कर लिया है। स्थानीय लोगों तथा यात्रियों ने साधू के मरने से पहले कुछ भी सावधानी बरती हो पर साधू मरने के बाद लोगों की सावधानी बहुत बढ़ गई इसलिए उसी क्षेत्र में बघेरे का दूसरी मार करना मुश्किल था। सूची देख कर पाठक पूछेंगे कि इसका क्या कारण है कि एक गाँव के आगे ६ मील दिखाई है। इसका यही उत्तर है कि अनिश्चित काल तक सावधानी बरतना असम्भव है। गढ़वाल में मकान छोटे हैं उनमें पेशाब-पाखाना भी भीतर नहीं है। यह जानकर कि बघेरा दस मील की दूरी पर मार कर रहा है तो

काई बच्चा स्त्री या पुरुष पेशाब-पाखान की मजबूरी दरवाजा एक मिनट को भी न खोले और बघर को वह मौका न दे जिसकी वह कई रातों से प्रतीक्षा कर रहा था असम्भव है।

८

दूसरी मार

कोई फोटो या और कोई साधन बघेरे की शिनाख्त के लिए उपलब्ध नहीं थे जिससे मैं उसके पंजों के चिह्नों को पहचान सकूं। इसलिए जब तक मुझे स्वयं उसकी जानकारी का चिह्न न मिल जाय तब तक मैंने निश्चय किया कि रुद्रप्रयाग के निकटवर्ती इलाकों के सब बघेरों को मैं संदिग्ध आदमखोर ही समझूं और जो बघेरा मिले उसे मारूं।

जिस दिन मैं रुद्रप्रयाग आया मैंने दो बकरे खरीदे। इनमें से एक को मैंने अगले दिन शाम को तीर्थ-यात्रा मार्ग पर एक मील दूर बांधा। दूसरे को मैं अलकनंदा पार ले गया और घने जंगल के रास्ते में बांध दिया क्योंकि वहां मुझे एक बड़े नर बघेरे के पदचिह्न मिले थे। अगले दिन प्रातःकाल जो बकरा को देखने गया तो नदी पार वाला बकरा मरा पाया और थोड़ा भाग खा लिया गया था। बकरा निःसंदेह बघेरे ने मारा था पर खाया था वह किसी छोटे पशु ने संभवतः दबगार में पाई जाने वाली बिल्ली ने।

दिन में आदमखोर का कोई समाचार न पाकर मैंने बकरे की लाश पर बैठना तय किया और तीन बजे लाश से करीब पचास गज की दूरी पर एक छोटे पेड़ की शाख पर बैठ गया। उन तीन घंटों में जब मैं पेड़ पर बैठा रहा तब बघेरे की उपस्थिति का पता चिड़िया या किसी अन्य जानवर की आवाज से आसपास न चला। जब अंधेरा हुआ मैं नीचे उतरा जिस रस्सी से बकरा बंधा था उस रस्सी को काट दिया और बंगले की ओर चल दिया। मजा यह है कि बघेरे ने बकरे को तो मार दिया था पर रस्सी तोड़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

मैं पहले ही कह चुका हूं कि मुझे आदमखोर बघेरे के बारे में कुछ भी ज्ञान न था। खतरे का तो मैं जानता था। पेड़ से नीचे आने से बंगले के पहुंचने तक मैंने अपनी रक्षा के लिए प्रत्येक खतरे पर ध्यान रखा। यह सौभाग्य ही

कोई बच्चा स्त्री या पुरुष पेशाब-पाखाने की मजबूरी दरवाजा एक मिनट को भी न खोले और बघेरे को वह मौका न दे जिसकी वह कई रातों से प्रतीक्षा कर रहा था असम्भव है।

८

दूसरी मार

कोई फोटो या और कोई साधन बघेरे की शिनाख्त के लिए उपलब्ध नहीं थे जिससे मैं उसके पंजों के चिह्नों को पहचान सकूँ। इसलिए जब तक मुझे स्वयं उसकी जानकारी का चिह्न न मिल जाय तब तक मैंने निश्चय किया कि रुद्रप्रयाग के निकटवर्ती इलाकों के सब बघेरों को मैं संदिग्ध आदमखोर ही समझूँ और जो बघेरा मिले उसे मारूँ।

जिस दिन मैं रुद्रप्रयाग आया मैंने दो बकरे खरीदे। इनमें से एक को मैंने अगले दिन शाम को तीर्थ-यात्रा मार्ग पर एक मील दूर बाँधा। दूसरे को मैं अलकनन्दा पार ले गया और घने जंगल के रास्ते में बाँध दिया क्योंकि वहाँ मुझे एक बड़े नर बघेरे के पदचिह्न मिले थे। अगले दिन प्रातःकाल जो बकरा देखने गया तो नदी पार वाला बकरा मरा पाया और थोड़ा भाग खा लिया गया था। बकरा निःसंदेह बघेरे ने मारा था पर खाया था वह किसी छोटे पशु ने संभवतः देवदार में पाई जाने वाली बिल्ली ने।

दिन में आदमखोर का कोई समाचार न पाकर मैंने बकरे की लाश पर बैठना तय किया और तीन बजे लाश से करीब पचास गज की दूरी पर एक छोटे पेड़ की शाख पर बैठ गया। उन तीन घंटों में जब मैं पेड़ पर बैठा रहा तब बघेरे की उपस्थिति का पता चिड़िया या किसी अन्य जानवर की बोली से आसपास न चला। जैसे अँधेरा हुआ मैं नीचे उतरा जिस रस्सी से बकरा बँधा था उस रस्सी को काट लिया और बंगले की ओर चल दिया। मजा यह है कि बघेरे ने बकरे को तो मार लिया था पर रस्सी तोड़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

मैं पहले ही बता चुका हूँ कि मुझे आदमखोर बघेरे के बारे में कुछ भी ज्ञान न था। शेरों को तो मैं जानता था। पेड़ से नीचे आने से बंगले के पहुँचने तक मैंने अपनी रक्षा के लिए प्रत्येक खतरे पर ध्यान रखा। यह सौभाग्य हो

था। अगले दिन प्रातःकाल मैं चल पड़ा और बँगले के फाटक पर मुझे एक बड़े नर बघेरे के खोज मिले। इन खोजों पर मैं वापस सघन नाले तक गया जो जहाँ बकरा मरा पड़ा था उस रास्ते का पार करके जाता था। रात में बकरे को किसी ने छुआ तक न था। जिस बघेरे ने मेरा पीछा किया था वह आदमखोर ही हो सकता था और उस दिन जितना ही मैं चल सकता था उतना ही चला। जिन जिन गावों में गया मैंने बताया कि आदमखोर नदी के हमारी तरफ है और मैंने उन्हें चेतावनी दी कि वे सावधान रहें।

उस दिन कोई घटना न घटी पर अगले ही दिन जैसे ही मैं गुलाबराय से आगे जगह का प्रातःकाल बहुत देर तक छानबीन करने के बाद नाश्ता कर रहा था एक उत्तेजित आदमी मेरे पास दौड़ा आया और बताया कि बगल के ऊपरवाले पहाड़ के गाव में आदमखोर ने पिछली रात एक स्त्री को मार डाला है। स्मरण रहे कि यही पहाड़ है और यही स्थान है जहाँ से आदमखोर के इलाके के पाँच सौ वर्ग मील क्षेत्र का विहंगावलोकन हो जाता है।

कुछ ही मिनटों में मैंने आवश्यक सामान इकट्ठा कर लिया। एक अतिरिक्त राइफल एक बन्दूक कारतूस रस्सी और कुछ मछली मारने की वंशी की डोरी और अपने दो आदमियों तथा उस देहाती के साथ तेज पहाड़ की चढ़ाई की ओर चल पड़ा। हवा में सर्दी थी और जाने के लिए अधिक से अधिक फासला तीन मील का था पर तेज धूप में चार हजार फीट की चढ़ाई में दम फूल रहा था और पसीने में लथपथ मैं गाव में पहुँचा। जो स्त्री बघेरे ने मार डाली थी उसके पति ने सब बात बताई। सायंकाल के भोजन के बाद जो उन्होंने आग की रोशनी में किया था स्त्री ने पीतल के बर्तन धोने और बटोरे इकट्ठी की तथा उन्हें मांजने धोने दरवाजे पर ले गई और आदमी तम्बाकू पीने बैठ गया। दरवाजे पर पहुँच कर स्त्री सीढ़ियों पर बैठ गई और जैसे ही वह बैठी वैसे ही बर्तन एक दूसरे से टकरा कर ठनठनाते हुए जमीन पर गिर गए। यह देखने के लिए कि क्या हो गया है मकान में यथेष्ट प्रकाश न था और जब आदमी ने उसे तुरन्त ही बुलाया

तो उसे कोई उत्तर न मिला। वह आग भागकर आया तो फौरन दरवाजा भड़ कर किवाड़ बन्द कर लिए। उसने कहा अपनी स्त्री के शव की प्राप्ति के प्रयत्न में मैं अपनी भी जान खतरे में डालता तो उससे क्या लाभ था? बात तो उसकी तर्कपूर्ण थी पर थी हृदयहीन और बाद को मुझे पता चला कि जो उसे वेदना थी वह अपनी पत्नी के उठ जाने से न थी जितनी कि अपने उत्तराधिकारी के खतम हो जाने से थी। स्त्री गर्भिणी थी और कुछ ही दिनों में उसके बाल बच्चा होनेवाला था। बघेरे ने स्त्री को मार लिया था और उसके गर्भ से सात विगत बालक मरा मिला था।

जिस दरवाजे पर स्त्री को बघेरे ने पकड़ा था वह गाँव की चार फुट चौड़ी गली की ओर खुलता था। गली पचास गज लम्बी थी और उसके दोनों ओर मकानों की पंक्तियाँ थीं। बर्तन के गिरने की झनझनाहट और उसके फौरन ही बाद आदमी का अपनी पत्नी को चिल्लाकर बुलाना सुनते ही गली का हर दरवाजा एक दम बन्द हो गया। जमीन पर बने चिह्न से प्रकट होता था कि बघेरे ने उस अभागी स्त्री को पूरी गली में खदेड़ा और तब उसको मारा और वहाँ से वह पहाड़ के नीचे की ओर सौ गज की दूरी पर एक छोटे नाले में ले गया जो चारों ओर से ऊँची मेड़ वाली के खेतों से घिरा था। वहाँ पर बघेरे ने अपना भोजन किया और स्त्री के करुणोत्पादक अवशेष छोड़ गया।

एक तंग पुश्ते लगे खेत के किनारे पर नाले में स्त्री का शव-अवशेष पड़ा हुआ था और खेत के दूसरे किनारे पर चालीस गज दूर पात रहित कम बढ़ान का अखरोट का पेड़ था। उस पेड़ की शाखाओं में घास की कुर्री बनी हुई थी जो जमीन से चार फीट थी और पूरी ऊँचाई ६ फीट थी। इसी घास की कुर्री में मैंने बैठने का निश्चय किया।

शव-अवशेष के निकट से एक तंग रास्ता था। इसी रास्ते पर उस बघेरे के चिह्न थे जिसने उस स्त्री को मारा था और ये चिह्न बिल्कुल ही उस बघेरे के पंजों के चिह्नों से हूबहू मिलते थे जिसने पिछली दो रातों को मृत बकरे से दुर्भाग्यग्रसित

पर भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया क्योंकि रात पड़ते ही तड़ित-दर्प हुआ और सुदूर में बादलों की गर्जन-तर्जन सुनाई पड़ी और थोड़ी ही देर में आकाश आच्छादित हो गया। जैसे ही तूफान की बड़ी-बड़ी बूंदों का प्रपात हुआ वैसे ही नाले में मैंने पत्थर लुढ़कने की आवाज सुनी और एक मिनट बाद ठीक मेरे नीचे जमीन पर गिरे फूस को कोई खरोंच रहा था। बघेरा आ गया था। मैं तो तूफानी मेह में बैठा हुआ था और मेरे भीगे कपड़ों में से बर्फानी हवा सरसराती निकल रही थी और बघेरा नीचे घास-फूस में सुखपूर्वक बैठा था। अत्यन्त खराब तूफान मैंने देखे हैं उनमें से वह भी एक था। जब तूफान अपनी पूरी जवानी पर था तब मैंने एक लालटेन को गांव की ओर जाते देखा। मुझे उस लालटेन ले जानेवाले के साहस पर आश्चर्य हुआ। कुछ घंटों बाद मुझे पता चला कि जिस आदमी ने बघेरे और तूफान का इतनी बहादुरी से सामना किया वह पौड़ी से तीस मील चलकर मेरे लिए एक बिजली की टॉर्च लाया था जिसका देने का सरकार ने वायदा किया था। तीन घंटे पहले टॉर्च आती तो काम बन जाता। पर पश्चात्ताप निरर्थक होता है और कौन जाने कि वे चौदह व्यक्तियों की आयु जो टॉर्च आने के बाद मरे कुछ अधिक होती अगर बघेरे ने उनका खून न पिया होता और फिर अगर वह टॉर्च उचित समय में आ भी जाती तो यह बात तो निश्चित नहीं थी कि मैं उस बघेरे को उस रात मार ही देता।

अंधड़ शीघ्र ही समाप्त हो गया और मेरी मज्जा तक में जाड़ा घुस गया। जब बादल खुल रहे थे तब सफेद पत्थर एक दम अदृश्य हो गया और थोड़ी देर बाद मैंने बघेरे को लाश खाते सुना। पिछली रात को वह नाले में ही पड़ा रहा था। उसी ओर से उसने लाश को पाया था। इसी खयाल से कि वह इस रात को भी उसी ओर से आयगा मैंने लाश के करीब पत्थर रख दिया था। बात यह थी कि नाले में मेह के कारण छोटे-छोटे गड्ढे भर गए थे और उनसे बचने के लिए बघेरे ने नया स्थान ले लिया था और ऐसा करने में मेरे चिह्न को ढक लिया था। इस स्थिति का मैंने पहले खयाल ही नहीं किया था। पर बघेरा के

स्वभाव की जानकारी होने के कारण मुझे मालूम था कि मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी और पत्थर दिखाई देगा। दस मिनट बाद पत्थर दिखाई दिया। तुरन्त ही उसके बाद मैंने अपने नीचे एक आवाज़ सुनी और एक धुँधले पीले रंग की किसी चीज़ को कुर्री के नीचे आते देखा। उसका हल्का रंग उसके बुढ़ापे के कारण था पर चलने में वह जो आवाज़ करता था उसका न मुझे पता था और न मैं अब बता सकता हूँ। पर इतना मैं बता दूँ कि वह आवाज़ किसी स्त्री की रेशमी साड़ी की सरसराहट की-सी थी। वह आवाज़ खेत में ठूँठों के कारण न थी क्योंकि खेत में ठूँठ थे ही नहीं। न वह आवाज़ घास के कारण थी। काफी देर की प्रतीक्षा के बाद मैंने राइफल की नली को उठाया और पत्थर पर निशाना बाँधा। विचार यह था कि जिस समय वह पत्थर अदृश्य होगा उसी समय मैं फायर करूँगा। पर भारी राइफल को साधे रहने की भी अवधि होती है। अवधि की सीमा पूरी हो गई तो मैंने राइफल नीचे कर ली ताकि दर्द करनेवाले मेरे पुट्ठों को कुछ चैन मिले। पर जैसे ही मैंने राइफल नीचे की वह पत्थर दुबारा अदृश्य हो गया। अगले दो घंटों में तीन बार यही बात हुई और ऊबकर जब मैंने पत्थर को चौथी बार कुर्री के नीचे आते सुना तो मैं नीचे बाहर को झुका और एक अस्पष्ट वस्तु पर मैंने फायर कर दिया।

तंग पुल की वही जिसे मैंने मचान की संज्ञा दी है इस स्थान पर पक्के दो फीट चौड़ी थी। जब मैंने अगले दिन प्रातःकाल ज़मीन की जाँच की तो दो फुट चौड़े स्थान के कोने में गोली का छेद पाया और थोड़े बाल भी मिले जो बघेरे की गरदन से कट कर इधर उधर फैल गए थे।

उस रात को फिर मुझे बघेरा दिखाई नहीं पड़ा। सूर्य उदय होने पर मैंने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और तब बनार से रुद्रप्रयाग के लिए रवाना हो गया। उस स्त्री के पति और उसके मित्र स्त्री की लाश के अवशेष और गर्भ से निकले क्षत विक्षत बालक के अवशेषों को दाह के लिए ले गए।

९

तैयारियाँ

गत रात्रि की असफलता के कारण पहाड़ की घाटी से रुद्रप्रयाग उतरते समय मेरे चित्त में बड़ी कटुता थी। प्रत्येक दृष्टि से मैं इसी नतीजे पर आया कि जीवन में अवसर का स्थान महत्त्वपूर्ण है और गत रात को संयोग ने मेरे और गढ़वाल के साथ जो चाल चली उसके न तो गढ़वाली ही अधिकारी थे न मैं।

मैं उस अवसरजन्य चालाकी का अधिकारी था या नहीं पर पहाड़ के लोगों को यह विश्वास अवश्य था कि आदमखोरों को मारने की परमात्मा ने मुझे असाधारण क्षमता दी है। यह खबर कि मैं उस आदमखोर से गढ़वाल को मुक्त करने के लिए आ रहा हूँ मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही पहुँच चुकी थी और जब मैं रुद्रप्रयाग से कई पड़ाव दूर रास्ते में ही था तब सड़क पर चलनेवाले लोगों ने तथा गाँवों में आने जाने वाले लोगों ने मेरा उस अटल विश्वास के साथ स्वागत किया मानो मेरे मिशन की पूर्ति में उन्हें पूरा विश्वास हो। यह ठीक है कि मेरा मिशन जितना मर्मस्पर्शी था उतना ही कष्टपूर्ण भी। जैसे-जैसे मैं रुद्रप्रयाग के निकट आया वैसे-वैसे ही उसकी गुरुता और भी बढ़ती गई। अगर कोई व्यक्ति रुद्रप्रयाग में मेरे प्रवेश को देखनेवाला होता तो उसको इस बात पर विश्वास न होता कि जिस व्यक्ति के स्वागत के लिए भीड़ इकट्ठी हुई थी वह युद्ध से लौटनेवाला विजेता वीर न था वरन् एक साधारण व्यक्ति जो अपनी सीमाओं को समझता था कि जिस कार्य की जिम्मेदारी उसने उठाई थी उसकी पूर्ति उसकी शक्ति के बाहर थी।

पाँच सौ वर्ग मील का इलाका! उन पाँच सौ वर्ग मीलों का बहुत-सा भाग घने और झाड़ीदार जंगल से आच्छादित था तथा पूरा का पूरा ऊबड़ खाबड़ था। उतने बड़े क्षेत्र में यहाँ के रहनेवाले लगभग पचास बघेरों में से एक विशेष को मारना असाधारण बात थी। उस सुन्दर क्षेत्र को जब मैंने देखा तब अपने

कार्यभार की दृष्टि से उतना ही कम पसन्द किया। यह स्वाभाविक ही था कि जनता मेरी आशंकाओं से सहमत न थी। उनके लिए तो मैं एक ऐसा व्यक्ति था जिसने औरों को आदमखोरों से मुक्त किया था और जो अब उनके बीच में उस आतंक-निवारण के लिए आ गया था जिसके शिकंजे में वे आठ बरस से रह रहे थे। अविश्वसनीय भाग्य के साथ अपने आगमन के कुछ ही घण्टों के भीतर मैंने उस आदमखोर बघेरे से अपना एक बकरा मरवा लिया था और कुछ बघेरे में टिक कर अलकनन्दा के दूसरी ओर अपना पीछा करा लिया था और मेरा विश्वास था कि अलकनन्दा के दूसरी ओर उससे भुगतना कठिन न होगा। इस प्रारम्भिक सफलता के बाद ही बघेरे ने उस अभागिन स्त्री को मार लिया था। मानव जीवन की क्षति को रोकने का मैंने प्रयत्न किया था पर मैं असफल रहा और मेरी असफलता ने मुझे उसे गोली से मारने का अवसर दिया था जो कि बिना उसके मुझे वह अवसर महीनों तक प्राप्त नहीं होता।

यद्यपि यह तथ्य मेरे सामने था कि बघेरे की इस बात में प्रसिद्धि थी कि वह अपनी मार पर नहीं लौटता था और दूसरी कि रात अंधेरी और तीसरी कि रात को शिकार करने के लिए रोशनी का मेरे पास कोई प्रबन्ध न था तब भी मेरे हिसाब से बघेरे को मारने का पचास फीसदी मौका मेरे लिए था। इस बात का निश्चय मैंने तब कर लिया था जब मैं पिछली रात को अपने मार्ग-दर्शक के पीछे पहाड़ की घाटी पर चढ़ रहा था। जिस दिन मैं माइकेल कीन से मिलने गया था और जब मैंने उनको बताया था कि मैं आदमखोर मारने गढ़वाल जाऊँगा तब उन्होंने पूछा था कि मुझे किसी चीज की आवश्यकता तो नहीं है। यह जान कर कि मेरे पास रात के शिकार को रोशनी का कोई प्रबन्ध नहीं है और मैं कलकत्ते से राइफल पर लगनेवाली टॉर्च को तार से मंगाऊँगा तब उन्होंने कहा 'यह तो एक बहुत ही न्यूनतम बात है जो सरकार आपके लिए करेगी।' माइकेल कीन ने वायदा किया कि भारतवर्ष में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ रोशनी का इन्तजाम हो जायगा और वह मुझे रुद्रप्रयाग में मिल जायगी।

रुद्रप्रयाग में आकर जब मुझे मालूम हुआ कि मेरे लिए राइफल पर लगाने की टॉर्च नहीं आई तब मेरी निराशा की सीमा न रही। पर मेरी निराशा की गुरुता मेरे अधर में क्षमा सकने की क्षमता में कम हो गई। इसी क्षमता में वृक्ष पर मैंने अपनी सफलता को पचास फी सदी माना था। उस रात के प्रयास पर मेरी सफलता इतनी अवलम्बित थी कि मैं अपने साथ एक अतिरिक्त बन्दूक और एक अतिरिक्त राइफल ले गया और जब मैंने घास की कुर्सी में अपने छिपे स्थान से चारों ओर को देखा तब मेरी आशा और भी बलवती हो गई और मैंने अपनी सफलता के अवसर को नब्बे फी सदी आंका। बात यह थी कि निशाना एकदम की दूरी बड़ी निकट थी और यह भी पक्की बात थी कि अगर मेरा निशाना खाली गया या मैंने बघेरे को घायल किया तो बघेरा निश्चय ही मेरे अच्छी तरह बनाए गए छिपे बन्दूक के फन्दा पर से निकलेगा और तब बन्दूक की गोली का निशाना बनेगा। पर विधि की विडम्बना को देखिये। तूफान आया। घुप अंधेरा हो गया। हाथों हाथ दिखाई न पड़ता था और बिना बिजली की रोशनी के मैं असफल हो गया और कुछ ही घंटों में मेरी असफलता का समाचार उस उत्पीड़ित इलाके में फैल जायगा। व्यायाम गरम पानी और भोजन कुछ विचारों पर विचित्र रूप से मरहम का काम करते हैं और पहाड़ के तेज उतार से उतर कर मैंने गरम पानी से स्नान किया कलेऊ किया तथा उसके फौरन बाद ही मैंने अपने भाग्य का सामना बन्द कर लिया और गत रात की असफलता पर उचित रीति से विचार करने योग्य हो गया। बघेरे के बजाय जमीन में गोली लगने पर दुख प्रकट करना उतना ही व्यर्थ था जितना बालू में लुढ़काए दूध पर अफसोस प्रदर्शित करना। अगर बघेरा अलकनंदा के दूसरी ओर नहीं चला गया था तो उस मारने के मेरे अवसर और अच्छे हो गए थे क्योंकि अब मेरे पास रात के शिकार का रोशनी का प्रबन्ध हो गया था। पाठक जानते हैं कि पिछली रात हरकारा तूफान का मुकाबला और बघेरे के डर का तनिक भी विचार न करके मेरे लिए बिजली की रोशनी लाया था।

अब पहली बात जो मुझे करनी थी वह यह थी कि मैं यह मालूम करूँ कि बघेरा अलकनन्दा के दूसरी ओर तो नहीं चला गया है और मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि अगर बघेरा अलकनन्दा के दूसरी ओर जा सकता है तो वह केवल एक ही मार्ग से जा सकता है और वह मार्ग था पुल के दो पुलों में से कोई एक। कलेऊ के बाद इस बात की जानकारी के लिए मैं चल पड़ा। बघेरे ने छतवापीपल के पुल से अलकनन्दा पार की होगी इसकी सम्भावना का भी ख्याल मैंने नहीं किया क्योंकि मेरी भारी राइफल की गोली जो उसके सिर से कुछ ही फीट दूर जमीन में लगी थी और उससे वह कितना ही आतंकित हुआ हो पर उसके लिए सम्भव नहीं था कि थोड़े से घण्टों में ही वह अपनी मार की जगह से चौदह मील का फासला पार कर ले। इसलिए मैंने अपनी खोज रुद्रप्रयाग के आसपास ही रखी।

पुल के लिए तीन रास्ते थे। एक उत्तर से दूसरा दक्षिण से तथा इन दोनों के बीच एक तीसरा रास्ता पगडंडी का था जो रुद्रप्रयाग बाजार से पुल को आता था। इन तीनों रास्तों को बड़ी सावधानी से देखने के बाद मैंने पुल को पार किया और केदारनाथ जाने वाली तीर्थ-यात्रा-सड़क का आधी मील तक निरीक्षण किया और उसके बाद मैंने उस पगडंडी को देखा जिस पर तीन रात पूर्व मेरे बकरे को बघेरे ने मारा था। इस बात से सन्तुष्ट होकर कि बघेरे ने नदी पार नहीं की है मैंने यह निश्चय किया कि दोनों पुलों को रात के समय बन्द करने की अपनी योजना को काम में लाऊँ और इस प्रकार बघेरे को नदी के अपनी ही ओर रखूँ। योजना सीधी-सादी थी और पुल के रक्षकों के सहयोग से—जो नदी के बाईं ओर पुल के पास रहते थे—मेरी सफलता निश्चित थी।

देखने में तो पुल को बन्द करने की योजना बड़ी ही अनुचित और निरंकुश प्रतीत होती थी क्योंकि लगभग तीस मील के फासले में नदी के दोनों किनारों के बीच पुल ही आवागमन का साधन था। पर वास्तव में ऐसी बात न थी क्योंकि बघेरे ने जो आतंक फैला रखा था उसके कारण सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच उन पुलों का प्रयोग करने का कोई व्यक्ति साहस तक नहीं करता था। पुल इस

तरह बन्द किए गए थे कि पुल की मीनारों के बीच चार फुट चौड़ी महराब थी जिसमें उन्हें के रस्से सटे हुए थे और जिसमें ताले जड़ कर मढ़े थे। उन्हीं महराबों में ठूंस कर घास की झाड़ियाँ भर दी जाती थीं और जिनने दिना रात के समय कान्तों से पुल बन्द रहते अथवा में उनकी रक्षा करता उनने बिना किसी भी मनुष्य ने उस पुल पर रास्ता मांगने की इच्छा प्रकट नहीं की।

रुद्रप्रयाग की बाईं ओर की मीनार पर मैंने कुल बीस रातें काटीं और उन रातों की स्मृति हमेशा के लिए अमिट है। मीनार बाहर निकली हुई एक चट्टान पर बनी थी और बीस फुट ऊंची थी। उसके ऊपर एक प्लेटफार्म-सा था जो चार फीट चौड़ा और आठ फीट लम्बा था। हवा की कटन से वह प्लेटफार्म ऊपर चिकना और हमवार हो गया था। इस प्लेटफार्म पर पहुंचने के दो ही साधन थे। एक तो लोहे के रस्सों से जो मीनार के ऊपर छेदों में होकर गए थे और चट्टान से लगभग बीस फीट की दूरी पर पहाड़ में जकड़कर बंधे थे। दूसरा साधन था एक सड़ी-घुसी बांस की सीढ़ी द्वारा। मैंने सीढ़ी का रास्ता ही पसन्द किया क्योंकि लोहे के रस्सों पर तारकोल और काली चीज सी पुती थी जो छूने से हाथ से चिमट जाती थी और जिससे कपड़ों पर अमिट दाग-सा पड़ जाता था।

सीढ़ी दो असमान बांसों की बनी थी जिसमें पतली लकड़ियां रस्सी से ढीली बंधी थीं और मज़ा यह था कि वह सीढ़ी प्लेटफार्म से चार फीट नीचे तक ही पहुंचती थी। सीढ़ी के सबसे ऊपरवाले डंडे पर खड़े होकर और ऊपर चिकने प्लेटफार्म पर अपने हाथों की हथेलियों के घर्षण से अपने ही बलबूते पर प्लेटफार्म पर सुरक्षित पहुंच जाना नट की कला का एक रूप था और जितनी ही बार उस कला का प्रयोग किया जाता था उतना ही वह कम पसन्द आता था।

हिमालय के इस भाग में सम्पूर्ण नदियां उत्तर से दक्षिण बहती हैं। जिन घाटियों में होकर वे बहती हैं उनमें एक हवा चलती है जिसकी गति सूर्योदय और

सूयास्त के साथ बदल्नी ह। इस हवा का स्थानीय नाम डाडू ह और दिन के समय वह दक्षिण से चलती ह और रात्रि के समय उत्तर स।

जिस समय म प्लटफाम पर अपन स्थान पर जाकर बठा करता उस समय हवा प्राय निस्तब्ध रहती पर थोडी ही देर बाद जसे ही सूर्य का प्रकाश क्षीण हो जाता वह हवा चलन लगती और आधी रात क समय तक वह हवा प्रकुपित अधड का रूप धारण करती। प्लटफाम पर कोई ऐसा स्थान या वस्तु न थी जिस म पकड कर बठा रहता। घपण का बचाव क लिए पेट के बल लेटे रहन पर भी—ताकि हवा का दबाव कम हो—इस बात का खतरा तो बना ही रहता कि म प्लैटफाम स उड कर साठ फीट नीच चट्टानो पर जा गिरूँ और फिर वहा से टकराकर बरफ-सी ठडी अलकनन्दा की धारा में। पर यह तो स्पष्ट ही था कि साठ फीट नीचे तज और नुकीली चट्टानो पर गिरन क बाद अलकनन्दा क पानी क तापमान का कोई माना नहीं था। पर बडी विचित्र बात यह ह कि जब कभी मुझ गिरन का डर लगता तब अलकनन्दा क शीतल जल का ही खयाल आता और चट्टानो का नहीं आता। हवा की असुविधा क अतिरिक्त मुझ बहुत-सी छोटी चीटियो के काटन की वदना को भी सहना पडता। चीटिया मरे कपडो में घुस जाती और मरी खाल के छोट टुकड़ काट ल जाती। जिन बीस रातो में मने मीनार पर बठकर पुल की रक्षा की उन दिनो काटो का वहा रखा जाता था और उस अवधि म उस पुल स कवल एक ही जीवित प्राणी निकला और वह प्राणी था—एक गीदड।

१०

जादू

प्रतिदिन मध्याह्नकाल जब मैं पुल पर जाया करता तब मेरे साथ दो आदमी रहते थे। ये दोनों आदमी सीढ़ी ले जाते पुल की मीनार पर सीढ़ी लगाते और मीनार के प्लेटफार्म पर बैठने में मेरी सहायता करते तथा मुझे राइफल देने के बाद वे सीढ़ी हटाकर चले जाते।

दूसरे दिन जब हम लोग पुल पर पहुंचे तब हमने एक श्वेत तथा ढीले वस्त्र धारी व्यक्ति को देखा। उसके सिर और छाती पर कोई चीज चमक रही थी। उसके पास एक चांदी का छः इन्च का सलीब था और वह केदारनाथ की ओर से पुल की ओर आ रहा था। पुल पर पहुंचने पर वह आदमी घुटनों के बल झुका और सलीब को अपने सामने रखते हुए उसने अपना मस्तक नत किया। कुछ देर इस आसन पर रहकर उसने सलीब को ऊंचा उठाया फिर खड़ा हुआ और कुछ कदम आगे बढ़ कर झुका और फिर सलीब को प्रणाम किया। इस प्रकार की प्रक्रिया करते हुए उसने पुल को पार किया।

जैसे ही वह मेरे पास होकर गुजरा वैसे ही अभिवादनार्थ उसने अपना हाथ उठाया पर मैं उस से इसलिए नहीं बोला क्योंकि वह ईश्वराधना में निमग्न था। चमकदार चीजें जो उसके सिर और छाती पर दिखाई पड़ती थीं वे चांदी के सलीब थे। मेरे आदमियों ने इस विचित्र प्रेतरूप व्यक्ति में उतनी ही दिलचस्पी ली जितनी मैंने। और जब उन्होंने उसे रुद्रप्रयाग बाजार की ओर जाने वाली तेज चढ़ाई की पगडंडी पर जाते देखा तब उन्होंने उससे पूछा कि यह आदमी आखिर किस देश का है और कहां से आया है। यह तो स्पष्ट था कि यह ईसाई था पर मैंने उसे बोलते नहीं सुना। उसकी मांसपेशी लम्बे बाल और आबनूस जैसी काली और घनी दाढ़ी को देखकर मैंने अनुमान किया कि यह उत्तरी भारत का रहनेवाला है।

अगले दिन प्रातःकाल सीढ़ी की सहायता से मैं मीनार से उतरा और डाक बंगले की ओर जा रहा था जहां मैं समय का वह भाग बिताया करता था जब मैं निकट और दूर के गांवों में आदमखोर की तलाश को नहीं जाता था कि मैंने श्वेतवस्त्र धारी उस व्यक्ति को सड़क के निकट चट्टान के एक बड़े पत्थर पर खड़े पाया। वहां खड़े होकर वह नदी का निरीक्षण कर रहा था और जब मैंने उससे पूछा कि उस भूभाग में उसका आना क्या हुआ तब उसने बताया कि वह एक दूर देश का निवासी है और गढ़वाल के लोगों को उस प्रेतात्मा से मुक्त करने आया है जो उन्हें सता रही है। जब मैंने उससे पूछा कि आखिर वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करेगा तब उसने बताया कि वह शेर की एक प्रतिमा बनायेगा और प्रार्थना द्वारा उस प्रेतात्मा को उस प्रतिमा में प्रवेश करने को बाध्य करेगा उसके बाद उस प्रतिमा को वह गंगाजी में प्रवाहित कर देगा। नदी उस प्रतिमा को सागर तक ले जायगी जहां से वह आ नहीं सकेगा और इस तरह वह प्रेतात्मा लोगों को कोई हानि फिर न पहुंचा सकेगी।

उस व्यक्ति की अपनी निर्धारित कार्य-क्षमता के विषय में मुझे तो पूरा संदेह था पर उसके अटल विश्वास और अध्यवसाय की प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता। प्रतिदिन वह व्यक्ति मेरे मीनार छोड़ने से पहले ही आ जाता और शाम को जब मैं फिर वहां लौटता तब उसे जुटा ही पाता। शेर की प्रतिमा बनाने में बांस की खपच्चियाँ तोड़ कर जुटाने में रस्सी के बांधने में कागज और रंगीन कपड़ा चिपकाकर और भी कर शेर को आकार बनाने में वह व्यस्त ही रहता। जब वह प्रतिमा लगभग तैयार हो रही थी तब एक रात को जोर का पानी पड़ा और उसके बनाए शेर के ढांचे की प्रतिमा उखड़ गई पर इससे उसके साहस में कमी नहीं आई। बड़ी प्रसन्नता से वह काम पर जुट गया और उसके बनाने में फिर उसकी रागात्मक शक्ति जाग्रत हो गई। आखिर वह दिन आ ही गया जब उसके शेर की प्रतिमा तैयार हो गई। आकार में वह घोड़े के बराबर थी किसी भी परिचित पशु से यह मिलती न थी पर बनी थी वह उसके विचार में बड़ी संतापप्रद।

हमारे पहाड़ी भाइयों में ऐसा कौन सा है जिसे ऐसे तमाशे में भाग लेनेमें आनन्द न आता हो। उसे बाँस से बाँध कर जब वह प्रतिमा एक संकीर्ण पगडंडी द्वारा एक छोटे बालुकामय घाट पर ले जायी गई तब सौ आदमियों से अधिक उसके साथ थे और उन में से अधिकांश ढोल ढाल और तुरही बजा रहे थे। बड़ी सज धज और गाजे-बाजे के साथ वह प्रतिमा नदी-तट पर लाई गई।

बाँस से खोल कर नदी-तट पर नर की प्रतिमा रखी गई। रूपहले सलीब अंकित पगड़ी और श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति ने जिसके हाथ में छः फुटी सलीब थी बालू में धूनी रमाई और बड़ी तन्मयता से प्रेतात्मा का आवाहन किया और प्रार्थना की कि वह प्रतिमा में आए और तब नगाड़े पर चोट पड़ते ही वह प्रेतात्मा गंगाजी में विसर्जित कर दी गई। फूलों और मिठाइयों के पूजा भार के लिए वह प्रतिमा समुद्र की ओर चल पड़ी।

अगले दिन जब मैंने श्वेतवस्त्र-धारी व्यक्ति को चट्टान पर अनुपस्थित पाया तब मैंने प्रातःकाल गंगा-स्नान को आने-जानेवाले लोगों से पूछा कि नर की प्रतिमा में प्रेतात्मा फूँकनेवाला मेरा मित्र कहाँ चला गया है वह कहाँ का रहनेवाला है। सब लोगों ने कहा यह कौन बता सकता है कि कोई साधू कहाँ से आया है और यह किसका साहस है कि जो पूछे वह कहाँ चला गया है?

जिन लोगों से मैंने उस व्यक्ति के बारे में पूछा और जिन लोगों ने उस साधू और महात्मा कहा उनके भाल चंदन चर्चित थे और उन पर तिलक छाप भी थे। वे हिन्दू थे।

भारतवर्ष में जहाँ कोई पासपोर्ट नहीं है अथवा कोई जानकारी का चिह्न नहीं है और जहाँ पर मजहब का इतना मान है—उन लोगों को अपवाद देकर जिन्होंने समुद्र-यात्रा की है—मेरा विश्वास है कि कोई भी गेरुआवस्त्र धारी खप्परधारी अथवा चोगे का कफनीधारी देश के एक कोने से दूसरे कोने तक बड़े मजे से घूम सकता है। उससे कोई यह प्रश्न नहीं करता कि उसकी यात्रा का उद्देश्य क्या है अथवा उसे किस निर्दिष्ट स्थान पर जाना है।

११

चाल-बाल बचना

म अभी पुल पर प्रहरी बना बैठा था कि इबटसन और श्रीमती इबटसन पौड़ी स रुद्रप्रयाग आ गए। डाकबगले में निवास-स्थान अति सीमित था। इसलिए इबटसन और श्रीमती इबटसन की खातिर मन डाक बगला खाली किया और यात्रा मार्ग के दूसरी ओर अपना चालीस पौंड का तम्बू लगाया।

रुद्रप्रयाग के आसपास उस आदमखोर बघेरे न प्रत्यक दरवाज और प्रत्यक खिड़की पर अपन नखा के चिह्न अकित कर दिए थ इसलिए उस बघेरे के विरुद्ध मरा तम्बू कोई रक्षा का साधन न था। मनें अपन आदमिया को इसलिए आदेश दिया कि जिस स्थान पर मेरा तम्बू लगा उसके चारा ओर कटीली झाडिया का बाडा बना दिया जाय। जो स्थान तम्बू के लिए चुना उसक ऊपर छतरी की भाति एक विशालकाय कटीली नाशपाती का पेड था। उस वृक्ष की शाखायें तम्बू स अडती थी इसलिए मनें अपन लोगा को पेड काटन की आज्ञा दी। पर जब पड़ आशिक रूप स कट गया तब मन अपना विचार बदल लिया क्योकि मनें सोचा कि दिन की गर्मी म छाया मिलगी। इसलिए मनें पेड की शाखाओ को छाटन की आज्ञा दी। वह पड बाड से बाहर था और तम्बू के ऊपर ४५ क कोण स झुकता था।

हम अपन तम्बू में सब मिल कर कुल आठ व्यक्ति थ। सायकाल क भोजन के उपरांत हमन बाड के दरवाज का कटीली झाडी स अच्छी तरह स बन्द कर दिया पर दरवाजा बन्द करते समय मुझ ख्याल आया कि आदमखोर क लिए पेड पर चढ़ जाना तथा बाड़ क भीतर कूद पड़ना बडी आसान बात थी। लेकिन उस खतरे का दूर करन के लिए अब कोई समय न था और अगर बघर स उस रात बचत हो सकी तो कल अवश्य वह पड़ काटकर वहा स हटा दिया जायगा।

अपन आदमिया के लिए मेरे पास कोई तम्बू न था इसलिए मनें यह विचार

दिया था कि अपने आदमियों को इबटसन के आदमियों के साथ डाकबंगले के सायरपेश में सुला दिया करें। पर मेरे आदमियों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि तम्बू में उनके लिए मेरी अपेक्षा कोई अधिक खतरा नहीं है। मुझे रुद्रप्रयाग में मालूम हुआ कि मेरा रसोइया सोते में बड़े खर्राटे लेता था और वह मेरी बगल में एक गज की दूरी पर लेटा था तथा उसके आगे मेरे छः गढ़वाली जिनको मैं नैनीताल से लाया था सिमट सिकुड़ पड़े थे। हमारी रक्षापंक्ति में सबसे कमजोर स्थान पेड़ था और पेड़ का ही खयाल करते हुए मैं सो गया। चारु चन्द्रिका छिटक रही थी और अर्धरात्रि के समय मैं बघेरे के पेड़ पर चढ़ने की आवाज से एकदम जाग पड़ा। राइफल चारपाई पर मेरी रखी हुई थी फौरन ही उसे मैंने उठाया चारपाई से उतरा पैरों में स्लीपर डाले ताकि जमीन पर पड़े कांटे न लग जायें कि इतने में ही अधकटे पेड़ पर एक खुरसट और चटाक की आवाज और फौरन ही उसके बाद मेरा रसोइया घबराकर चिल्ला उठा बाघ! बाघ! क्षण भर में ही मैं तम्बू के बाहर हो गया और बस तनिक सी देर ही हुई मुझे उस पर निशाना लेने में जब वह पेड़ से करीब के बंजर खेत की मेड़ पर कूद गया। मैं दरवाजा हटाकर खेत की तरफ लपका। खेत लगभग चालीस गज चौड़ा तथा बंजर था। जैसे ही मैं वहां खड़ा कांटेदार पहाड़ी और चट्टानों को देख रहा था कि इतने में गीदड़ की चेतावनी की पुकार जंगल की भाषा में पगली (अलाम) की ध्वनि हुई। वह आवाज पहाड़ के ऊपर थी और उससे मैं समझ गया कि बाघ मेरी पहुंच के बाहर है। रसोइये ने बाद में बताया कि वह चित लेटा था और जैसे ही खरोंच की आवाज से आंखें खोलीं वैसे ही ठीक ऊपर बघेरे का चेहरा दिखाई पड़ा। बघेरा उस पर कूदने की तैयारी कर रहा था।

अगले दिन पेड़ काट डाला गया और बाड़ा और मजबूत बनाया गया। उस तम्बू में हम कई सप्ताह तक रहे पर फिर हमें कोई खटका न रहा।

१२

पिशाच पाश

निकटवर्ती गावों से समाचार मिला कि बघेरे ने मकानों में घुसने के असफल प्रयत्न किए थे। मार्गों पर मैंने जो पगचिह्न देखे उनसे मुझे मालूम हुआ कि आदमखोर अभी तक पास-पड़ोस में ही था और इबटसन के आगमन के कुछ दिनों बाद फिर खबर मिली कि रुद्रप्रयाग से दो मील की दूरी पर और उस गांव से आधी मील की दूरी पर जहां मैं अखरोट के पेड़ पर घास की कुर्सी पर बैठा था एक गांव में गाय मार दी गई है। उस गांव में घटनास्थल पर मालूम हुआ कि बघेरे ने एक कमरेवाले मकान का द्वार तोड़ दिया था और भीतर घुसकर कई में से एक गाय को मार दिया और दरवाजे में उसे घसीट लाया। दरवाजे में से बाहर न घसिटने पर उसने उसे देहरी पर ही छोड़ दिया तथा यथेष्ट अंश खा गया।

यह घर गांव के ठीक बीच था और निरीक्षण के बाद मालूम हुआ कि क़रीब के मकान की दीवार में छेद करने से गाय का शव दिखाई पड़ता था। मकान का मालिक मृत गाय का भी मालिक था और हमारी योजना से वह पूर्णतया सहमत हो गया। सायंकाल के होते ही हम लोग कमरे में बन्द हो गए। हम जो पाथेय साथ लाए थे उसे खाकर हमने नम्बरवार छेद से रातभर देखभाल रखी पर हमें न तो बघेरा दिखाई पड़ा और न उसकी कोई आवाज सुनाई दी।

प्रातःकाल जब हमलोग कमरे से निकले तो गांववाले हमें गांव में ले गए। गांव काफी बड़ा था। और लोगों ने हमें खिड़कियों और दरवाजों पर आदमखोर द्वारा अंकित नखचिह्न दिखाए। कई बरसों में बघेरे ने लगभग प्रत्येक घर के दरवाजे खोलकर या तोड़कर अपना शिकार प्राप्त करने का प्रयास किया था। एक दरवाजे में औरों की अपेक्षा विशेषरूप से गहरे नखचिह्न थे। यह वही

बघरा एक तरफ के बाद दूसरे को तोड़ने का प्रयत्न करता रहा पर विभाजन में कोई कमजोर खस्ता न मिला तब उसने रसोईघर छोड़कर गाय मार दी। गाय एक ढाल में घास के ढेर पर बंधी थी। मारने के बाद पघा तोड़ दिया कुछ दूर तक मृत गाय को घसीट ले गया तथा कुछ भाग खाकर बाकी वहीं छोड़ दिया।

पहाड़ के किनारे पर और जहां गाय मरी पड़ी थी उससे बीस गज की दूरी पर एक साधारण आकार का पेड़ था। पेड़ की ऊपरी शाखा में एक घास की कुर्री बनी थी। इस स्वाभाविक मचान पर इबटसन और मैने बैठने का निश्चय किया। इस मचान से समकोण बनाता हुआ नीचे घाटी में कई सौ गज का फासला था। कई दिन पहले सरकार ने आदमखोर के मारने में सहायतारूप एक पिशाच-पाश (जिन ट्रैप) भेजा था। यह पाश पांच फुट लम्बा था और वजन में अस्सी पौंड था। मैने अपने जीवन में इस प्रकार की और कोई डरावनी चीज नहीं देखी थी। इसका फैलाव चौबीस इंच का था और उसमें तीन तीन इंच ऊंचे तीक्ष्ण दांत थे जिनमें दो स्प्रिंग लगे थे जिन्हें दो आदमी लगा सकते थे।

गाय के शव को छोड़ने के बाद बघरा एक चौबीस गज चौड़ी पगडंडी पर गया था और तीन फुटी मेड़ पर से एक दूसरे खेत में गया था। ऊपरवाले और नीचे वाले खेत के तीन फुट भाग पर हमने पाश लगाया। रास्ते के दोनों ओर छोटे छोटे बांसों की डालियां गाड़ दी ताकि बघरा उसी रास्ते से निकले। पाश के एक सिरे पर एक आधी इंच मोटी जंजीर बांध दी। जंजीर के बीच में तीन इंच व्यास का एक छल्ला था। इस छल्ले में से एक खूंटा गाड़ कर हमने पाश को जकड़ दिया। जब यह सब प्रबन्ध हो चुका तब श्रीमती इबटसन हमारे आदमियों के साथ बंगले पर लौट गईं और इबटसन तथा मैं कुर्री पर चढ़ गए और बैठकर कुर्री में एक लकड़ी बांधकर सूखी घास लपेट दी ताकि वह आड़ का काम करे। अब आराम से बैठकर हम बघरे की प्रतीक्षा करने लगे। हमें पूरा विश्वास था कि बघरा हम से निकलकर नहीं जा सकता।

सायंकाल के होते ही आकाश मेघाच्छादित हो गया। चन्द्रमा नौ बजे से

पत्थर निकलनेवाला न था इसलिए ठीक निशाना लेने के लिए हमें बिजली की रोशनी पर ही अवलम्बित रहना था। रोशनी भारी और चमकदार था। इबटसन ने इस बात पर जोर दिया कि मैं ही निशाना लूँ, इसलिए मैंने उसे अपनी राइफल की नाल से कसकर बाँध लिया। एक घंटे के बाद हमें भयभरी गुर्राहट सुनाई दी और हमें मालूम हो गया कि बघेरा फँस गया है। बिजली की रोशनी का बटन दबाने पर हमें बघेरा दिखाई पड़ा। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा था और उसकी अगली टाँगों में पाश लटक रहा था। जल्दी से जो निशाना लिया तो ४५० की गोली जंजीर की कड़ी पर पड़ी। जंजीर टूट गई।

छूटने से मुक्त होकर बघेरा खेत में कूदा फिरा और पाश उसके आगे घसिटता उछलता चला जाता था। उसके पीछे मेरी राइफल की बाईं नाल की गोली पड़ी। इसके बाद इबटसन की भी दो प्राणघातक गोलियाँ पड़ीं पर निशाने सब खाली गए। अपनी राइफल के भरने के प्रयास में मैंने बिजली की रोशनी के किसी भाग को इधर उधर कर दिया और उसने काम करना ही बन्द कर दिया।

बघेरे की गर्जन और हमारी गोलियों की गर्जन सुनकर रुद्रप्रयाग बाजार तथा निकटवर्ती गाँवों के लोग लालटेनें और देवदार की बनी मशालें लेकर अपने गाँव से बाहर निकले तथा उस एकान्तस्थित मकान की ओर ऐसे आने लगे जैसे चारों दिशाओं से नदियाँ सागर की ओर बढ़ी आती हैं। बघेरे से दूर रहने के लिए उनसे चिल्लाकर कहना निरर्थक था क्योंकि लोग इतना शोर मचा रहे थे कि वे हमारी कोई बात सुन नहीं सकते थे। इसलिए बाध्य होकर एक खतरे का काम करना पड़ा वह यह कि अँधेरे में ही मैं नीचे उतरा। इबटसन ने पेट्रोल लैम्प को पंप करके प्रकाश किया और रस्सी से लटकाकर मुझे दिया। इबटसन भी नीचे उतर आए और हम दोनों बाँध की ओर चले। खेत के बीचोंबीच ढोंकों का एक समूह था। इस कोहान के आकार के चट्टानों के समूह की ओर हम दौड़े। इबटसन ने अपने सिर के ऊपर लैम्प कर लिया था और मैं इबटसन के बराबर कंधे से राइफल लगाए चला जाता था। वहाँ एक ढलाव था। उस

निमान (depression) में हमारा आर मह किए मुर्राता हुआ बघरा बठा था। मने ताक कर फिर पर निशाना लिया और बघरा वहा पर ठंडा होकर लेट गया। गाली लगन के कुछ ही दर बाद हमारे चारो ओर एक उत्तेजित भीड आ पहुंची। लोग आनन्द विभोर थे और अपने चिर आतंककारी शत्रु के मरने की खुशी में व नाच रहे थे।

मेरे सामने जो जानवर मरा पडा था वह साधारण आकार मे बडा था जिसने गत रात एक आदमी का पकडने के लिए कमरे का विभाजन तोडने का प्रयत्न किया था और चूकि वह इस इलाके में मारा गया था जिसमें आदमखार के आक्रमण थे यह मान लिया गया वह आदमखोर बघरा था। पर मैं यह नहीं मानना चाहता था कि यह वही बघरा है जिसे मैंने स्त्री की लाश पर बैठकर देखा था। यह बात ठीक है कि रात अधेरी थी और मैंने बघेरे के बाह्य आकार को ही देखा था। फिर भी मुझे विश्वास था कि वह जानवर जिसे लोग बडी तत्परता से एक लट्ठ से बाध रहे थे आदमखोर बघरा नहीं था।

मृत बघरे के साथ कई सौ आदमियो का जलूस डाक बगले की ओर चला। जलूस के सबसे आगे इबटसन और श्रीमती इबटसन थे और रुद्रप्रयाग बाजार में आगे होकर हम लोग वह।

उस अपार जलूस में मैं ही एक अकेला था जिसने यह विश्वास नहीं किया कि रुद्रप्रयाग का आदमखार बघरा मर गया है। पर जलूस के पीछे जैसे ही मैं पहाड से नीचे की ओर उतरा तो मेरी बाल्पन की स्मृति जाग्रत हो गई। मुझे वह घटना याद आई जो हमारे शीतकालीन निवास के निकट घटी थी जिसे मैंने बाद में भी एक किताब में उल्लिखित पाया। वह घटना इंडियन सिविल सर्विस के स्मीथ और वन विभाग के वडवड से सबधित थी। रेल यातायात के प्रारंभ होने से पहले की बात है कि ये दोनो आदमी एक अंधेरी और तूफानी रात को डाक ले जानेवाली घोडा गाडी में मुरादाबाद से कालाढूगी जा रहे थे। जब वे एक मोड पार कर रहे थे तब उनकी मुठभेड एक मस्त हाथी से हो

गए। कोचवान और दो घोड़ों को भागने में हाथी ने बग्घी को पलट दिया। ग्रेवाइड के पास राइफल थी और उन्होंने जब तक राइफल को केस से निकाला, सँभाला और मेरा नव स्मिटन बग्घी पर चढ़ गए और बग्घी के एक तरफ से बिना-फूल रूप का निकाला। स्मिटन ने नल के रूप का जिसमें धुँधला प्रकाश निकल रहा था अपने ऊपर किया और आगे बढ़े। प्रकाश हाथी के माथे पर पड़ता था और ग्रेवाइड ने एक कारगर निशाना लिया। मस्त हाथी और बघेरे में बहुत अन्तर है। इसके अतिरिक्त ऐसे आदमी बहुत कम होंगे जो झाड़ी में पागल बघेरे के पास अपने सिर के ऊपर लैम्प उठाए और अपनी रक्षा के लिए केवल अपने साथी की गोली पर ही भरोसा करते हुए जाएँ। उस बघेरे को जब हमने मार लिया तब देखा कि बघेरे ने अपना पंजा पिशाच-पाश से तोड़ कर मुक्त कर लिया था और वह पाश एक पतली शाख के सहारे ही लटक रहा था।

गत वर्षों में यह पहली ही रात थी जब रुद्रप्रयाग बाज़ार के हर एक मकान का दरवाज़ा खुला रहा और बच्चे और औरतें दरवाज़ों पर खड़े रहे। जलूस की गति धीमी थी क्योंकि कुछ ही दूर चलने के बाद बघेरे को ज़मीन पर रखना पड़ता था ताकि बच्चे उसे देख लें। लम्बी गली के अन्तिम छोर पर जलूस तितर बितर हो गया और बघेरे को हमारे आदमी बड़े ठाठ से डाक बंगले पर ले आए। अपने तम्बू पर हाथ मुँह धोने के बाद मैं डाक बंगले पर लौट आया और इबटसन श्रीमती इबटसन तथा मुझमें प्यालों के बहुत देर बाद तक इस बात पर तर्क वितर्क होता रहा कि हमने जो बघेरा मारा है वह रुद्रप्रयाग का बदनाम आदमखोर बघेरा है या नहीं। अन्त में कोई किसी को विश्वास न दिला सका कि वह आदमखोर बघेरा है या नहीं। मेरा मत था कि यह आदमखोर बघेरा नहीं है और इबटसन तथा श्रीमती इबटसन का मत था कि वह आदमखोर है। अन्त में तय किया कि अगले दिन तो बघेरे की खाल निकालने और सुखाने में बिताया जाएगा और दूसरे दिन पौड़ी चला जाएगा। इबटसन को सरकारी काम से जाना था और मैं इतने दिनों यहाँ रहते रहते थक गया था।

अगले दिन प्रातःकाल से शाम तक पास पड़ोस के गावों से बघेरे को देखने के लिए लोग आते रहे। आगन्तुकों ने स्वीकार किया कि वे आदमखोर को पहचानते हैं और यह मृत बघेरा ही आदमखोर है। इस बात से इबटसन और श्रीमती इबटसन का विश्वास दृढ़ होने लगा कि वे ठीक हैं और मैं गलत हूं। मेरे आग्रह करने पर उन्होंने मेरी दो बातें मान लीं। एक तो यह कि आदमखोर बघेरे के मामले में लोगों को चेतावनी दी कि वे सावधान रहें और ढिलाई न होने दें और दूसरी यह कि वे सरकार को तार न दें कि आदमखोर मार डाला गया।

उस दिन हम जल्दी ही सो गए क्योंकि अगले दिन सूर्योदय पर ही हम वहां से चल देना था। अभी अंधेरा ही था कि मैं उठ बैठा और प्रातःकालीन चाय पी रहा था कि एकाएक मैंने लोगों की आवाजें सुनीं। यह कुछ असाधारण सी बात थी इसलिए मैंने आवाज लगा कर पूछा कि क्या मामला है। मुझे देखकर चार आदमी मेरे तम्बू के रास्ते पर ऊपर आ गए और बताया कि पटवारी ने उन्हें मेरे पास भेजा है यह बताने के लिए कि नदी के दूसरी ओर छतवापीपल के पुल के पास बघेरे ने एक स्त्री को मार डाला है।

१३

शिकारियों का शिकार

इबटसन अपने कमरे का दरवाजा खोले रहे थे ताकि प्रातःकालीन चाय उनके आदमी ले आवें। मैं ठीक उसी समय वहां पहुंचा। पौड़ी जाने का विचार इबटसन ने फिलहाल छोड़ दिया और चारपाई पर बैठकर एक बड़ा नक्शा फैला लिया। हम चाय पीते जाते और अपनी योजनाओं पर बात करते जाते थे।

इबटसन को अपने हेडक्वार्टर पौड़ी में एक बहुत जरूरी काम था और अधिक से अधिक वे दो दिन और ठहर सकते थे। पिछले दिन मैंने तार दे दिया था कि मैं पौड़ी और कोटद्वार होकर नैनीताल पहुंच रहा हूं। उस तार को मुझे खारिज करना पड़ा और रेल के बजाय जिस रास्ते से पैदल आया था उसी रास्ते का विचार किया। विस्तृत बातों के बाद मैं तम्बू में आया और लोगों को बताया कि उस दिन यात्रा का विचार त्याग दिया है तथा चार आदमी सामान लेकर उन आदमियों के साथ जायें जो स्त्री के मरने की खबर लाए हैं।

सामान इबटसन का रुद्रप्रयाग में ही रहता था। इसलिए कलेऊ के बाद इबटसन और मैं घोड़ों पर चढ़ कर उस गांव की ओर चल दिए। इबटसन एक अरबी घोड़े पर थे और मेरे पास एक अंग्रेजी घोड़ी थी।

हमने अपनी राइफलें लीं और साथ में एक स्टोव, एक पेट्रोल लैम्प और कुछ खाने की सामग्री थी। हमारे साथ इबटसन का साईस भी घोड़े पर था जिस पर हमारे घोड़ों का दाना चारा लदा था।

घोड़ों को हमने छतवापीपल पुल पर ही छोड़ दिया। जिस रात को हमने बकरा मारा था उस समय भी पुल बन्द नहीं किया गया था फलस्वरूप आदमखोर नदी के दूसरी ओर चला गया और पहले ही गांव में उसे अपना शिकार मिल गया।

पुल पर एक पथ प्रदर्शक मिला जो हम एक तेज चढ़ाई की धारा (ridge) पर ले गया जिसकी बगल में काफी घास थी। तब हमें तेज उतार मिला और हम एक गहरी और पेड़ों से भरी नदिया (raven) में घुसे जिसमें होकर छोटी सी धारा बह रही थी। वहां हम पटवारी और लगभग बीस आदमी मिले जो स्त्री के गांव की रक्षा कर रहे थे। गांव अत्यंत सुंदर और सुन्दर लड़की का था। उम्र कोई १८–१९ वर्ष की होगी। कपड़े फटे पड़े थे हाथ बगल में थे। शरीर से हर कपड़ा फाड़ कर फेंक दिया था और पैर से लगा कर गर्दन तक चाट कर बघेरे ने खून पिया था। गर्दन पर चार बड़े कीलों के निशान थे। अगले हिस्से का कुछ पौंड मांस खा लिया था कुछ निचले हिस्से का।

पहाड़ पर जब हम आए तब हमने ढोल बजने की आवाज सुनी थी। जो गांव की रक्षा कर रहे थे वे ही ढोल बजा रहे थे ताकि हम गांव स्थान को समझ सकें और बघेरे के आगमन का रोक सकें। समय मध्याह्न था और यह संभावना न थी कि बघेरा निकट होगा इसलिए हम लोग करीब गांव में चले गए। अपने साथ पटवारी और रक्षकदल भी ले गए। चाय के बाद हम लोग उस मकान को देखने गए जहां वह लड़की मारी गई थी। पत्थर का बना मकान था जिसमें एक ही कमरा था और वह बकीलदार खेतों के बीच में स्थित था। खेतों का रकबा तीन एकड़ होगा। मकान में वह लड़की उसका पति और उसका छः महीने का बालक बस तीन ही व्यक्ति रहते थे।

इस दुर्घटना से दो दिन पूर्व लड़की का पति एक जमीन के मुकदमे में गवाही देने पौड़ी गया था और अपने पिता को देखभाल की खातिर छोड़ गया था। जिस रात यह दुर्घटना घटी उस रात ऐसा हुआ कि लड़की और उसके श्वसुर ने ब्यालू की और जब सोने का समय आया तब लड़की ने जो बच्चे को दूध पिला रही थी बच्चे को श्वसुर के हाथों में दे दिया और कुंडी खोल कर बाहर आई पेशाब के लिए। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि भारतीय देहात के मकानों में पेशाब-पाखाने का कोई सुविधाजनक प्रबंध नहीं है।

जब बच्चा मां की गोद में दादा की गोद में पहुंचा तो उसने रोना शुरू किया। ऐसी हालत में यदि कोई आवाज बाहर से हुई भी होगी तो श्वसुर को सुनाई नहीं पड़ सकती थी पर मेरा विश्वास है कि बाहर कोई आवाज हुई ही न होगी। रात अंधेरी थी। कुछ देर प्रतीक्षा के बाद श्वसुर ने अपनी पुत्रवधू को आवाज दी। कोई उत्तर न मिलने पर उसने उसे फिर पुकारा तब वह उठा और जल्दी से दरवाजा बन्द करके चटखनी लगा ली।

शाम का पानी बरस गया था और स्थिति की पूरी तस्वीर इस बात से समझाना आसान ही है। मेह के बन्द होने के थोड़ी देर बाद ही बघेरा गांव की ओर से आकर खतवाली चट्टान के पीछे छिपक गया था। यह स्थान दरवाजे के बाईं ओर से लगभग तीस गज की दूरी पर था। यहां पर वह कुछ समय के लिए रुका रहा होगा। सम्भवतः आदमी और लड़की की बात चीत सुनता रहा होगा। जब लड़की ने दाल साली तब वह उसके दाईं ओर को बैठी होगी और स्वाभाविक रूप से उसकी पीठ बघेरे की ओर रही होगी। बघेरा चट्टान की ओर घूम कर सरक आया होगा और मकान के कोने तक—लगभग बीस गज—पेट के बल सरक कर आया होगा और मकान की दीवार के निकट तक सरक कर लड़की को उसने पीछे से पकड़ लिया होगा और चट्टान तक उसे घसीट ले गया होगा। वहां से जब लड़की मर गई होगी या सम्भवतः जब आदमी ने आतंकित होकर पुकारा होगा तब बघेरे ने उसे ऊपर उठा लिया होगा और ऊंचे उठाते हुए जिससे उसके हाथ पर भी जुते खेत में न छुए वह उसे एक खेत से दूसरे खेत को ले गया जहां से १८ फुट की निचाई की एक पगडंडी जाती थी। इस निचाई में बघेरा लड़की को मुंह में लिए कूदा होगा। लड़की का वजन लगभग पौन दो मन होगा और बघेरे की शक्ति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जब वह उस रास्ते पर लड़की को मुंह में दबाए हुए कूदा तब उसने लड़की के शरीर के किसी भी भाग को जमीन से छूने नहीं दिया।

पगडंडी को पार करने के बाद बघेरा सीधा आध मील तक पहाड़ की ओर

गया और वहां जाकर उसने लड़की के सब कपड़े फाड़ फेंके। लड़की का थोड़ा भाग खाकर उसने उसके बचे हुए भाग को जमरूद जैसी हरी घास से आच्छादित घाटी में पड़ा छोड़ दिया। शव के ऊपर छतरीनमा एक पेड़ था जिसके ऊपर घनी लताएँ छाई हुई थीं।

लगभग चार बजे सायंकाल हम लोग लाश पर बैठने गए और साथ में पट्रोल लैंप और बिजली की रोशनी भी लेते गए।

यह तो स्पष्ट ही था कि बघेरे ने लड़की की तलाश में आनेवाले लोगों का शोर सुना था और वह शोर भी सुना था जो शव की रक्षा के समय बाजों का हो रहा था। इसलिए अगर बघेरा शव पर आया तो बड़ी सावधानी से आयेगा। हमने इसी कारण शव के निकट न बैठने का निश्चय किया और शव से लगभग साठ गज की दूरी पर घाटी के दूसरी ओर एक पेड़ पर बैठने की व्यवस्था की।

यह पेड़ कभ बड़वार का बाँझ का पेड़ था और पहाड़ी से बाहर की ओर करीब करीब समकोण पर खड़ा हुआ था। पट्रोल लैंप को एक खोखले में छिपा कर और चीड़ की पतली सूखी पत्तियों से दबा कर इबटसन ने पेड़ की शाख के एक बाहर निकलनेवाले ठूँठ पर आसन बनाया। वहाँ से लड़की का शव अच्छी तरह दिखाई पड़ता था। मैं पेड़ की पीठ पर बैठा मेरी पीठ इबटसन की ओर थी और मुँह पहाड़ी की ओर। इबटसन को निशाना लेना था और मेरा काम प्रहरी का था। बिजली की रोशनी खराब हो गई थी संभवतः उसकी बैटरी खत्म हो गई–और हमारी योजना यह थी कि हम तब तक बैठे रहें जब तक इबटसन निशाना लेने के लिए देख सकें। तब हम पट्रोल लैंप की सहायता से गाँव चले जायें जहाँ हमें आशा थी हमारे आदमी आ गए होंगे।

आसपास की जमीन देखने का हमारे पास समय नहीं था पर लोगों ने बताया था कि जहाँ शव पड़ा था उसके पूर्व की ओर सघन वन है और बघेरा भगाए जाने पर उसी ओर चला गया था। अगर बघेरा उसी दिशा से आया तो इबटसन उसको घाटी में आने से पूर्व ही देख लेंगे और उस पर निशाना लगा

आसान हो जायगा क्योंकि उनकी राइफल पर टेलिस्कोपिक साइट लगी हुई थी जिससे ठीक निशान तो पड़ता ही था पर उससे सध्यावेला में कुछ आध घंटे अधेरे तक दिखाई भी पड़ता था। जब सफलता और असफलता में एक मिनट के प्रकाश से ही फर्क पड़ जाता हो तब आध घंटे के प्रकाश की सुविधा मिलना बहुत महत्वपूर्ण है।

उच्च पर्वतशिखरों के पीछे जगमगाता सा सूर्य मुह छिपाने लगा मानो वह उस सुन्दरी के दाव को देख कर लजाता और सकुचाता अपना मुह छिपाने जा रहा हो। कुछ ही मिनट के लिए वहा छाया रही होगी जब एक काकड़ भागता और चिल्लाता हुआ उसी ओर से आया जिस ओर हमें सधतवन बनाया गया था। पर्वत चोटी पर आकर काकड़ रुका कई बार बोला और दूसरी ओर को चला गया अन्तत उसकी आवाज सुदूर क्षेत्र में समा गई।

निस्सदेह काकड़ बघेरे से आतंकित हुआ था और यद्यपि यह सभव था कि उस क्षेत्र में और भी बघेरे रहे होंगे, फिर भी मेरी आशा वल्लरी लहलहाने लगी और मैंने जब मुड कर इबटसन को देखा तो मालूम हुआ कि उनके रोम रोम पुलकों से आशा प्रस्फुटित हो रही है और उनके दोनों हाथ राइफल पर थे।

प्रकाश बहुत क्षीण हो रहा था पर बिना टेलिस्कोपिक साइट के भी निशान के लिए काफी था कि इतने ही में तीस गज की दूरी पर एक ठीठा (pine cone) झाड़ियों से अलग होकर लुढकता आया और मेरे पैरों के पास पेड़ से टकराया। बघेरा आ गया था और सभवत खतरे की आशका से वह एक ऐसे स्थान से सिहावलोकन कर रहा था जहा से सब के चारों ओर का पहाड़ उसे अच्छी तरह दिखाई पड़ सके। यह हमारा दुर्भाग्य ही था कि ऐसा करने में हमारा पेड़ ही सब की सीधी पंक्ति में पड़ता था। मेरे शरीर का भाग तो किसी तरह स्थिर लगा पड़ता था इसलिए मैं उसकी नजर से बच सकता था पर पेड़ के ठूठ पर बैठे इबटसन को वह निश्चय रूप से ही देख सकता था।

जब मेरे लिए निशान लेने का जरा भी प्रकाश न रहा और जब अधेरे में इबटसन

की टोली होरिस माइन भी किसी काम की न रही तब बघेरे का पड की ओर जाने सुना। अब तो कुछ काम करने का समय था इसलिए इवटसन से मैंने अपनी जगह आने के लिए कहा ताकि मैं लप उठा लूँ। जमन लैम्प था जिसे पट्टा में से कहते हैं। इसमें रोशनी तो काफी होती थी पर वह इतना भारी और बड़िया इतना ज्यादा था कि जंगल में वह लालटेन का काम नहीं करता था।

मैं इवटसन से कुछ ऊंचा हूँ और मैंने सुझाव पेश किया कि मैं लप ले चलूँगा पर इवटसन ने कहा कि वे लैम्प को बहुत अच्छी तरह ले जायेंगे और साथ ही यह भी कहा कि वे अपने निशान की अपेक्षा मेरे निशान पर अधिक अवलम्बित हैं। बस हम चल पड़े। आगे आगे इवटसन थे और दोनों सँभले हुए हाथों में राइफल का थामे पीछे मैं चला। पड़ से पचास गज की दूरी पर एक चट्टान पर चढ़ते हुए इवटसन का पैर फिसल गया और लैम्प का नीचे का हिस्सा चट्टान से जोर से टकराया और पट्टा में का मेंटल धूल में नीचे गिर गया। बत्ती के सिरे से अग्नि नील लौ की एक किरण फैल में छा गई और उससे जो तेज रोशनी हुई उसमें हम अपने पैरों को सँभाले रखने में सफल हुए पर सवाल यह था कि इतनी रोशनी कब तक मिलेगी। इवटसन का मत था कि वे उसके फटने से पूर्व तीन मिनट तक और ले जा सकते थे। पर तीन मिनट जिसमें आधे मील की चढ़ाई जिसमें चार चार फिट ऊँची पत्थरों की चट्टानों और कटीली झाड़ियों से बचना पड़ता था नहीं के बराबर समय था। इसके अतिरिक्त चट्टानों और झाड़ियों से ही बचना न था वरन आदमखोर से पीछा किए जाने का भी प्रश्न था जैसा पीछे मालूम हुआ कि आदमखोर ने हमारा पीछा किया था। वह स्थिति आतंकजनक तो थी ही पर साथ ही उसने स्थिति का यह तक बदल दिया था कि शिकारी के स्थान से हम स्वयं शिकार के स्थान में आ गए थे।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो स्मृतिपटल पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं। समय का हेर फेर स्मरणशक्ति की क्षीणता तथा विस्मृति का गर्भ ऐसी घटना अथवा घटनाओं को मिटा नहीं सकते। मेरे

लिए उस अंधेरी रात में उस पहाड़ की चढ़ाई ऐसी ही एक घटना है। अन्ततः जब हम पहाड़ के ऊपर पहुंचे तब भी हमारी कठिनाइयों का अन्त नहीं हुआ क्योंकि मार्ग में भूमि के फटने के गड्ढे बने थे और हमें यह भी नहीं मालूम था कि हमारे आदमी कहां हैं। कभी कीचड़ में रपटते तो कभी अदृश्य चट्टानों से ठोकर खाते पर अन्त में हम कुछ पत्थरों की सीढ़ियों पर आ गए जिन पर पैर रखते हुए हम रास्ते से तो हट गए पर सीधे आ गए। इन सीढ़ियों पर चढ़ कर हम एक हाते में आए जिसके दूसरी ओर दरवाजा था। जब हम सीढ़ियों पर आए थे तब हमने हुक्के की गुड़गुड़ाहट सुनी थी इसलिए मैंने दरवाजे पर ठोकर मारी और भीतर के लोगों को दरवाजा खोलने को कहा। पर भीतर से कोई उत्तर नहीं मिला तब मैंने दियासलाई का एक बक्स निकाला और उसे हिला कर चिल्लाकर कहा कि अगर एक मिनट में दरवाजा नहीं खुला तो मैं छप्पर में आग लगा दूंगा। इस पर भीतर से एक उत्तेजित आवाज आई कि आग न लगाई जाय दरवाजा खुल रहा है। पहले भीतर का दरवाजा खुला फिर बाहर का। इबटसन और मैं दो ही डगों में भीतर पहुंच गए। भीतर का दरवाजा हमने बन्द कर दिया और पीठ लगा कर बैठ गए। कमरे में सब उम्र के १२ या १४ प्राणी थे—पुरुष, स्त्री और बच्चे। हमारे आकस्मिक तथा अनिमन्त्रित प्रवेश के बाद लोगों के होश हवास ठीक हुए तब उन्होंने दरवाजे को जल्दी न खोलने के लिए क्षमा चाही और कहा कि वे सब आदमखोर बघेरे के कारण इतने आतंकित हैं कि उनमें जरा भी साहस नहीं रहा है। यह पता नहीं कि आदमखोर कौन सी आकृति को धारण करे इसलिए रात में प्रत्येक ध्वनि को वे आशंका की दृष्टि से सुनते थे। जहां तक उनका भय था हमारी उनके साथ पूरी सहानुभूति थी क्योंकि जिस समय इबटसन फिसल कर गिर पड़े और लालटेन टूट गया और कुछ मिनटों बाद मुझे गरम लैम्प को फटने से बुझा दिया उस समय मैंने समझ लिया था कि हम में से एक या दोनों साथ लौटने के लिए जीवित न रहेंगे। हमें बताया गया कि हमारे आदमी सूर्यास्त के समय हो

आ गए थे और वे पहाड़ के किनारे ही एक मकान में ठहरे हैं। दो मजबूत आदमियों ने हमें रास्ता बताने की इच्छा प्रकट की पर हम जानते थे कि उनको अकेले वापिस करने के मानी उनको मौत को सौंपना होगा इसलिए हमने उनका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। यह स्पष्ट था कि हमारे साथ जाने की जो स्वीकृति उन्होंने दी थी वह खतरे के पूरे गुरुत्व को जानते हुए दी थी। धन्यवाद देते हुए हमने उनसे यह ही चाहा कि वे रोशनी का प्रबंध कर दें। कमरे की खोज खाज के बाद एक सड़ी लालटेन पेश की गई जिसका शीशा चटखा हुआ था और बड़ी जोर से उसे हिलाया गया तब मालूम पड़ा कि उसमें तेल की कुछ बूंदें हैं। लालटेन जलाई गई। मकानवालों के समवेत आशीर्वाद के साथ हम निकले और जैसे हमारे पैर बाहर हुए वैसे ही खटाक से दरवाजे बंद कर लिए गए।

रास्ते में भैंसों के लादने के और गड्ढे मिले और छिपी चट्टान पर धुंधली रोशनी की सहायता से जिन सीढ़ियों पर पहुंचने का आदेश मिला था पहुंच गए। ऊपर पहुंच कर एक हाल में आए जिसके दाएं बाएं दरवाजे थे। प्रत्येक कमरे का दरवाजा खूब कड़ा बन्द था और प्रकाश की किरण भी नहीं थी।

जब हमने आवाज लगाई तब दरवाजा खुला और कुछ सीढ़ियां चढ़ने के बाद हम ऊपर के तल्ले के बरामदे में पहुंचे जो हम और हमारे आदमियों के लिए सुरक्षित रखे गए थे। जब हमारे आदमी हमसे राइफल और लैम्प ले रहे थे तब न मालूम कहां से एक कुत्ता आया वह देहात का एक साधारण कुत्ता था। हमारी टांगें सूंघ कर वह उन सीढ़ियों की ओर बढ़ा जिधर से वह आया था पर तुरन्त ही एक आतंकित और डरी आवाज में भौंकते हुए वह हमारी ओर लौटा। उसके मन बाल खड़े हुए थे।

जो लालटेन हमें दी गई थी वह हाल में आते ही बुझ गई पर हमारे आदमियों ने उसकी एक सगी बहिन सी लालटेन हमारे सामने कर दी। यद्यपि इबटसन ने उसे काफी इधर उधर किया और मैंने राइफल संभाल ली पर आठ फुट नीचे भी उससे नहीं दिखाई पड़ा।

कुत्ते के दखल से बघरे की गतिविधि का पता चलता था। जब बघरा हात के बाहर हो गया तब कुत्ते ने भौंकना बंद किया और वह बैठ गया पर उसकी नजर उधर ही रही और रुक रुक कर गुर्रा लेता था।

जो कमरा हमारे लिए खाली किया गया था उसमें खिड़की नहीं थी। कमरे में सुरक्षित रहने का एक ही तरीका था वह था दरवाजा बन्द करना पर ऐसा करने से वायु का आना बिल्कुल रुक जाता। इस कारण हमने बरामदे में सोने की हा तय की। कुत्ता कमरे के स्वर्गीय मालिक का था और बरामदे में लेटने का आदी था, क्योंकि वह हमारे परों पर आराम से लेट गया। कुत्ते से हम सुरक्षा की भावना हो गई और नम्बरवार रात भर जगते रहे।

गई थी मुखिया के मकान से तीस गज की दूरी पर था। उन लोगों के अनुरोध पर मैंने नैनीताल-यात्रा स्थगित कर दी तथा मैं पिशाच पर नज़र रखकर उनके गाँव आया।

मुखिया का मकान काश्तवाली ज़मीन से घिरे हुए एक ऊँचे टीले पर था। मकान पर पहुँचने के लिए एक पगडंडी थी जो खेतवाली ज़मीन में होकर गई थी। वहाँ पर मुझे आत्मसत्कार के नए चिह्न मिले।

मुखिया ने मुझे घाटी के दूसरी ओर आते देख लिया था अतः ताज़े दूध की बनी गरमागरम चाय मुझे तैयार मिली। मैंने जब इस पौष्टिक और मीठे पेय को पिया, घर के बीच से सटे मूढ़े पर बैठ कर, तब मुखिया ने मुझे दरवाज़े की हालत दिखाई जिसे दो रात पहले बघेरे ने तोड़ने का प्रयत्न किया था। मुखिया ने मुझे यह भी बताया कि बघेरा अपने प्रयास में अवश्य सफल हो गया होता अगर उसके मकान में नए तख्ते न होते, क्योंकि उसने तख्तों को दरवाज़े में मज़बूती से जड़ा लिया था। मुखिया गठिया रोग से पंगु-सा ही था इसलिए उसने अपने लड़के को मरी गाय दिखाने को भेज दिया और मकान में हमारे लिए स्थान किया।

मैंने गाय की लाश को देखा। गाय जवान थी। वह जानवरों के रास्ते से कुछ ऊपर सपाट ज़मीन पर पड़ी थी। पिशाच-घात लगाने के लिए वह उचित स्थान था। गाय की पीठ अगली टाँगों की ओर थी, उसके क़रीब एक फुट ऊँचे मेंड़ के सहारे थे। उस समय बघेरा मेड़ पर बैठा था और उसने अपने दोनों पंजे गाय की दोनों टाँगों के बीच में रख दिए थे। गाय की टाँगों के बीच की ज़मीन को साफ़ कर और मिट्टी हटाकर मैंने घास को वहाँ लगा लिया जहाँ बघेरे ने पंजे रखे थे और उसे हरी पत्तियों से ढक दिया। थोड़ी मिट्टी छिड़क कर उस पर सूखी पत्तियाँ डाल दीं। हड्डियों के टुकड़े गाय की टाँगों के बीच में वैसे के वैसे ही रख दिए। चाहे हज़ारों ही आदमी लाश देखने जाते पर वे यह नहीं बता सकते थे कि लाश छेड़ी गई है या वहाँ एक घातक घात लगा है। पूरा तथा संतोषजनक प्रबंध करने के बाद मैं लौट आया और मुखिया के मकान

और रास्ते के बीच एक पेड़ पर बैठ गया। उस समय अगर पास में कम बघेर पर निशाना लेने की आवश्यकता होती तो ले सकता था।

सूर्यास्त के समय कल्जा तीतरों का एक जोड़ा अपने पाँच बच्चों को लेकर आया। बहुत देर से मैं उन्हें देख रहा था। वे एकदम आतंकित हुए और खड़बड़ाते हुए पहाड़ की ओट में भाग गए। कुछ ही मिनटों बाद एक काकड़ भागता आया मेरे पेड़ के नीचे खड़ा चिल्लाता रहा और भाग गया। फिर कुछ नहीं हुआ। अब पेड़ के नीचे अंधेरा हो गया और मैं अपनी राइफल की साइट नहीं देख सका तब पेड़ से नीचे उतर आया और रबर के जूते पहिनकर गाँव की ओर बढ़ा।

मुखिया के मकान से १०० गज की दूरी पर घाटी को रास्ता जाता था। घाटी की ऊपरी पहाड़ी की ओर एक बड़ी चट्टान थी। जब मैं इस खुले स्थान पर पहुँचा तब मुझे ऐसा लगा कि मेरा पीछा किया जा रहा है और यह निश्चय करके कि स्थिति का पता चलाऊँ रास्ता छोड़ कर दो कदम बढ़ कर नरम और गीली जमीन पर चट्टान के पीछे लेट गया। मेरी केवल एक ही आँख गाँव की रास्ते की ओर था।

दस मिनट तक मैं उस गीली जमीन पर पड़ा रहा। अब प्रकाश बिल्कुल गायब हो गया मैं मार्ग पर आ गया और बड़ी सावधानी से मुखिया के मकान तक आया।

रात में एक बार मुखिया ने मुझे मेरी गहरी नींद से जगाया और बताया कि उसने दरवाजे पर बघेर के खरोंचने की आवाज सुनी है और अगले दिन प्रातःकाल जब मैंने दरवाजा खोला तब मुखिया के मकान के सामने धूल में आदमखोर के चिह्न पाए। नखचिह्नों पर मैं घाटी की ओर गया तो देखा कि बघेर ने ठीक वही काम किया था जो मैंने किया था। उसने ठीक उसी जगह मार्ग छोड़ा था जहाँ मैंने छोड़ा था फिर रास्ते पर आकर मकान तक मेरा पीछा किया था और मकान के कई चक्कर भी मारे थे।

मवान छाम्न व याम बधग रामत पग वापिस गया और जैस ही म उसकी गाज पर लाश का आर वढा वम ही मरी आशाम्ना ~हल्मान लगी क्योंकि उस समय तक म यह नहा समझ सका था कि आम्मखार आठ वप आदमिया के सम्पक के कारण कितना मक्कार हो सकता है।

मने रास्ता छोड दिया और ऊच स्थान से गाय की लाश की आर वढा और थोडी दूर स देखा कि लाश गायव थी और वह स्थान जहा पाश दवा था ज्यो का त्यो ही था केवल दा पगचिह्न थ।

एक फुट ऊची मेड पर बैठकर जैसा बघेरे ने पहली रात को किया था अब भी अपने अगले दो पज गाय की टागो में रख लिए पर इस अवसर पर उसने उनको फैला कर एक दूसरे से दूर पिछाव-स्थान के एक लीवरा पर रख लिया। अगर लीवर खुल जाते तो पाश के दोनो जबडा म वह आ जाता पर वहा स पाज ममुर्राते रह कर उसने अपना भोजन पाया। उसके बाद वह चारा आर घमा और गाय के धड को पकड कर गलाव का झाडदार झाडी म स खाला और पहाडी के नीचे लटका लिया। लाश लगभग पचास गज नीचे वांस के एक पोध म रुक कर रुक गई। अपने राम के काम से सतुष्ट होकर बघेरा ढारा के मार्ग पर चला गया। एक मील तक म उसके खोजा पर गया पर बाद में उसके खोज न मिले। बघेरे की लाश पर फिर आने की कोई आशा न थी फिर भी अपनी आत्मशाति के लिये मने गाय के गत्र म पोटैशियम साइनाइड काफी मात्रा में डाला। ईमानदारी की बात तो यह है कि उस समय भी म जहर देकर मारने की बात से घृणा करता था और अब भी करता हूं।

प्रात काल म गाय के धड को देखने गया और जाकर देखा तो धड के उस सब भाग को बघेरा खा गया है जिसम मने जहर रखा था। मुझ इस बात का पूरा विश्वास था कि विष मिश्रित गाय के मास को उस आम्मखोर ने नहीं खाया है वरन किसी अन्य रास्ता चलते बघेरे ने। गाँव में लौट कर मने मुखिय. से कहा कि कोई बघेरा विष मिश्रित गाय के मास को खा गया है।

पर मैं उसकी शाल के लिए रुकूँगा नहीं। हाँ मैं भी रुपया उस आदमी को दूँगा जो उस शाल को लाकर पटवारी को देगा। एक महान बाद उस रुपये की माँग की गई। पटवारी की शाल कई दिन पहले दे दी गई थी।

सामान बाँधने में देरी नहीं लगी और मैं अपनी नैनीताल-यात्रा को रवाना हो गया। जैसे ही हम लोग एक संकीर्ण पगडंडी से छनवापापल पुल की ओर उतरे वैसे ही एक बड़ी धार्मिक भीड़ से रास्ते को पार करती दिखाई दी। मस्त होकर मैं उसे देखने लगा और माधोसिंह ने जो मेरे पीछे पीछे थे कहा "यह इसलिए मनाई जा रही है जो आपकी असफलता के लिए जिम्मेदार है।"

गढ़वाल छोड़ कर नैनीताल आने और ग्रामीणों को एक प्रकार से आत्मसंहार से निवृत्त कर आने की बात पाठकों को हृदयहीनता-पूर्ण प्रतीत हुई होगी। मुझे भी यह ऐसी प्रतीत हुई। समाचार पत्रों में बुरी आलोचना भी हुई क्योंकि उन दिनों भारतीय समाचार पत्रों में बघेर की चर्चा प्रतिदिन रहा करती थी। अपने बचाव में मैं इसी बात का आग्रह करूँगा कि कोई भी कार्य जिसमें शिथिलता और थकावट अधिक बढ़ अनवरत रूप से अनिश्चित काल तक नहीं किया जा सकता। जितने सप्ताह मैंने गढ़वाल में बिताए उनमें से अनेक सप्ताहों के चौदह घंटे इसी काम में बिताए। रात भर पेड़ों या मचानों पर बैठे रहना सुबह अनगिनत मीलों पैदल चलना सुदूर गाँवों में जहाँ कहीं भी आक्रमणों का पता लगता जाना अनेक नरभक्षकों की राहों में कष्टकारक स्थानों पर बैठे रहने से मेरी शारीरिक क्षमता सीमा पर पहुँच गई थी और मुझे ऐसी जगहों पर भी लगातार बैठना पड़ा जहाँ आगे सफल हो बघेरा पकड़ा जाता। पर थकावट से अब अधिक क्षमता नहीं रह गई थी। घण्टों मैं उन सड़कों पर घूमा करता जो केवल मेरे लिए ही रह गयी थीं और बघेरे को तो कोई रोक-टोक भी नहीं। अपने घर का धन्यवाद का जितना भी कष्ट मुझे आता था मैंने बातें नहीं की पर बघेरा अपनी सामान्य मनमानी के साथ गढ़वाल की गलियों में घूमता ही रहा। पर बचता भी नहीं रहा बल्कि रात में मेरा पीछा

मी वगमा था। न्म दाना में आँख मिचौली-सी होना रहती। प्रात काल म अपन गम्ता पर उमके खोज दखना। भगवान की कृपा से वह मझ पकड़ न सका। मरा अनुमान कि वघरा मरा लगानार पीछा कर रहा है ठीक था। किसी व्यक्ति को इस बात का भान होना कि रात्रि के समय उसका पीछा नियमितरूप से आदमखोर उसे पकडन के लिए कर रहा है हीनत्व भावना पैदा कर दना है और स्नायओ पर जोर डालना है। लगातार इस प्रकार पीछा करन म थकावट कुछ कम नहीं होना।

शारीरिक और मानसिक थकावट होन म रुद्रप्रयाग म मरा टिकना कोई हितकर न होना और शायद म अपनी जान स भी हाथ धो बैठता। म इस बात को जानता था कि जो काम मैंने ले लिया है उसे छोडन स अखबारवाले मरी कटु आलोचना करग। साथ ही म यह भी जानता था कि जो कुछ म कर रहा हू वह ठीक है। इसलिए गढ़वालियों को यह आश्वासन दिलाकर कि म शीघ्र ही लौटूंगा अपन सुदूर घर की ओर चल दिया।

१५

अवकाश और मनोरंजन

१९२५ के पतझड़ के अन्तिम दिनों में मैंने अपनी असफलता के कारण रुद्रप्रयाग को थककर और हतोत्साह होकर छोड़ दिया और १९२६ के बसन्त के प्रारंभ में नवीन स्फूर्ति और नव आशा से फिर अपना कार्य करने के लिए रुद्रप्रयाग लौट आया।

आदमखोर की इस दूसरी खोज में मेरी गढ़वाल-यात्रा कोटद्वार तक तो रेल से हुई और वहाँ से पौड़ी पैदल गया। और इस प्रकार मैंने यात्रा के आठ दिन बचा लिए। पौड़ी से रुद्रप्रयाग के लिए इबटसन मेरे साथ हो गए।

गढ़वाल से मैं तीन महीने गैरहाजिर रहा और इस बीच आदमखोर ने दस आदमियों को मार डाला। इस अवधि में बघेरे को मारने का अन्य किन्हीं लोगों ने कोई प्रयास नहीं किया।

इन दस आदमियों में से बघेरे का अन्तिम शिकार एक छोटा बच्चा था और रुद्रप्रयाग में हमारे आने से दो दिन पहले बघेरे ने उसे अलकनन्दा के बाएँ किनारे मारा था। इस मौत की खबर हमें तार द्वारा पौड़ी में मिल गई थी और हमने वहाँ यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने की कोशिश भी की। पर डाक बंगले पर पहुँचते ही हमें पटवारी से मालूम हुआ कि बघेरे ने पिछली रात लड़के का सम्पूर्ण शवांश खा लिया है और कोई भी चीज उसने ऐसी नहीं छोड़ी जिस पर हम घात कर सकें।

रुद्रप्रयाग से चार मील की दूरी पर बाघोरान के समीप एक गाँव में यह लड़का मारा गया था और यह सम्भव नहीं था कि बिना मनुष्य भोजन प्राप्त करने के बाद बघेरे ने नदी को पार किया हो। इसलिए हमने वहाँ आने पर फौरन ही दोनों झूले के पुलों को बन्द करने का प्रयत्न किया।

गत शीतकाल में इबटसन ने सूचना सम्बन्धी बड़ी ही कारगर व्यवस्था की थी।

इस इलाके में अगर कोई कुत्ता, बकरा, गाय या कोई आदमी मारा जाता या जबरदस्ती दरवाजा खोलने का प्रयत्न किया जाता तो इस बात की खबर हमें सूचना व्यवस्था द्वारा मिल जाती। इस प्रकार हम आदमखोर की कारगुजारियों से सम्पर्क में रहे। हमारे पास सैकड़ों ही झूठी खबरें और अफवाहें आदमखोर के कथित आक्रमणों के बारे में पहुँचीं जिसके कारण लोगों को मीलों यात्रा करनी पड़ी। पर यह कोई आश्चर्य की बात न थी क्योंकि जिस क्षेत्र में आदमखोर आदमियों को मारता है उसमें हर व्यक्ति अपनी ही छाया से डरता है और रात में हर आवाज आदमखोर के ही मत्थे मढ़ी जाती है।

इसी प्रकार की एक जनश्रुति कुंडा गाँव के गन्टू नामक निवासी के विषय में है। कुंडा अलकनन्दा के किनारे रुद्रप्रयाग से सात मील की दूरी पर है। एक दिन सायंकाल को गन्टू अपने गाँव से एक मील दूर अपनी छान में जानवरों के साथ रात बिताने चला गया और जब उसका लड़का अगले दिन प्रातःकाल छान पर गया तो लड़के ने अपने पिता का कम्बल छान के दरवाजे में आधा भीतर और आधा बाहर लटका पाया और पास की गीली जमीन में उसे खिंचड़ने के चिह्न भी मालूम हुए और उसके करीब आदमखोर के पंजों के चिह्न भी थे। गाँव लौटकर उसने हो-हल्ला मचाया और गाँव के लगभग ६० आदमी गन्टू की लाश की तलाश में गए और चार रुद्रप्रयाग हमें खबर देने भेजे गए। इबटसन और मैं अलकनन्दा के बाईं ओर वाले पहाड़ी क्षेत्र का हाँका करा रहे थे और उसी समय ये चारों आदमी आए। मेरा विश्वास था कि बघेरा नदी के हमारी ओर ही था और गन्टू के बघेरे द्वारा मारे जाने की बात निराधार है। इबटसन ने चार आदमियों के साथ एक पटवारी को इस आदेश के साथ कुंडा भेजा कि वह खूब तलाशी करे और हमें वापिसी में रिपोर्ट दे। अगले ही शाम को हमें पटवारी की रिपोर्ट मिली और छान के दरवाजे के करीब की गीली मिट्टी में अंकित बघेरे के पंजे का रेखाचित्र भी मिला। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि समीपवर्ती इलाके को दिन भर तलाशी होती रही और दो सौ आदमी लगे रहने पर भी गन्टू का कोई

अवश्य नहीं मिलेगा अतः तलाशी जारी रखी जायगी। रेखाचित्र में छः वृत्त थे। भीतरी वृत्त एक फुट के बराबर बना था उसके चारों ओर समान दूरी पर पांच और वृत्त थे जो पांच फुट के बराबर थे। सब वृत्त कम्पास से बनाए गए थे। पांच दिन बाद ठीक उस समय जब इबटसन और मैं पुल की मीनार पर बैठने जा रहे थे एक आधीन व्यक्ति के नेतृत्व में एक जलूस बंगले की ओर आया। आधीन व्यक्ति बड़े ज़ोर से कह रहा था कि उसने ऐसा कोई अपराध नहीं किया जिसके कारण उसे गिरफ्तार करके रुद्रप्रयाग लाया जा रहा है। यह आधीन व्यक्ति गल्लू था। हमारे पास बिठा जाने पर उसने अपनी कहानी सुनाई। ऐसा मालूम हुआ कि जिस रात वह अपने घर से जा रहा था और जिस रात उसके मारे जाने की खबर थी, गल्लू का लड़का आया और उसने बताया कि उसने एक बैल की जोड़ी के लिए १( ) अदा कर दिए हैं। गल्लू ने कहा कि बैल ७( ) से अधिक के नहीं हैं। गाढ़ी कमाई के इस प्रकार दुरुपयोग से गल्लू को इतना क्रोध आया कि उस में रात बिताने के बाद वह जल्दी उठा और दस मील दूर एक गांव में जहां उसकी लड़की रहती थी चला गया। अगले रोज कुछ से लौटने पर पटवारी ने उसे गिरफ्तार कर लिया। गल्लू ने पूछा कि आखिर उसका ऐसा क्या कसूर है जिसके कारण गिरफ्तारी हुई। इस हास्य को वह कुछ देर बाद ही समझा पर जब वह असलियत समझ गया तब उपस्थित लोगों की भांति ही खूब हंसा। हंसी उसे इस बात पर थी कि गढ़वाल के पटवारी जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, जिसे पुलिस के अधिकार भी प्राप्त हैं उसे पांच दिन तक तलाश करते रहे और वह बेफिकरी से दस मील दूर मौज करता रहा।

इबटसन को रुद्रप्रयाग के झूला पुल की मीनार पर जिस पर प्रदूषित वायु निर्बाधित बहा करती थी पहरा रखना पसन्द नहीं था। लकड़ी और घास मौजूद थीं इसलिए मीनार के मेहराब में उन्होंने एक प्लेटफार्म बनाने का आदेश दिया। इस प्लेटफार्म पर पांच रात तक जब तक इबटसन रुद्रप्रयाग में रहे हम लोग बैठे। इबटसन के घर जाने के बाद बघेरे ने पुल पर कुत्ता मार कर खाया और [illegible]

मारा। कुत्ता और बकरे तो जिन रातों को मारे उन्हीं रातों को खा लिए गए थे। पर मैं प्रत्येक गाय की लाश पर दो-दो रात बैठा। पहली गाय की लाश पर जब मैं दूसरी रात बैठा हुआ था बघेरा आया और ठीक उस समय जब मैं अपना राइफल उठा रहा था और बिजली की बत्ती को जलाने ही वाला था एक स्त्री करीब के ही मकान में—यानी मैं जिस मकान में बैठा था उससे लगे मकान में घर से चारपाई से कूदी। वह किवाड़ खोलना चाहती थी पर दुर्भाग्यवश उसने बघेरे को भगा दिया।

इस अवधि में कोई आदमी नहीं मारा गया पर एक स्त्री और उसका दुधमुँहा बच्चा बुरी तरह घायल किए गए थे। जिस कमरे में स्त्री अपने शिशु के साथ सो रही थी उस कमरे के द्वार को बघेरे ने खोल डाला और उसकी बाँह पकड़ कर उसे बाहर घसीटने की कोशिश की। भाग्यवश स्त्री दिल की मजबूत और बहादुर थी उसके होश ठीक रहे और बेहोशी नहीं आई और जब बघेरे ने उसे फर्श पर घसीट कर खुले दरवाजे से बाहर निकाल कर घसीटना चाहा तो उसने फौरन किवाड़ बन्द कर लिया। उसकी बाँह बुरी तरह घायल हो गई और छाती पर कई गहरे घाव हो गए और बच्चे के सिर में एक घाव था। इस कमरे में मैं दो दिन बैठा पर बघेरा नहीं आया।

मार्च के अन्तिम दिनों में एक दिन मैं केदारनाथ-यात्रा-मार्ग पर एक गाँव में घूमने के बाद लौट रहा था तब जब ही मैं उस स्थान पर आया जहाँ सड़क मन्दाकिनी के बिलकुल निकट से जाती है—जहाँ दस बारह फीट का जल प्रपात है—मैंने कई आदमियों को जल-प्रपात के पास एक चट्टान पर नदी के दूसरी ओर को बैठे देखा। उनके पास एक लम्बे थान में लगा तिकोना जाल था। सड़क को छोड़ कर मैं प्रपात की ओर की पास वाली चट्टान पर बढ़ गया। उस दिन मैं काफी घूमा था इसलिए आराम करने और तमाखू पीने की तबियत भी थी और साथ में मुझे भी खयाल था कि ये आदमी क्या कर रहे हैं उसे देखूँ। फौरन ही एक आदमी खड़ा हुआ और उसने प्रपात के नीचे गिरनेवाले झागदार पानी की

और उत्तेजित होकर सकेत किया। उसके दो साथियों ने लम्बे बांस से लग जाने का प्रयत्न कर दिया। महाशेर मछलियों का एक बड़ा समूह जिसमें पांच पौंड से लगाकर दस पौंड तक की मछलियां थीं प्रपात से कूदने का प्रयत्न कर रहा था। उनमें से एक जो लगभग दस पौंड की होगी प्रपात में अलग कूदी और जब वह पानी में दुबारा कूदना चाहती थी तब उन लोगों ने बड़ी दक्षता से पकड़ लिया। जाल से मछली निकालने और छाबड़ी में रखने के बाद जाल को फिर उसी तरह रख कर फिर मछली पकड़ी गई। लगभग एक घंटे तक मैं इस तमाशे को देखता रहा इस बीच में उन्होंने चार मछलियां पकड़ीं। वे सब एक ही आकार यानी दस पौंड की थीं।

जब मैं पिछली बार रुद्रप्रयाग आया था तो डाक बंगले के चौकीदार ने बताया था कि हिम-जल के आगमन से पूर्व बसंत में अलकनंदा और मन्दाकिनी नदियों में मछली का शिकार बहुत अच्छा होता है। इसलिए अब की बार मैं बसंत में मछली मारने के सब सामान से सुसज्जित होकर आया था। मेरे पास बहुत बढ़िया १४ फुटी सामन (Salmon) मछली मारने की बंसी थी अच्छी डोरी थी जो २५० गज लम्बी थी। विभिन्न प्रकार के कांटे तिरछिम इत्यादि सामान मेरे पास था।

बघेरे की आदमखोरी की कोई खबर नहीं आई थी इसलिए मैं जलप्रपात पर बंसी और डोरी लेकर पहुंचा। पिछले दिन की भांति मछलियां प्रपात में नहीं कूद रही थीं। नदी के दूर किनारे पर बैठे लोग आग सेंक रहे थे और हुक्का पी रहे थे। हुक्के की चिलम एक हाथ से दूसरे हाथ में जाती थी और वे बड़ी उत्सुकता से मुझे देख रहे थे।

जलप्रपात के नीचे तीस से चालीस गज चौड़ा एक तालाब था जिसके दोनों ओर चट्टान की दीवार थी। तालाब सौ सौ गज लम्बा होगा और जहां मैं खड़ा था यानी तालाब के ऊपरी सिरे पर वहां से वह सौ गज तक दिखाई पड़ता था। इस सुन्दर और आकर्षक तालाब का पानी स्फटिक की भांति साफ था।

तालाब के सिरे पर चट्टान पानी से बाहर लगभग १२ फुट ऊंचा समकोण सा बनाती थी और बीस गज तक इसी ऊंचाई के बाद करीब सौ फीट तक वह ढलुवां सी थी। तालाब के मेरी ओर से पानी के धरातल तक पहुंचना सम्भव नहीं था। साथ ही मेरे स्थान से किसी मछली का पीछा करना यानी उसको ढीला छोड़ आगे चलना लाभप्रद नहीं था। ऊपर पेड़ और झाड़ियां थीं और तालाब के अन्तिम भाग की तरफ हुंकारती फेनिल धारा का अलकनंदा में संगम था। इसी से किसी मछली का इस तालाब में पकड़ना कठिन और खतरनाक था। पर पुल के पार जाया जा सकता था अगर मछली कांटे में फंस जाय। पर अभी तो मैंने डोरी और कांटा ही नहीं संभाले थे।

मेरी तरफ तालाब में पानी बहुत गहरा था और वह लगभग बिल्कुल बनाता हुआ गिर रहा था। धरातल उसका साफ था और तह दिखाई देती थी जिस पर चार से छः फीट तक पानी ठहरा रहा था। इस साफ धरातल पर हर पत्थर दिखाई दे रहा था इसमें तीन पौंड से दस पौंड की मछलियां धीरे धीरे धार की ओर बढ़ रही थीं।

मैं इन मछलियों को बारह फीट ऊपर बैठा देख रहा था और हाथ में दो इंच चौड़ा कांटा था। इतने में अगल-बगल से मछलियां एकदम निकलीं जिनके पीछे तीन बड़े महाशेर थे। मैंने फौरन ही कांटा फेंक दिया पर निशाना ठीक न लगा और पानी के दूसरी ओर जा लगा। पानी में कांटा जैसे ही गिरा वैसे ही नायक महाशेर ने उसे मुंह में दबा लिया। ऊंचे स्थान पर बैठ कर डोरी में ढील देने और खींचने में श्रम पड़ता है पर मेरा निशाना कांटा मछली के मुंह में जकड़ गया था और मेरे कांटे का सहन की उसमें काफी शक्ति थी। एक क्षण तो वह समझ ही नहीं सका और पानी में समकोण बनाती मछली अपना पेट दिखाती खड़ी रही। तब उसने सिर इधर उधर हिलाया और नायक लटककर चक्कर में मुड़ गई और धार की ओर तेजी से दौड़ी और अपनी दौड़ में आस पास की मछलियों को डरा दिया।

पहली दौड़ में महाशीर ने लगभग सौ गज रस्सी मेरी चर्खी से खींच ली और थोड़ा रुक कर पचास गज की और सपाटा लगाया। अभी रस्सी बाकी थी पर वह तालाब के मोड़ पर पहुँच गई थी और तालाब के खतरनाक किनारे पर भी। पर रस्सी में ढील देकर फिर कभी तानकर मैंने मछली का मुँह ऊपर धारा की ओर कर ही लिया। ऐसा करने के बाद मैंने उसको धीरे धीरे मोड़ कर किनारे से खींच कर सौ गज लम्बी जल राशि में जिसमें मैं खेल सकता था ले आया। ठीक मेरे नीचे एक चट्टान आगे को निकली हुई थी और नदी से कटा स्थिर पानी (back water) बन गया था। आध घंटे की कठिन लड़ाई के बाद महाशीर उसमें खिंच आई। मैं मछली को उस स्थान पर तो ले आया था पर खड़े हुए चट्टान को पार करने का कोई मौका न था तब मैंने सोचा कि डोरी काटना ही पड़ेगा इतने ही में मेरे ऊपर छाया पड़ी। चट्टान के ऊपर से झाँकते हुए नवागन्तुक ने पूछा कि बड़ी मछली फँस गई है और अब मैं क्या करने जा रहा हूँ। मैंने बताया कि चट्टान के ऊपर तो मछली को खींचना असम्भव है अतः मैं डोरी ही काटना ठीक है। उसने कहा "अरे साहब प्रतीक्षा कीजिए मैं अपने भाई को लेने जाता हूँ।" उसका भाई आया तो मैंने देखा एक लम्बा पतला दुबला नवयुवक जैसा आरामपसन्द एक पटौरा है। उसके हाथ गोबर में सने थे, वह स्पष्टतया अपना गोशाला को साफ कर रहा होगा। मैंने उससे कहा कि पहले नदी में हाथ साफ कर आओ ताकि चिकना चट्टान पर फिसल न जाओ। जब तक वह लम्बा-पतला लड़का हाथ धोने गया तब तक मैंने उसके छोटे भाई से परामर्श किया। जहाँ हम खड़े थे वहाँ कई इंच चौड़ी एक दरार टेढ़ी मेढ़ी पानी के टक्कर वाले पत्थर पर छः इंच थोड़ा होकर बन्द हो गई थी। हाथ धोकर लड़का भी आ गया। अब मैं योजना बनी कि छोटा भाई पत्थर की चट्टान पर जायगा और बड़ा भाई दरार में जहाँ तक जा सकेगा जायगा और छोटे भाई का हाथ पकड़ लेगा। मैं चट्टान पर लेट लेट बड़े भाई का हाथ पकड़ लूँगा। मैंने योजना कार्यरूप में लाने से पूर्व पूछा कि वे तैरना भी जानते हैं तो दोनों ने हँस

कर उत्तर दिया कि वे बचपन से ही मछली मारते और नदी में तैरते हैं।

योजना के सफल होने में एक कठिनाई यह थी कि मैं दो काम एक साथ नहीं कर सकता था यानी बंसी भी एक हाथ से पकड़े रहूँ और आदमी का हाथ भी पकड़े रहूँ। पर कुछ खतरा तो उठाना ही था इसलिए मैंने बंसी को रख कर डोरी को पकड़ लिया। जब दोनों भाई अपने अपने स्थान पर जम गए तब मैं चट्टान पर लंबा लेट गया और बड़े भाई का हाथ पकड़ लिया। उसके बाद मैंने धीरे धीरे मछली को चट्टान की तरफ खींचा। ऐसा करने में मैं डोरी को कभी तो अपने बाएं हाथ से पकड़ता और कभी दांतों से। इसमें तो कोई शक ही नहीं था कि वह लड़का मछली पकड़ना जानता था क्योंकि जैसे ही मछली ने चट्टान छुई वैसे ही लड़के ने मछली के गल्फड़ में अंगूठा और दूसरे में अंगुलियां को घुसेड़ कर मछली को मजबूती से पकड़ लिया। अब तक तो मछली खिंचाव में आती थी पर जब उसका गला पकड़ा गया तब उसने पूंछ से इधर उधर तड़पना शुरू किया और कुछ क्षण तो ऐसा लगा कि हम तीनों ही तैरते ऊपर नदी में गिर जायेंगे।

महासीर के नीचे के होंठ के चमड़े में कांटे की तीनों नोकें गहरी घुस गई थीं और जब मैंने कांटा निकालने के लिए नीचे के होंठ को काटा तो दोनों भाइयों ने बड़े ध्यान से उसे देखा। जब कांटा निकल आया तब उन्होंने उसे अच्छी तरह देखने की आज्ञा चाही। तब ही बाद में तीन नोकवाला कांटा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। पानी हुई पीतल का एक टुकड़ा डोरी का डवान का काम करता था। कांटे में क्या चारा लगाया गया था? मछलियां पीतल को क्यों खाना पसंद करतीं? क्या मछलियां पीतल को खाना पसंद करती हैं या किसी दूसरे मुख चारे को? जब उन्होंने सब चीजें अच्छी तरह देख लीं तब मैंने उन्हें जब तक मैं दूसरी मछली पकड़ता हूँ रुकने को कहा।

तालाब में सबसे बड़ा मछली प्रपात के नीचे थी और स्फनिल धारा में महासीर के अलावा बड़ी बड़ी गछ मछलियां भी थीं। गूंछ मेरे चारे को बहुत जल्दी

पकड़ लेती है पर पहाड़ी नदियों में नब्बे फीसदी डोरी इसलिए टूट जाती है कि जब वे कांटे में फंस जाती है तब वे तालाब की तह में बैठ कर अपना सिर चट्टान के नीचे कर लेती हैं। वहां से उन्हें निकालना कठिन तो है ही कभी कभी असम्भव भी होता है।

जहां मैंने पहली मछली पकड़ी थी उससे और अच्छी जगह वहां से चारा फेंकने की नहीं थी। इसलिए मैंने दुबारा उसी स्थान पर अपना आसन जमाया। हाथ में वंसी पकड़ी डोरी फेंकने की तैयारी की।

मैंने पहली मछली पकड़ी थी इसके कारण यानी उसे डोरी देने और खींचकर तथा चट्टान में से मछली निकालने के कारण तालाब के तह की मछलियां तितर बितर हो गई थीं पर वे धीरे धीरे वहां लौट रही थीं। फौरन ही दोनों भाइयों ने उत्तेजित होकर अपनी अंगुलियां नीचे की धार की ओर की जहां गहरा पानी शुरू होता था। वहां एक बहुत बड़ी मछली थी। डोरी फेंकने से पहले ही बड़ी मछली लौटी और विलीन हो गई। पर थोड़ी देर बाद ही वह फिर दिखाई पड़ी और छिछले पानी में आ गई। मैंने चारा फेंका पर डोरी सीगल के कारण वह कुछ छोटा पड़ा। पर अब चारा फेंका तब ठीक फेंका और उचित समय पर फेंका यानी जहां मैं उसे गिराना चाहता था वहीं गिरा। एक सेकिंड की प्रतीक्षा के बाद ताकि कांटे में लगा [illegible] डूब जाय मैंने चारा का [illegible] मार दिया। ज्यों ही थोड़े थोड़े झटके से मैं उसे खींचने लगा मजेदार मछली आगे को बढ़ी और कांटा मजबूती से उसके मुंह में फंस गया। बड़े जोर से वह उछली पानी से बाहर गिरी और फिर एकदम उछलकर पानी में गिरी और फिर उससे होकर नदी की धार के साथ दौड़ने लगी। नदी किनारे के दूर के आदमी इस सब क्रियाकलापों को उतनी ही रोचकता से देख रहे थे जितने दोनों भाई।

ज्यों ही डोरी निकलती जाती थी दोनों भाइयों ने मेरे दोनों ओर खड़े हो आग्रह किया कि मैं मछली को तालाब के अन्तिम सिरे तक न जाने दूं। ऐसी

बात कहना तो आसान है पर बिना डोरी के टूटने का खतरा उठाए किसी भी महाशेर की पहली उन्मत्त दौड़ को रोकना संभव नहीं। भाग्य मेरे साथ था या मछली दोनों से डरती थी, वहाँ तो मेरे पास चर्खे में केवल पचास गज डोरी और रह गई थी। मछली रुकी हालांकि उसने भयंकर लड़ाई नहीं छोड़ी। मोड़ के पार को खिंची और अंत में चट्टान के नीचे वाले नदी के स्थिर पानी में चली गई।

इस दूसरी मछली को निकालना उतना कष्टप्रद नहीं था जितना पहली को क्योंकि हम में से हर एक अपने अपने स्थानों और कामों को अब समझता था।

दोनों मछलियों की लम्बाई एक सी थी लेकिन दूसरी मछली पहली की अपेक्षा कुछ अधिक भारी थी। बड़ा भाई बड़े ठाठ के साथ मछली को सिर पर रख कर अपने गाँव ले गया और छोटे भाई ने मुझसे प्रार्थना की कि उसे मेरे साथ डाकबंगले चलने की आज्ञा मिल जाय और वह स्वयं मछली और बंसी लेकर चलेगा। इस समय मुझे अपने बचपन की याद आई। मेरे एक भाई था जो मछली की शिकार करता था और इसलिए जब उस लड़के ने मुझसे प्रार्थना की तो उससे यह कहने की आवश्यकता ही नहीं रही कि अगर आप मुझे मछली और बंसी ले चलने की इजाजत दें और आप जरा मुझ से कुछ दूर पीछे चलें तो बाजार में और सड़क पर मिलने वाले आदमी यही सोचेंगे कि इतनी बड़ी मछली जिसे उन्होंने कभी देखा भी न हो मैंने ही पकड़ी है।

१६

बकरे की मौत

इबटसन पौड़ी से ३१ मार्च को लौटे और अगले दिन ही प्रातःकाल जब हम कलेऊ कर रहे थे हमें रिपोर्ट मिली कि रुद्रप्रयाग से उत्तर पश्चिम की ओर एक गाँव के निकट पहली रात को बघेरा निरंतर बोलता रहा। यह स्थान उस जगह से लगभग एक मील दूर था जहा हमने पिशाच-पाश में एक बघेरे को मारा था। गाँव से उत्तर की ओर आध मील की दूरी पर और विशाल पर्वत की बगल में एक बहुत बड़ा क्षेत्र ऊबड़ खाबड़ जमीन का था जिसमें बड़ी बड़ी चट्टान और विकराल गुफाएं और गहरे सूराख थे। स्थानीय आदमियों का कहना था कि यहां उनके पुरखे तांबा निकाला करते थे। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में अरक्षित जंगल था जो कहीं कहीं तो बहुत घना था और वहां बघेरा जो पहाड़ की बगल में गाँव के ऊपरवाले पुश्तदार खेतों से आध मील तक फैला था। मुझे कुछ दिनों से इस बात का शक था कि आदमखोर बघेरा जब कभी रुद्रप्रयाग के निकट होता था तब इस स्थान को छिपाव के लिए प्रयुक्त करता था और मैं प्रायः यहां पर एक ऊंचे स्थान पर चढ़ कर बैठा करता था ताकि मैं उस ऊबड़ खाबड़ क्षेत्र में बघेरे को प्रातःकाल चट्टान पर बैठा पाऊं क्योंकि शीतकाल में बघेरे धूप लेने के बड़े आदी होते हैं और बघेरे मारने का यह बड़ा ही सरल तरीका है। इस समय बघेरे को मारने के लिए सिर्फ दो बातों की जरूरत है एक तो ठीक निशाना और दूसरा सब्र।

समय से पहले लंच करके २७५ बोर की राइफल लेकर हम चल पड़े। साथ में इबटसन का एक आदमी था जिसके पास बांडी रस्सी थी। गाँव में हमने एक जवान बकरा खरीदा। स्मरण रहे मैंने जितने भी बकरे खरीदे थे उन सबको बघेरे ने अब तक मार दिया था।

गाँव से एक अस्पष्ट पगडंडी का मार्ग उस ऊबड़-खाबड़ जमीन को जाता था। यहां से यह बाईं ओर को मुड़ा था और लगभग सौ गज पहाड़ की बगल में

जाकर पहाड़ की बगल की ओर पहुँच जाना था। पहाड़ की बगल में होकर जो रास्ता जाता था उसका मार्ग इक्का दुक्का झाड़ियों से आच्छादित था और उसके नीचे के उतार की तरफ छोटी घास थी। मार्ग के मोड़ पर जमीन में हमने मजबूत खूँटा गाड़ा और उसमें बकरे को बाँध दिया। यह स्थान अरक्षित जंगल से दस गज नीचे था। हम पहाड़ के नीचे की ओर सौ गज दूर चले गए—जहाँ बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं। उनके पीछे हम लोग छिप गए। बकरा बड़ा ही चिल्लानेवाला था। बस यों समझिए कि मैंने जितने ज्यादा चिल्लानेवाले बकरे देखे हैं उनमें से वह एक था। जब तक उसका पैना और बेधक मिमियाना जारी रहा तब तक हमें उसको देखने की जरूरत ही न थी क्योंकि वह इतनी मजबूती से बँधा था कि बघेरा उसको रस्सी तोड़ या खूँटा उखाड़ कर नहीं ले जा सकता था।

सूर्य आग के एक लाल गोले के समान केदारनाथ से ऊपर हिमाच्छादित पर्वतों से केवल एक हाथ दूर मालूम होता था। ऐसा मालूम देता था कि शिवजी की श्वेत जटाएँ पर्वत श्रेणियों के रूप में फैली हैं और केदारनाथ उनका भाल है और उस पर रक्तवर्ण सूर्य का गोला तिलक के समान अंकित है। यह दृश्य हमें तब दिखाई पड़ा जब हम चट्टानों के पीछे बैठ गए। आध घंटे बाद जब कुछ छाया-सी हुई बकरे ने एकदम मिमियाना बन्द कर दिया। चट्टान की बगल में रेंगकर और घास की चिक में से मैंने देखा कि बकरा कनौती किए हुए ऊपर झाड़ियों की तरफ देख रहा था। जैसे ही मैंने देखा बकरे ने अपना सिर हिलाया और जहाँ तक रस्सी जा सकती थी वह जाकर पीछे को खिंचा।

बघेरा निश्चितरूप से आ गया था पर वह बकरे पर झपटा नहीं था और झपटने से पहले ही बकरे को उसके आगमन का पता चल गया था अतः यह स्पष्ट था कि बघेरा बहुत ही चौकन्ना था। इबटसन का निशाना मेरे निशाने से अपेक्षाकृत ठीक रहेगा क्योंकि उनकी राइफल पर टैलिस्कोपिक साइट लगी थी और जैसे ही वे उठे और राइफल उठाई मैंने उनसे कहा कि वे सावधानी से झाड़ियों की

और देखें जिधर बकरा देख रहा है। मुझे विश्वास था कि अगर बकरा बघेरे को देख सकता है—सब रंग एक ही थे—तो रेवरेंड अपने टेलिस्कोप से बघेरे को जरूर देख सकेगा। कई मिनट तक रेवरेंड ने अपनी आंख टेलिस्कोप पर लगाए रखी फिर हिलाया राइफल रख दी और मुझसे अपनी जगह आने को कहा।

बकरा उसी आसन और ठीक उसी स्थान पर खड़ा था जिस पर मैंने उसे पहले देखा था और उसी से दिशा मिला कर मैंने टेलिस्कोप को मिलाया। आंख की पुतली का हिलना और बघेरे की मूंछ की बाल तक का हिलना उससे देखा जा सकता था। पर मुझे भी कुछ नहीं दिखाई दिया।

जब मैंने अपनी आंख टेलिस्कोप से हटाई तो प्रकाश बड़ी तेजी से क्षीण हो रहा था और बकरा पहाड़ की तलहटी में धब्बा-सा लगता था। हमको बड़ी दूर जाना था वहां रुकना खतरनाक भी था इसलिए खड़े होकर मैंने रेवरेंड से चलने को कहा। बकरे ने जब से मिमियाना बन्द किया था तब से कोई आवाज नहीं की थी। आगे आगे आदमी फिर बकरा और पीछे हम दोनों गांव को चल दिए। बकरा कभी रस्सी से बंधा नहीं था इसलिए रस्सी पकड़ कर ले जाने में बड़ी आपत्ति की इसलिए मैंने आदमी से कह दिया कि रस्सी खोल दे। मेरा अनुभव यह है कि जब बकरा जंगल में बांधा जाता है तब खोलने पर वह डर से या साथियों के अभाव के कारण कुत्ते की तरह पीछे पीछे चलता है पर इस बकरे की तो चाल ही निराली थी। ज्यों ही आदमी ने रस्सी निकाली त्यों ही वह मुड़ा और आगे रास्ते पर भाग गया। इतने अच्छे चिल्लानेवाले बकरे को छोड़ देना अच्छा नहीं था। पर यह काम फिर भी कर सकता था। इसके अतिरिक्त कुछ ही घंटे पूर्व हमने उसकी काफी कीमत अदा की थी इसलिए हम लोग उसके पीछे पीछे तेजी से चले। मोड़ पर बकरा बाएं को मुड़ा और नजर से ओझल हो गया। बकरे के पीछे भाग पर जाते हुए हम लोग पहाड़ की बगल पर पहुंचे जहां पर पहाड़ का एक बड़ा भाग घास से आच्छादित था। बकरा कहां

दिखाई न पड़ा इसलिए हमने निश्चय किया कि उसने गांव के लिए कोई पगडंडी पकड़ ली होगी इसलिए हम लोग पीछे को लौट पड़े। मैं आगे आगे था और जैसे ही हम सौ गज मार्ग के आधी दूर पहुंचे होंगे मैंने एक सफेद सी चीज मार्ग पर पड़ी देखी। स्मरण रहे कि मार्ग के ऊपर झाड़ियां और नीचे घास थी। प्रकाश बिलकुल नहीं था। उस वस्तु की ओर सावधानी से बढ़ते हुए मैंने देखा कि बकरा मार्ग में पूंछ और सर रखे पड़ा है। ऐसे आसन पर रहने से ही वह पहाड़ पर नीचे लुढ़कने से बच सकता था। उसके गले से खून बह रहा था और जब मैंने अपना हाथ उस पर रखा तो उसके पुट्ठे अब भी फड़क रहे थे। निःसंदेह यह आदमखोर का ही काम था। क्योंकि दूसरा कोई बघेरा इस तरह मार्ग में नहीं रख सकता था। मारे डर मानो बघेरे ने कहा यह लीजिए जनाब अपना बकरा अगर आपको इसकी जरूरत हो। चूंकि अंधेरा है आपको दूर जाना है इसलिए हमें देखना है कि तुम में से कौन गांव तक पहुंचता है।

मैं नहीं ख्याल करता कि हम में से तीनों आदमी जीवित गांव पहुंच जाते अगर मेरे पास दियासलाई का पूरा बक्स न होता। इत्तफाक से उस समय तमाखू नहीं पीते थे। एक दियासलाई जलाकर सावधानी से देखकर कुछ चलकर फिर दूसरी जला कर इसी प्रकार दियासलाइयों को जलाते सावधानी से चलते ऊबड़ खाबड़ मार्ग में गांव के करीब आगए जहां से हम गांववालों को आवाज दे सकते थे। पुकारने पर वे हमारे पास रोशनी लेकर आए।

बकरे को हमने वहीं छोड़ दिया था। जब प्रातःकाल मैं वहां लौटा तो आदम खोर बघेरे ने चिह्न मात्र तक देख और बकरा वैसा ही अछूता पड़ा था।

साइनाइड जहर

बकरा देखने के बाद जो गत रात मारा गया था जैसे ही मैं डाक बँगले को लौट रहा था वैसे ही मुझे सूचना मिली कि रुद्रप्रयाग में मेरी उपस्थिति की सख्त जरूरत है क्योंकि आदमखोर द्वारा गत रात्रि को एक आदमी मार दिया गया है। मुझे समाचार देनेवाले यह नहीं बता सके कि बघेरे ने कहाँ मार की है। पर आदमखोर के खोजों से स्पष्ट था कि हम लोगों का साथ तक पीछा करने के बाद वह मार्ग तक बकरे तक गया था और फिर मोड़ पर दाहिनी ओर को मुड़ गया था। इससे मैंने अनुमान लगाया और मेरा अनुमान ठीक निकला—कि हममें से किसी को मारने में असफल रहने पर बघेरे ने आगे पहाड़ की ओर अपना शिकार प्राप्त कर लिया था।

मैंने इबटसन को नन्दराम नामक व्यक्ति से बात करते पाया। नन्दराम का गाँव उस स्थान से लगभग चार मील था जहाँ हम लोग बैठे थे। उसके गाँव से आध मील ऊपर और गहरी नदिया के दूसरी ओर गबिया नामक अस्पृश्य जाति के एक आदमी ने जंगल का एक टुकड़ा साफ कर लिया था और मकान बना कर अपनी माँ, पत्नी तथा बच्चों के साथ रहता था। सूर्य निकलने पर उसी प्रातःकाल को नन्दराम ने गबिया के मकान की ओर से आनेवाली एक स्त्री की करुण पुकार सुनी, चिल्लाकर पूछने पर नन्दराम को बताया गया कि आधा घण्टा पहले ही मालिक मकान को आदमखोर उठा ले गया। इस समाचार को लेकर नन्दराम भागता हुआ डाकबँगले पर आया था। इबटसन ने अरबी और विलायती घोड़ियाँ कसवाईं और अच्छी तरह खाना खाकर हमलोग चल दिए। नन्दराम पथ प्रदर्शक के रूप में था। पहाड़ पर सड़कें तो थी नहीं, बस बकरा और गाय भैंसों का मार्ग था। विलायती घोड़ी को ऊबड़खाबड़ मार्ग पर चलने में बड़ी कठिनाई हो रही थी इसलिए घोड़ियों को हमने वापिस कर लिया और शेष भाग जो तेज चढ़ाई का था पैदल ही पार किया। जंगल में एकान्त स्थान

में स्थित मकान में आकर हमने दो दुखी स्त्रियों को देखा। उन बिचारी स्त्रियों को अब भी यह ही विश्वास था कि मकान का मालिक शायद अब भी जीवित था। उन्होंने हमें जगह बताई जहां मकान के दरवाजे के निकट गविया बैठा था जब बघेरे ने उसे पकड़ा। बघेरे ने उस अभागे आदमी की गरदन पकड़ी थी और इस प्रकार वह कोई आवाज भी नहीं कर सका। सौ गज खींचने के बाद उसे मार डाला था। तब उसके बाद वह उसे चार सौ गज दूर एक छोटे गड्ढे में ले गया जिसके चारों ओर घनी झाड़ियां थीं। स्त्रियों के रोने धोने और नन्दराम के चिल्लाने की आवाज से बघेरे की शांति भंग हो गई थी और वह गविया का केवल गला, जबड़ा, कंधा और जांघ का एक हिस्सा ही खा पाया था।

शव के निकट जहां में वह दिखाई पड़ सके कोई पेड़ ऐसा न था जहां से हम शव को देख सकें। इसलिए उन तीनों स्थानों पर जहां से उसने शव को खाया था पोटेशियम साइनाइड रख दिया। चूंकि शाम हो रही थी इसलिए हम लोग एक पहाड़ी पर बैठ गए। वहां से हम उस गड्ढे को देख सकते थे जहां वह शव पड़ा था। बघेरा निःसंदेह घनी झाड़ियों ही में था और यद्यपि हम अपने स्थानों में दो घंटे छिपे पड़े रहे पर हमें आदमखोर दिखाई नहीं पड़ा। शाम होने पर हमने वह लालटेन जलाई जो हम साथ लाए थे और डाकबंगले को लौट आए।

अगले दिन प्रातःकाल हम बहुत जल्दी उठे और उसी स्थान पर दुबारा बैठ गए जहां से गड्ढा दिखाई पड़ता था। जब हम बैठे तब उजाला शुरू ही हुआ था। हमें न तो कोई चीज दिखाई दी और कुछ न आहट सुनाई पड़ी। सूर्योदय के एक घंटे बाद हम लोग लाश पर गए। बघेरे ने उन तीनों स्थानों को छुआ भी नहीं था जहां हमने जहर रखा था। उसने दूसरा कंधा और टांग खा ली थी। लाश को वह खींचकर ले गया था और झाड़ियों में उसे छिपा दिया था।

इस स्थान पर भी कोई पेड़ नहीं था जहां बैठकर हम लाश देख सकें और बहस के बाद यह तय किया कि इबटसन तो नीचे गांव की ओर जहां

आम का पेड़ है वहीं मचान बना कर रात बिताएँ और मैं लाश से चार सौ गज पर बैठूँ जहाँ हमने आदमखोर के पहले दिन खोज देखे थे। बैठने के लिए जो पेड़ मैंने चुना वह बुरांस का पेड़ था जिसे लोगों ने पहले से ही जमीन से १८ फुट छाँट डाला था। कटे स्थानों से मजबूत शाखाएँ फूट पड़ी थीं और पुराने ठूँठ पर जो शाखाओं से घिरा था मुझे आराम और छिपनेवाली जगह मिल गई।

मेरे सामने वनाच्छादित ढलवाँ पहाड़ था जिसके नीचे छोटे बाँसों की झाड़ियाँ थीं। पहाड़ पर पूर्व और पश्चिम की ओर जानेवाली एक पगडंडी थी। बुरांस का पेड़ इस पगडंडी से दस फीट नीचे था।

पेड़ के अपने बैठने के स्थान से मुझे पगडंडी के दस गज बिना किसी रुकावट के दिखाई पड़ते थे। पगडंडी मेरी बाईं ओर को एक नरिया में होकर जाती थी और उस धरातल पर आगे नरिया को पार करती थी और मेरे दाहिनी ओर को भी लगभग तीन सौ गज आगे झाड़ियों के जरा नीचे से जाती थी जहाँ लाश रखी थी। जहाँ पर मार्ग इस नरिया को पार करता था वहाँ उसमें पानी न था पर तीस गज नीचे और मेरे पेड़ से नीचे तीन चार गज पेड़ की जड़ में छोटे-छोटे गड्ढे थे जहाँ से एक पानी की धारा बहती थी जिससे गाँववालों को पीने का पानी मिलता था और खेती की आबपाशी भी होती थी।

मार्ग के ये दस गज जितने मैं बिना किसी रुकावट के देख सकता था एक रास्ता समकोण बनाता हुआ मिला था। यह रास्ता मकान से ऊपर तीनसौ गज की दूरी से ऊँची गधिया मार्ग गया था आ रहा था। इस मार्ग के बीस गज ऊपर एक मोड़ था और उस बिन्दु से छोटा ढलाव नीचे के रास्ते की ओर गया था जिस से ऊपर से ढलाव शुरू होता था और नीचे के मार्ग में मिलता था उतना भाग मुझे नहीं दिखाई पड़ रहा था।

चन्द्रमा का स्वच्छ प्रकाश फैला हुआ था इसलिए टॉर्च की कोई जरूरत नहीं थी इसलिए अगर बघेरा मसमाग या मकान से नीचे की तरफ को आया तो मुझे बहुत ही आसान निशाना बीस से चालीस फुट की दूरी का ही मिल जायगा।

मैं इवटसन को पहुँचाने के लिए थोड़ी दूर गया था और सूर्यास्त से पूर्व ही पेड़ पर बैठ गया। कुछ मिनट बाद तीन कस्तूरी तीमर-एक मगा और दो मादा-पहाड़ के नीचे को आए और स्रोत पर पानी पीकर जिधर से आए थे उधर ही चले गए। आने और जाने में वे मेरे पेड़ के नीचे से गुजरे थे। उन्होंने मुझे बिल्कुल ही नहीं देखा था अतः यह सिद्ध था कि मेरा छिपने का स्थान बहुत ही बढ़िया था।

रात्रि का प्रारंभ तो निस्तब्ध था। लेकिन आठ बजे गाँव की दिशा में एक काकड़ ने बोलना शुरू किया। बघेरा आ गया था और मुझे विश्वास था कि वह लाश पर उन दो मार्गों में से किसी पर होकर नहीं गया जिनको मैं देख रहा था और उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ मिनटों तक काकड़ बोलता रहा और फिर वह चुप पड़ गया और उसके बाद दस बजे तक फिर शांत रहा फिर उसी काकड़ बोला। स्पष्टतया बघेरा दो घंटे लाश पर रहा और यह समय उसके पेट भरने को काफी था और उसने कई बार काफी जहर खा लिया होगा। जहर खाने के लिए काफी मौका इसलिए था क्योंकि दूसरी रात को लाश में खूब अच्छी तरह से जहर डाल दिया गया था और लाश के भीतर बहुत स्थानों पर साइनाइड दाब कर रख दी गई थी।

बिना अपने छुपकाये मैं पहाड़ की ओर को अपने सामने देखता रहा। चन्द्रमा का प्रकाश इतना तेज था कि मैं अपनी जगह पर घास के तिनके तक को देख सकता था। दो बजे प्रातःकाल मकान की ओर से आनेवाले रास्ते पर मेरे बघेरे की पदचाप सुनी। मैंने ऊपर से आनेवाले और नीचे से आनेवाले रास्ते पर सूखी पत्तियाँ छितरा दी थीं ताकि बघेरे के आने की मुझे कुछ सूचना मिल जाय। वह इन पत्तियों पर लापरवाही से आ रहा था और चुपचाप चलने का उसने जरा भी प्रयास नहीं किया और मैं बघेरे को कुछ ही सेकिण्ड में अपनी नजर के सामने देख कर गोली चला सकूँगा। बघेरे की लापरवाही की चाल से मुझे आशा हुई कि बघेरे की हालत कुछ ठीक नहीं है।

माग के मार्ग पर बघेरा कुछ रुका और तब रास्ता छोड़कर ढलाव में घुस गया। नीचे माग में चला गया और वहां जाकर भी वह कुछ रुका।

मैं बिना कुछ गति किए घंटों तक अपने घुटनों पर राइफल रख बैठा रहा और चूंकि मुझे विश्वास था कि बघेरा निश्चित मार्ग पर अवश्य आवेगा मैंने यह तय किया कि उसको मैं अपने सामने से निकलने दूं और जब राइफल उठाने की गति को भी देखने का मौका न होगा तब मैं जहां चाहूंगा वहीं गोली दाग दूंगा। कुछ मक्खियां पर मैं मार कर देखता रहा और मुझे यही आशा थी कि शाखाओं की आड़ से मुझे उसका सिर दिखाई देगा। पर जब मेरे स्नायुओं का तनाव बहुत बढ़ गया तब मैंने उसके कूदने की आवाज सुनी। वह रास्ते से कूदकर आड़ा मेरे पेड़ की ओर आ रहा था। एक क्षण के लिए तो मुझे आभास हुआ कि किसी रहस्यमय ढंग से उसे मेरे पेड़ पर बैठने का पता चल गया है और अपने अंतिम शिकार के स्वाद को पसंद न करके वह दूसरे मानवी शिकार की फिक्र में है। पर उसके रास्ता छोड़ने का कारण मुझे पकड़ना नहीं था सात पर सीधा पहुंचना था, क्योंकि फौरन ही मैंने उसके पानी पीने की लपलप आवाज सुनी।

पहाड़ पर ऊपर की चाल की गति से और पानी पीने के ढंग से मुझे विश्वास था कि बघेरे ने विष खा लिया है। पर मुझे इस बात का कोई अनुभव नहीं था कि सायनाइड विष कैसे असर करता है और मुझे यह भी पता न था कि जहर का पूरा असर कब होगा। पानी पीने के दस मिनट बाद तक जब मैं यह आशा कर रहा था कि बघेरा मांद पर मर गया होगा मैंने ढलाव के दूसरी ओर जाते हुए उसके पंजों की आवाज सुनी। जब वह निर्दिष्ट मार्ग पर आ गया तब उसके चलने की आहट बन्द हो गई और वह पहाड़ के आगे की ओर चला गया।

किसी भी समय पर जब वह माग से नीचे आ रहा था ढलाव में टावर लिये रहा पहाड़ से मरी जगह से पास से निकला जब पानी पी रहा था, जब वापिसी में जा रहा था मैंने उसे बिल्कुल नहीं देखा। यह बात चाहे मयाग से हुई हो

चाहे बघेरे ने जानबूझ कर भी हो या न, पर यह निश्चय है कि बघेरा झाड़ियों की आड़ में ही रहा जहां चन्द्रमा की एक भी किरण नहीं पहुंचती थी।

बघेरे पर निशाना लेने की अब कोई आशा न थी पर मेरे निशाने की कोई बात नहीं थी मगर साइनाइड जहर उतना ही कारगर है जितना नैनीताल में डाक्टर ने कहा था।

मैं रात भर पेड़ पर बैठा ही रहा। रास्ता देखता रहा और आवाजों को सुनता रहा। सवेरा होते ही इबटसन लौटे। हम लोगों ने एक एक प्याला चाय बना कर पी और मैंने उन्हें रात की सब बात बता दी।

लाश को देखने पर मालूम हुआ कि बघेरे ने उस भाग के पास भाग को खाया है जिसको दो रात पहले खाया था। जिस भाग को उसने खाया उसमें विष की पूरी एक खुराक रखी थी। इसके अतिरिक्त विष की पूरी दो और खुराक उसने खाई थी एक बाएं कंधे से दूसरी पीठ से।

अब बघेरे की तलाश करना आवश्यक था। इसी उद्देश्य से पटवारी जो इबटसन के साथ आया था आदमियों को इकट्ठा करने चला गया। दोपहर के करीब पटवारी दो सौ आदमियों को लेकर आया और इन आदमियों से हमने पहाड़ का वह सब भाग जिधर बघेरा गया हांका करके छान डाला।

जहां बघेरे ने पानी पिया था वहां से आधा मील की दूरी पर और वहां से सीधी पश्चिम में जहां से मैंने बघेरे का आना सुना कुछ बड़ी चट्टानें एक बहुत लम्बी और बड़ी गुफा थी। बाघ के घुसने के लिए वहां यथेष्ट स्थान था। इस गुफा के दरवाजे के निकट बघेरे ने जमीन खरोंची थी और वहां पर उसने उल्टी करके आदमी के अंगूठे भी निकाल दिए थे क्योंकि आदमी के अंगूठा को वह साबुत ही निगल गया था।

पटवारी की तरफ से स्वयंसेवकगण वहीं नजदीक से पत्थर लाए और उस गुफा का मुंह बन्द कर लिया और उसको इस तरह बन्द कर लिया कि अगर उसमें बघेरा हो तो किसी तरह निकल नहीं सकता था।

अगले दिन प्रातःकाल मैं उस गुफा पर एक मन का जाली का तार लाया और शाह की तम्बू गाड़ने की खूंटियां। कुछ पत्थरों को हटाकर गुफा के मुंह पर मैंने मजबूती से तार लगा दिए। उसके बाद दस दिन तक मैं गुफा को प्रातः और सायं देखने आता रहा। इस अवधि में आदमखोर की किसी मार की खबर नहीं मिली। इसलिए मेरी आशा बलवती हो गई कि दुबारा रुद्रप्रयाग आने पर मुझे कुछ सबूत जरूर मिलेगा कि आदमखोर बघेरा गुफा में मर गया है। दसवें दिन जब मैं प्रातःकाल गुफा पर आया तब भी ज्यों की त्यों ही बन्द मिली और जब मैं लौट कर डाक बंगले आया तब इबटसन ने मुझे यह खबर देकर स्वागत किया कि पांच मील दूर एक गांव में पिछली रात को एक स्त्री मार डाली गई है। वह गांव रुद्रप्रयाग से बद्रीनाथ यात्रा मार्ग के ऊपर लगभग एक मील है।

यह स्पष्ट था कि साइनाइड उस पशु के लिए उचित विष नहीं है जिसके बारे में सुन रखा था कि वह मक्खियों और कुत्तों से पनपता तथा उत्तेजना पाता है। बघेरे ने साइनाइड जहर खाया था इसमें भी संदेह नहीं कि वह गुफा में घुसा था क्योंकि उसके बाल गुफा में लगे थे जहां उसकी पीठ का सम्पर्क गुफा से हुआ था।

शायद साइनाइड की अति अधिक मात्रा से कुछ असर न हुआ हो और यह भी सम्भव है कि पहाड़ में कहीं दूर गुफा का दूसरा मुंह भी हो। कुछ भी हो मेरे लिए अब यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि गढ़वालियों को जो आठ वर्ष से बघेरे के निकटतम सम्पर्क में रहे हों यह धारणा हो जाय कि बघेरा चाहे प्रेतात्मा हो चाहे जानवर पर उसमें असाधारण पराभौतिक शक्ति अवश्य है और बिना अग्नि-तत्व की सहायता के उसकी मुक्ति नहीं हो सकती।

१८

नहूसत

व्यक्तियों के लिए महत्व रखनेवाली खबर बड़ी तीव्रगामी होती है और गढ़वाल में पिछले दस दिनों में यह खबर फैल गई थी कि बघेरे को जहर दे दिया है और गुफा में मूंद दिया है। ऐसी दशा में यह स्वाभाविक ही था कि लोग अपनी सतर्कता में ढिलाई कर दें। बघेरे ने भी विष के असर से चेत कर गुफा निकास पाकर पहिले ही व्यक्ति को पकड़ ही लिया जो सतर्कता में ढिलाई दिखा रहा था।

मैं गुफा से जल्दी ही आ गया था इसलिए मेरे सामने सारा दिन पड़ा था। कलेऊ के बाद हम लोग तैयार हुए, राइफलें साथ लीं और स्त्री के मारे जाने की खबरवाले गांव को चल दिए। यात्री मार्ग पर तेज सवारी के बाद हमने पहाड़ के लिए आड़ा रास्ता पकड़ा। उस रास्ते पर एक मील आगे जहां हमारा रास्ता गांव के रास्ते से मिलता था जमीन पर संघर्ष के चिह्न थे और जमीन खून से लथपथ था। मृतक के रिश्तेदार और मुखिया हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे और उन्होंने वह जगह बताई जहां बघेरे ने स्त्री को पकड़ा था। जब वह दरवाजा बंद कर रही थी तब ही बघेरे ने आ दबोचा था। वहां से बघेरा लगभग सौ गज तक पीठ के बल उसे खींच ले गया था। वहां जाकर उसने उसे रख दिया और एक तीव्र संघर्ष के बाद उसे मार डाला। गांव के लोगों ने स्त्री का घसीटना और उसका चीखना सुना था क्योंकि वह अपनी जान बचाने के लिए बघेरे से संघर्ष कर रही थी पर गांव के लोग इतने डरे हुए थे कि कोई नहीं पहुंचा।

जब स्त्री मर गई तब बघेरे ने उसे ऊपर उठाया और एक सूखी नदिया को पार कर बंजर जमीन में ले गया और फिर वहां से पहाड़ के ऊपर लगभग दो सौ गज की दूरी पर। खिंचड़न के चिह्न नहीं थे पर खून के दाग स्पष्ट थे और उनसे हम लोग कुछ समतल जमीन पर पहुंचे जो चार फुट चौड़ी और बीस फुट लम्बी थी। जमीन के इस संकीर्ण खंड के ऊपरी ओर एक अल्फुट समकोण

बनाता हुआ पुश्ता था जिसके ऊपर एक छोटा पेड़ था और इस संकीर्ण भूखंड के नीचे की ओर पहाड़ का तेज उतार था जिस पर जंगली गुलाब की झाड़ी थी जो पेड़ तक आ गई थी और पेड़ को दाब लिया था। इस सीध खड़े पुश्ते और गुलाब की झाड़ी के बीच इकट्ठी सी की हुई लाश पड़ी थी। लाश कोई सत्तर वर्षीया बुढ़िया की थी। सब कपड़े फाड़कर फेंके हुए थे और नग्न लाश पर ऊपर से गुलाब की पंखुड़ियां बिखरकर गिरी हुई थीं। क्या प्रकृति ने उस वृद्धा को गोद में लेकर पुष्पांजली चढ़ाई थी? अथवा उस उमर पर जिन्दगी और मौत में कोई फरक नहीं है इस बात के लिए गुलाब की पंखुड़ियां स्वयं गुलाब से विदीर्ण होकर चढ़ावे के रूप में उस पर आ पड़ी थीं?

दयनीय मौत के लिए बघेरे को अपने जीवन से हाथ धोने पड़ेंगे। थोड़े परामर्श के बाद इबटसन तो आवश्यक सामान लेने रुद्रप्रयाग चले गए और मैं इधर-उधर देखने गया कि क्या दिन के प्रकाश में आदमखोर से सम्पर्क सम्भव है। प्रदेश का यह भाग मेरे लिए नया था इसलिए पहला काम मेरे लिए यह था कि आसपास के स्थानों की मैं पड़ताल कर लूं। गांव में ही मैंने यह जांच कर ली थी कि पहाड़ नदिया से चार से पांच हजार फीट तक ऊंचा गया है और पहाड़ की चोटी के दो हजार फीट चौड़ी और घने बांस से आच्छादित है। उसके नीचे आधे मील की चौड़ाई तक छोटी घास का खुला फलाव है और घास के नीचे छत्रपूर्ण अरक्षित जंगल।

जंगल और घास के किनारे की ओर रहते हुए मैं पहाड़ की बगल के चारों ओर गया और अपने सामने मैंने एक ढलाव पाया जो आधा मील तक पाना भाग के चारों ओर फैला था। किसी समय पहाड़ यहां से टूटकर गिरा होगा जिससे यह बन गया था। इस ढलाव से आगे जो ऊपर के सिरे पर सौ गज चौड़ा था और नीचे जहां वह सड़क से मिलता था तीन सौ गज चौड़ा था। इस ढलाव में बड़ी जमीन खुली थी। इस ढलाव की जमीन नम थी। इस नम जमीन पर काफी बड़े पेड़ थे और पेड़ों के नीचे घनी झाड़ियां थीं। ढलाव के ऊपरी सिरे

पर एक लटकती सी चट्टान की चोटी थी जो उचाई म धाम से चालीस फीट हाती और लम्बाई म करीब सौ गज। इस चाटी के बीच में एक गहरी कुछ फीट चौडी दरार थी जिसम होकर पानी टपक रहा था। चट्टाना के ऊपर छटपुट जगल की एक पक्ति थी फिर घास। मने इस जमीन का सावधानी स देखा। मरा विश्वास था कि बघरा इसी ढलाव म कही लटा ह पर म यह नही चाहता था कि बघर का मर अस्तित्व का पता चल। हा सुविधा के हिसाब स उस मरा पता चल जाना ता काई बात नही थी। अब यह जानना आवश्यक था कि इस बात का ठीक ठाक पता चल जाय कि बघरा कहा लेटा ह। यह जानन के लिए म लाश पर फिर लौट आया।

गाव में हम बता दिया था कि स्त्री क मारे जान क बाद ही प्रकाश हा गया था और स्त्री का मारन उसे चार सौ गज ल जान और थोडा सा भाग खान म लाश का छिपान म इतना समय जरुर लगा हागा कि दिन काफी चढ आया हो। जिस पहाड पर लाश पडी थी वह गाव स पूरी तौर स दिखाई देता था और दिन निकलन पर लाश क स्थान स गाव की चहल पहल दिखाई पडती थी। इसलिए बघरे न यथासभव अपन का छिपाव क स्थान पर ही रखा हागा इस अनमान म और इसस भी कि कडी जमीन पर खाज नही मिल सकत थ म उधर चला जिधर मर विचार म बघरा गया था।

जब म आधा मील गया हुआ तब गाव अदृश्य हा गया और वही स म ढलाव की ओर आ रहा था कि बघर क खाज मिलन स बडी खुशी हुई। कदम कदम पर मुझ उसके पदचिह्न मिल क्योंकि झाडिया क नीच जहा जमीन मलायम थी वश बघरा घटा पडा रहा था। इस जगह का छोडन के बाद उसक खोजो स प्रगट होता था कि चट्टान की चाटी स लगभग पचास गज की दूरी से यह उस ढलाव म घसा था।

आध घट तक म वहा पडा रहा जहा बघरे न आराम किया था और इस आशा मे अपन सामन पेडा और झाडिया के इस ढलाव का दखता रहा कि बघरे की

थोड़ी-सी ही गतिविधि से मुझे उसकी स्थिति का पता चल जाय।

मैं कुछ मिनटों में ही इस देखभाल में रहा हूंगा कि सूखी पत्तियों में हरकत हुई और मेरा ध्यान उधर गया। शीघ्र ही मेरी नजर में दो सनभया पक्षी आए जो पत्तियों में कीड़े टटोल रहे थे। जंगल में जहां तक मांसाहारी पशुओं का संबंध है वहां तक इन पक्षियों से बढ़ कर और कोई मुखबिर नहीं है। मुझे आशा थी कि बाद में इन पक्षियों के आड़ से बघेरे का स्थान मालूम करने में मुझे मदद मिलेगी। बघेरा उस ढलाव में है इस बात के प्रमाण के लिए न तो वहां कोई गति ही हुई न ऐसी कोई आवाज़ ही सुनने को मिली पर मेरा पूरा विश्वास अब भी था कि वह वहां है और एक प्रकार से निशाना लेने पर असफल होने पर मैंने उस पर दूसरी तरह से निशाना लेने की सोची।

खुले में आए बिना बघेर को लौटने के लिए दो ही स्वाभाविक मार्ग थे। एक तो पहाड़ के नीचे बाईं ओर और दूसरा ऊपर। उसके नीचे होकर मेरा कोई लाभ न था पर अगर मैं उसे ऊपर चला सका तो वह निश्चय ही चट्टान की चोटी वाली झाड़ियों की रक्षाप्राप्ति के लिए चट्टान की चोटी की दरार में से आयगा। बघेर के ऐसा करने से मुझे निशाना लेने का मौका मिलेगा।

जहां मैंने सोचा था कि बघेरा होगा वहां मैंने निशाने में उसके आर पार चलना शुरू किया। कुछ कदम चलकर मैं कुछ ऊंचे पर हो जाता था। चट्टान की दरार पर नज़र रखने की आवश्यकता न थी क्योंकि कुछ ही फीट नीचे सनभया थे और बघेर की गति की अपनी आवाज़ में बता देते। मैं अभी लगभग चालीस गज ऊपर को आगे पीछे हटकर बढ़ा हूंगा और दरार से कुछ बाईं ओर को दस गज हुआ कि सनभया आतंकित होकर ऊपर उड़े और पास के एक छोटे पेड़ में जाकर बैठ गए। उत्तेजित होकर वे पेड़ की शाखाओं में कूदने लगे। उन्होंने स्पष्ट और चेतावनी देना शुरू किया। पहाड़ों में सनभया के चेतावनी को आधी मील तक सुना जा सकता है। गड़बड़ का मध्यान्तर धीरे धीरे में आगे बढ़ने लगा। जमीन रपटीली और ढालू थी मेरी आंख दरार पर था। मैं तो

ही धार पर चला था कि खरगोश के जून रपट गए। जब मैं सतुलन कर ही रहा था कि बघेरा ग्वार के ऊपर कूदा और करजी तीतरों के एक झुंड को उड़ा लिया जो मेरे सिर पर तलवार-से चले गए।

मेरा दूसरा प्रयास असफल रहा। यद्यपि मेरे लिए बघेरे का घर कर वहां कसना आसान था पर ऐसा निरर्थक ही था क्योंकि चट्टान की दरार अदृश्य रहना और मैं जब तक सम्भलता तब तक बघेरा बहुत नीचे निकल जाता।

इबटसन और मैंने खूनी नदियां में दो बजे मिलने का तय किया था। समय से पूर्व ही वे रुद्रप्रयाग से लौट आए, सामान भी ले आए। सामान में भोजन, चाय, पुराना पट्रोमैक्स लैम्प, अतिरिक्त राइफल, मछली मारने की रस्सी, साइनाइड की यथेष्ट मात्रा और पिशाच-पाश थे। मैंने निश्चय किया था कि आवश्यकता पड़ने पर पट्रोमैक्स मैं ले चलूंगा।

पानी की स्वच्छ धारा के निकट लंच खाया, एक एक प्याला चाय पी तब शव की ओर गए।

शव की स्थिति का मैं यहां कुछ वर्णन दूंगा ताकि पाठक को हमारी गतिविधि और बाद की घटनाओं को समझने में सहायता मिल सके।

लाश जमीन के समतल भूखंड के किनारे पर नदियां के पास पड़ी थी। जमीन का यह भूखंड चार फीट चौड़ा और बीस फीट लम्बा था। आसपास कोई अच्छा पेड़ न था जिस पर मचान बना सकें इसलिए हमने बन्दूकों के पास छिपकर और पिशाच पाश पर ही अवलम्बित रहने का निश्चय किया।

सबसे पहले हमने लाश में जहर डाला। असमंजस के कारण बघेरे ने लाश बहुत थोड़ी खाई थी और हमें भरोसा था कि अब की बार वह जरूर काफी खा जायगा। मैं लाश के ऊपर झुका यह अनुमान लगाने के लिए कि बघेरा कितना खायगा और इबटसन ने अपनी २५६ और मेरी ४५ भारी राइफलों को दो पौधों में अटका दिया।

बघेरा जिस तरफ से भी चाहता लाश पर आ सकता था। पर उसका

स्वाभाविक मार्ग वहां आने के लिए वह ही था जिसे मैं पीछे छोड़ आया था अर्थात् समतल भूमि का लगभग १५ फीट का भूखंड। इसी भूखंड पर हमने विशाल पिंजाच-पाश का लगाना शुरू किया। सबसे पहले हमने जमीन से सूखा पत्ता और तिनके उठा लिए।

जब हमने जमीन में काफी लम्बा चौड़ा, गहरा और छोटा गड्ढा खोद लिया तो खुदी मिट्टी को पहले दूर हटा दिया तब हमने उसमें पिंजाच-पाश को रखा तब मजबूत स्प्रिंगों को जो दांतों को बन्द करते थे दबा दिया। जिस काठ में वह खुलना उसे भी सभाल कर लगा लिया। तब सारे पाश को हमने हरी पत्तियों से ढक कर मिट्टी छिड़क दी। अंत में सूखी पत्तियां घास के तिनके ठीक उस तरह जमे वे वहां पड़े थे रख दिए। इतनी सावधानी से पिंजाच-पाश लगाया गया था कि स्वयं हम लोगों को मालूम करना कठिन था कि वह कहां है। तब मेरी मछली पकड़नेवाली रस्सी लाई गई और राइफल के घोड़े पर बांध कर पेड़ का चक्कर लगाकर गाय के दस फीट तक ले जाया गया तब फिर दूसरी राइफल तक ले जाकर घोड़े से बांध कर घोड़े से बांध लिया गया। रस्सी काट दी गई और ठीक तनाव से रस्सी खींची गई।

अन्तिम बार दृष्टि डालने पर हमें सूझा कि अगर बघेरे न भागे और चक्कर काटे और हमारा आगे से गया तो वह राइफलों और पिंजाच-पाश दोनों से बच सकेगा। तब हमने एक देहाती को कुल्हाड़ा मंगाने भेजा। कुल्हाड़े से एक फुट गहरे पांच गड्ढे समतल भूमि पर अपनी ओर किए और उनमें बड़ी झाड़ियां गाड़ दीं। पेड़ों को गाड़ कर उन्हें खूब खूंदा ताकि वे मजबूत हो जाएं और स्वाभाविक प्रतीत हों। अब हमें विश्वास हो गया कि चूहे जैसे पशु को छोड़ कर और किसी तरह का बड़ा पशु बिना मरे गाय का स्थान नहीं जा सकता। राइफलों के घोड़े उतार कर हम लोग गांव को लौट आए।

गांव से पचास गज और उस स्थान पर जहां हमने जमीन को खून से लथपथ पाया था एक बड़ा आम का पेड़ था। गांव से हमने लम्बा मचान और इसी

पेड पर मचान बनाया और मीठी गध देनेवाले पराल को बिछा लिया। हमारा इरादा यही रात बिताने का था ताकि बघरा पिशाच पास म फसे तो हम मार द।

सूर्यास्त के लगभग हम मचान पर जा बैठ। मचान काफी लंबा था और हम दोनो लेट सकते थ। मचान से गाव की दूरी नदिया म होकर दो सौ गज की थी। मचान के धरातल से भूमि सौ फुट ऊचा था।

इबटसन का आशका थी कि उनकी राइफल से लग टैलिस्कोपिक साइट से निशाना ठीक न लग इसलिए उन्होंने दूरबीन उठा ली और मन २७५ बोर की राइफल भर ली। हमारी योजना थी कि इबटसन तो पहाड के उस भाग का देखग जिधर से हम बघरे के आने की आशा कर रहे थ और म पहाड के चारो ओर देखूगा। मेरी राइफल पर तीन सौ गज की साइट लगी थी और मन तय किया था कि म निशाना जरूर लूगा। जब इबटसन झोका ले रहे थ तब म तमाखू पी रहा था और सामन पश्चिम से धीरे धीरे पहाडो की बढ़ती छाया को देख रहा था और जब सूर्य की किरणें अपनी कूचा से पवत शिखर को रक्तवर्ण कर रही थी इबटसन उठे और राइफल उठा ली क्योंकि बघरे के आने का समय हो गया था। अभी रोशनी के पचालीस मिनट बाकी थ। इस बीच हमने बड ध्यान से पहाड की बगल को देखा। इबटसन ने दूरबीन से और मैंने आखो से परमात्मा न मुझ तेज निगाह दी है। वहा से म पशु और पक्षी की गतिविधि को अच्छी तरह देख सकता था।

जब निशाना लेन के लिए यथेष्ट प्रकाश नहीं रहा तब मैंने राइफल रख दी और इबटसन ने भी दूरबीन को केस में रख लिया। बघरा मारने का एक मौका निकल गया पर अभी तीन और मौके थ इसलिए हम हतोत्साह नहीं हुए। अधेरा पडते ही बारिश हुई और इबटसन से मैंने बातचीत की कि आज का काम सब चौपट ही रहेगा क्योंकि अगर मेंह के जल के अतिरिक्त वोझ न पिशाच पाश को नहीं चला लिया तो मछली मारने की रस्सी तो सिकुड ही जायगी और राइफल घट जायगी। कुछ देर बाद इबटसन ने मुझसे समय पूछा। मेरे

पास रेडियम डायल की घड़ी थी और मैंने बता दिए कि पौने आठ बजे हैं। मैं समय बता ही पाया था कि इतने ही में बाघ की ओर से क्रुद्ध और क्रूर दहाड़ की आवाज़ आई। हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। बघरा रुद्रप्रयाग का अति कुख्यात बघरा आखिर पिशाच पाश में फँस ही गया।

इबटसन तो मचान से धड़ाम से कूद ही पड़े और मैं एक शाख पकड़ कर झूला और भाग्य की ही बात थी कि हमने हड्डी पसली नहीं तोड़ीं। गन्ने में छिपा पैट्रोमैक्स लैम्प लाया गया। इबटसन जब उसे जलाने लगे तो मैंने बघरे के बारे में आशंका प्रगट की कि बघरा पिशाच-पाश से शायद निकल गया। मेरे प्रति इबटसन का प्रत्युत्तर वाजिब ही था वह यह, तुम घोर निराशावादी हो। पहले कहते थे कुछ बूँदों से ही पिशाच-पाश और राइफल चल जायगी और अब चूँकि बघरा शोर नहीं मचा रहा इसलिए वह निकल गया है। मैं इसी तरह सोच रहा था और मेरी यही आशंका थी क्योंकि जब पहले हमने बघरा फँसाया था तब निरंतर गुर्राता रहा और यह बघरा थोड़े गुस्से के बाद बुरी तरह शान्त हो गया था।

इबटसन सब लैम्पों के मामले में विशेषज्ञ हैं। थोड़ी ही देर में उन्होंने पैट्रोमैक्स जला लिया और पंप कर लिया। शाखाओं को हटाकर हम उतरकर नीचे ज़मीन में जल्दी जल्दी गए। अब इबटसन को भी बघरे की चुप्पी से आशंका हुई। हम बहुत सँभल कर चले। मछली मारने की डोरी से बचते हुए और सम्भावित घायल बघरे की ओर हम लाश के ऊपर से आए। जब हम ऊँचे पुश्ते पर आए तो हमने ज़मीन में छेद देखा पर वहाँ पिशाच-पाश नहीं था। हमारी आशा कुछ हरी हुई थी पर पैट्रोमैक्स के तेज़ प्रकाश में पिशाच-पाश दिखाई पड़ने लगा। उसके दाँत बंद और खाली थे। स्त्री का शव पुश्ते से लगा नीचे पड़ा था और एक नज़र में ही मालूम हो गया कि उसका काफ़ी माँस खाया जा चुका है।

हम लौटकर आम के वृक्ष की ओर जा रहे थे। हमारे विचार इतने मन्द थे कि

उनका व्यक्त नही किया जा सकता था। पेड के पास पहुच और मचान पर चढ गए। अब जागने की कोई आवश्यकता न थी इसलिए अपने ऊपर कुछ पराल डालकर हम सो गए। रात ठण्डी थी बिस्तर हम लाए नही थे इसीलिए पराल ऊपर डाला था।

सूरज की पहली किरण के निकलते ही हमने आम के पेड के नीचे आग जलाई पानी गरम किया और कई प्याले चाय पी गए। अच्छी तरह ताप कर हम लाश की ओर गए। साथ में पटवारी इवटसन और मेरे आदमी और कुछ गाव के आदमी थे।

मै यहा यह बता दू कि हम दो थे और हमारे साथ पटवारी और कई आदमी और थे। पर अगर मै अकेला ही होता तो मै वह बात बताने में संकोच करता जो अब बताने जा रहा हू।

वृद्धा का कातिल अगर मौजूद होता और अगर उसने हमारी पिछली रात की तयारी देखी होती चाहे वह जानवर होता चाहे मनुष्य तो यह समझने मे कठिनाई होती कि अधेरी और बरसाती रात मे मौत या गिरफ्तारी का वह कैसे बचा सकता था। मेंह यद्यपि हल्का पडा था तबभी वह जमीन को मुलायम करने के लिए काफी था और हम पिछली रात की उसकी गतिविधि को समझ सके।

बघेरा उसी ओर से आया था जिधर से आने की हमें आशा थी। समतल भूखंड पर आने पर उसने उसके नीचे ऊपर चक्कर लगाए और तब वह लाश की ओर उस ओर से आया जहा हमने मजबूती से झाडिया गाड दी थी। इन झाडियो में से तीन को तो उसने उखाड फेंका था। इस तरह से उसने आने के लिए एक चौडा रास्ता बना लिया था और तब लाश को पकडकर उसने फट दो फुट राइफल की तरफ खीचा इस तरह से उसने मछली मारनेकी डोरी को ढीला कर दिया। ऐसा करने के बाद उसने पाव का खाना शुरू कर दिया। खाते समय उसने डोरी से सम्पर्क नही होने दिया। स्मरण रहे डोरी पैर से बधी थी। हमने स्त्री की लाश के सिर या गर्दन मे जहर रखना जरूरी नहीं समझा था।

इन्हीं को उसने पहले खाया तब बड़ी सावधानी से शरीर के उन सब भागों को खाया जो ज़हर की सुगन्धि में बीच में थे।

थोड़ी भूख बुझा कर बघेरे ने शव को मेंह से अपनी रक्षा करने के लिए छोड़ दिया। मुझे इसी बात की आशंका थी कि बघेरा ऐसा करेगा और उसने वैसा ही किया। मेंह के पानी के बोझ से अच्छी तरह से लगाए पाश के प्लेट को नीचे दबा दिया। उसी के नीचे उसका घोड़ा था। जैसे ही पाश पर होकर बघेरा जा रहा था स्प्रिंग ढीले हो गए और पाश के दोनों दांते उसकी पिछली टांग के घुटनों के जोड़ पर पड़े। सबसे बड़ी दुर्घटना यही हुई क्योंकि रुद्रप्रयाग में पिशाच-पाश लाने में वह गिर गया था और उसका एक तीन इंची दांत टूट गया था और बघेरे की पिछली टांग के घुटने का जोड़ दांतों में ठीक उसी जगह फंसा था जहां एक दांता टूटा था। अगर दांता बना होता तो बघेरा फंस जाता और निकलने की कोई सम्भावना न रहती। एक दांत के अभाव के कारण पाश की पकड़ इतनी ढीली थी कि वह अस्सी पौंड के पाश को गड्ढे में से निकाल लेता पर दस गज़ तक जाकर बघेरे ने अपनी टांग निकाल ली। पाश में बघेरे के बाल और खाल का एक टुकड़ा था।

बघेरे का यह व्यवहार कितना ही अविश्वसनीय मालूम हो पर जो जानवर आठ वर्ष से आदमखोर रहा हो उससे ऐसी आशा करना आश्चर्य नहीं है। खुली ज़मीन को बचाकर, आड़ में होकर, शव पर आना और हमारे द्वारा रखी हुई कटीली झाड़ियों को हटाना, शव को सावधानी से अपनी ओर खींचना और शव के उन भागों को छूना तक नहीं जिनमें हमने ज़हर डाल दिया था, सब ऐसी बातें थीं जो अस्वाभाविक और असाधारण थीं।

मेरा विश्वास है कि मैंने जो पाश के सम्बन्ध की बात कही है वह ठीक है। यह भी निश्चित ही बात है कि बघेरे का पाश के ऊपर ठीक उसी समय निकलना जब कि मेंह के पानी के बोझ से वह धस पड़ा।

पिशाच-पाश को माल्म कर और बड़ा के रिन्नगर के [illegible] आगमन की प्रतीक्षा

के बाद हम रुद्रप्रयाग लौट पड़े। अपने आदमियों को हम वहां सामान रखने के लिए छोड़ आए थे। रात के किसी समय बघेरा ग्राम के पेड़ के पास आया था क्योंकि हमने उसके खोज वहां पाए जहां बछिया के खून से जमीन लथपथ हो गई थी। इन खोजों पर हम लोग आधा मील तक आए और आगे चार मील तक सड़क ही पर डाक बंगले के फाटक तक जहां फाटक के एक खंभे के नीचे उसने जमीन खरोंची थी। यहां से वह एक मील और आगे गया जहां मेरे मित्र एन्देरे ने डेरा जमाया था और जहां उसके बकरे को बघेरे ने अकारण ही मार डाला था।

मुझे उन पाठकों से जिन्होंने दुनिया के किसी भाग में शिकार खेला है यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सब असफलताओं और निराशाओं के बाद मैं हतोत्साह नहीं हुआ वरन् उस दिन की आशा करने लगा जब मैं विष और पाश फेंक कर अपनी राइफल का ठीक निशाना रखकर उसके शरीर में एक गोली रख दूंगा।

१९

सावधानी का पाठ

मैं कभी भी उन शिकारियों से इस धारणा में सहमत नहीं रहा हूं कि वह अथवा खतरनाक जानवरों की शिकार में असफलता के कारण उनकी दास-मलूका वृत्ति* है।

शिकारी के विचार, चाहे वह आशावादी हो अथवा निराशावादी, उस जानवर की कार्यप्रणाली पर कोई असर नहीं डालते जिसे या तो मारने या फोटो लेने की वह बड़ी प्रतीक्षा करता रहता है।

हम इस बात को भूल जाते हैं कि जंगली जानवरों की घ्राण और श्रवण शक्ति विशेषकर उन जानवरों की जो अपनी इन्हीं शक्तियों से भोजन और सुरक्षा पर निर्भर हैं, सभ्य आदमी की घ्राण और श्रवणशक्ति से बहुत अधिक बढ़ी-चढ़ी होती है। हमारे लिए यह बड़ी मूर्खता की बात होगी—युक्तियुक्त तो होगा ही नहीं—अगर हम मान लें कि अपने शिकार की गतिविधि को हम नहीं देख सकते तो जिसका शिकार हम करना चाहते हैं वह भी हमारी गतिविधि को नहीं जान सकता। जब हम जानवरों के शिकार के लिए बैठते हैं तो हमारी असफलताओं का मूल कारण यह होता है कि एक तो हम जानवरों की सहज बुद्धि का गलत अनुमान लगाते हैं और दूसरे एक निश्चित अवधि तक बिना कोई आवाज किए बैठ नहीं सकते। मांसाहारी जानवरों की तीव्र श्रवण शक्ति का मैं एक उदाहरण इसलिए देता हूं ताकि लोग इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि उनसे सम्पर्क करते समय सावधानी की कितनी आवश्यकता है। यह मेरा अपना ही अनुभव है।

माघ महीने के एक दिन की बात है। जमीन पर सूखी पत्तियों की चटाई-सी

---

* अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।

जंगली सुअर का शिकार

बूढ़ा छदेरा काठगोदाम सड़क पर कुछ देर से आ पहुँचा था। वह हरिद्वार से गुड़ और नमक का सामान बद्रीनाथ से परे गांव को कर रहा था। उसकी भेड़ों और बकरियों के झुंड पर कुछ अधिक लदा था और अंतिम पड़ाव कुछ दूर था। इसलिए रुद्रप्रयाग के पड़ाव पर उसे कुछ देर हो गई और इसी कारण वह बाड़ के कमजोर स्थानों की मरम्मत नहीं कर पाया था। उसके कई बकरे बाड़ के बाहर निकल गए और उनमें से एक को बघेरे ने प्रातःकाल से कुछ पूर्व सड़क के निकट ही मार डाला। उसके कुत्ते भौंके थे और वह जग भी गया था। पर वह बाहर तब ही निकला जब उजाला हो गया और बाहर निकल कर देखा तो उसका सबसे बढ़िया बकरा सड़क पर मरा पड़ा था। बघेरे ने मारने के बाद उसे छुआ तक न था।

बघेरे के गत शाम के व्यवहार ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब बघेरा आदमखोर हो जाता है और एक लम्बे अरसे तक उसका सम्पर्क आदमियों से हो जाता है तो बघेरे का स्वभाव कितना बदल जाता है।

यह मानना उचित ही होगा कि पिशाच पाश में पकड़े जाने और दस गज तक खींच कर उसके निकल जाने से बघेरे को धक्का लगा था और वह आतंकित भी हो गया था। उसकी क्रुद्ध दहाड़ इस बात का प्रमाण था। आशा तो यह करनी चाहिए थी कि पाश से मुक्त होकर वह किसी एकांत स्थान में आबादी से यथा संभव दूर कुछ प्रवास करेगा। वहां वह तब तक रहेगा जब तक उसे भूख न सताये। यह भी स्पष्ट है कि कई दिन तक उसे भूख नहीं सता सकती थी पर ऐसा करने के बजाय वह बूढ़े की लाश के निकट ही रहा। हमको मचान पर चढ़ते देखने के बाद उसने हमें ताकने का मौका लिया और हमारी जांच करने आया। यह सौभाग्य की बात थी कि इबटसन ने मचान की रक्षा के लिए यह



बूढ़ा कसेरा

सावधानी बरती कि उसने चारा और जालीदार तार लगा लिया। आदमखोर बघेरों के लिए यह कोई नई बात नहीं है कि वे उन आदमियों को मार डालते हैं जो उनको मारने के प्रयत्न करते हैं। इन पंक्तियों के लिखते समय मध्यप्रदेश में एक आदमखोर बघेरा लगा हुआ है जिसने विभिन्न समयों में चार हिन्दुस्तानी शिकारियों को मार कर खा लिया है। अखीरी समाचार जो मुझे उस बघेरे का मिला है उनसे पता चलता है उसने अब तक चालीस आदमी मारे हैं। चूंकि उसको यह ज्ञात है कि वह अपने भावी कातिलों को ही मारता है इसलिए वह बड़े बेखटके और शांति से रह रहा है और अपने भोजन में मानवी मांस के अतिरिक्त पालतू जानवरों और जंगली जानवरों से भी काम चलाता है।

आम के पेड़ के पास आने पर बघेरा गांव के मार्ग पर वहां तक आया जहां से दो रास्ते फूटते हैं। वहां से जहां हमने जमीन को खून से लथपथ पाया था वह दाईं ओर मुड़ा और एक मील तक उस रास्ते पर गया और वहां से चार मील तक यात्री मार्ग पर और फिर वहां से अपने इलाके के अति घने क्षेत्र में। रुद्रप्रयाग आकर वह बाजार की मध्य गली में होकर गया और वहां से आगे आधी मील जाकर डाक बंगले के फाटक की जमीन को खरोंचा। गत रात्रि के मेह ने सड़क की चिकनी जमीन को मुलायम बना दिया था। मुलायम चिकनी जमीन पर बघेरे के खोज स्पष्ट रूप में अंकित थे। चिह्नों से स्पष्ट था कि पिंजरे के फाटक में फंसने से उसे कोई चोट नहीं लगी है।

कलेऊ के बाद मैं डाक बंगले के दरवाजे से उसके खोजों पर चला और दफ्तर के डेरे तक आया। सड़क के मोड़ में लेटे के ऊपर से सौ गज की दूरी से बघेरे ने झाड़ में बाहर निकल बकरी को देखा था। सड़क के बाहरी भाग से भीतरी भाग को पार करके पहाड़ से रगड़ मार कर बकरे का पीछा किया और मार लिया। मारने के बाद उसने बकरे का खून तक नहीं पिया और सड़क पर लौट आया। कांटेदार बाड़ के भीतर चारा के रूप में और मेरे बघेरा की लालच के दो बकरे रखे रहे थे। दोनों पर मजबूत जंजीर से वे मजबूती से खूंटों से बंधे थे। ये

बड़े काले शक्तिशाली कुत्ते जिनको हमारे पहाड़ों में रखते हैं उन्हीं अर्थों में भेड़ रखवाले वैसे कुत्ते नहीं हैं जैसे ग्रेट ब्रिटेन और योरुप में होते हैं। सफर में तो ये कुत्ते आदमी के पीछे चलते हैं पर इनकी ड्यूटी तब प्रारम्भ होती है जब डेरा पड़ जाता है और अपनी ड्यूटी को वे बहुत अच्छी तरह अदा करते हैं। रात के समय वे जंगली जानवर से डेरे की रक्षा करते हैं। दो कुत्ते मिलकर बघेरे को मार लेते हैं। दिन में जब मालिक भेड़ बकरी चराने जाते हैं तब वे सब माल की रक्षा करते हैं। ऐसा उल्लेख मिलता है कि एक बार एक आदमी आया और बोरा उठाने का प्रयास किया। कुत्ते उस पर टूट पड़े और मार डाला। मैंने बघेरे की वहां से खोज ली जहां उसने बकरे को मार कर सड़क पार की थी। उसके पीछे मैं गुलाबराय तक गया जहां एक गहरा नाला सड़क को पार करता है। बघेरा उसी के सहारे ऊपर चला गया था। आम के पेड़ से इस नाले तक बघेरे ने लगभग आठ मील की दूरी पार की होगी। यह लम्बी और देखने में निरर्थक यात्रा अपनी मार की जगह से ऐसी है जिसको कोई भी साधारण बघेरा किसी भी हालत में नहीं करता। कोई भी साधारण बघेरा उस बकरे को नहीं मारता अगर वह भूखा न हो। नाले से एक चौथाई मील आगे बूढ़ा लंगड़ा सड़क के किनारे एक चट्टान पर बैठा अपने झुंड को चरा रहा था जो खुले में पहाड़ी पर चर रहा था। बूढ़ा बैठा ऊन कात रहा था। जब उसने अपनी तकली और ऊन अपनी चोटी जेब में रखली तब उसने मुझसे एक सिगरेट ली और पूछा कि क्या मैं उसके डेरे के पास होकर आया हूं। मैंने कहा मैं वहां होकर आया हूं और देख आया हूं कि परमात्मा ने क्या किया है। मैंने यह भी कहा अबकी बार जब हरिद्वार जाओ तो कुत्तों को किसी उटवरिया को दे आना। स्पष्ट था कि कुत्ते मारखने नहीं हैं। सुनकर उसने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया और कहा साहब कभी कभी हम पुराने खुराफ भी गलती करते हैं और उनके लिए हम भुगतते हैं। गत रात को मैंने भी अपनी गलती से सबसे बढ़िया बकरा खो दिया। मेरे कुत्ते शेर के समान साहसी हैं। गढ़वाल भर में वे सर्वश्रेष्ठ

है। आपका यह कहना कि वे ऊँटकटिया का वचन योग्य है कुत्तों का अपमान करना है। मेरा डेरा सड़क के करीब है। मुझे इस बात की आशंका थी कि रात में कारणवश कोई आदमी निकले तो वे नुकसान पहुंचा सकते हैं इसलिए मैंने उन्हें धाड़ के बाहर बाजार में बांध लिया। नतीजा आपने देख ही लिया। साहब, आप कुत्तों को दोष न दें क्योंकि बकरी बचाने में उन्होंने इतना जोर लगाया कि उनके टांके व कालर उनकी गरदन में इतने धंस गए हैं कि घावों को अच्छा होने में समय लगेगा।

हमारी बातचीत के दौरान में गंगा के दूसरी ओर एक जानवर प्रगट हुआ। उसके रंग और आकार से पहले तो मैंने उसे हिमालय का भूरा भालू समझा पर जब वह नदी की ओर पहाड़ के नीचे से आया तब मैं समझ सका कि वह एक जंगली सूअर है। सूअर के पीछे गांव के कुत्ते पड़े थे और उनके पीछे गांव के आदमियों का एक समूह था जिनमें से हर एक के पास छोटी-बड़ी लाठियां थीं। सबसे पीछे एक बन्दूकधारी आया। यह आदमी जैसे ही पहाड़ की चोटी पर आया और उसने हथियार उठाया तो हमने थोड़ा धुआं देखा। उसके थोड़ी देर बाद दम्मदार बन्दूक की धांय की आवाज सुनी। बन्दूक की मार में केवल लड़के और आदमी थे। कोई गिरते नहीं देखा इससे हम समझ गए कि बन्दूकवाले का निशाना खाली गया है। सूअर के सामने ढालदार रेत था जिस पर कहीं-कहीं झाड़ियां थीं। ढाल की रेत के नीचे असम जमीन थी और घनी झाड़ियां थीं जो नदी-तट पर फैली थीं।

ऊबड़-खाबड़ और असम जमीन पर सूअर का माथा फिर गया और सूअर और कुत्ते साथ साथ झाड़ी में विलीन हो गए। अगले ही क्षण एक कुत्ते को छोड़ कर जो ग्रामीण-समूह का स्वागत कर रहा था सब कुत्ते झाड़ियों में से बाहर आ गए। जब लड़के और आदमी वहां आए तो उन्होंने कुत्तों को झाड़ी में फिर घुसने को ललकारा पर कुत्ते झाड़ी में घुसने को तैयार नहीं हुए। शायद उन्होंने यह देख लिया होगा कि सूअर अपनी रक्षा में क्या कर सकता है। तब

बन्दूकधारी आए। लड़के और आदमी उसे घेर कर खड़े हो गए।

हमारे लिए जो नदी के इस पार ऊँचे स्थान पर बैठे थे सम्पूर्ण दृश्य मूकचित्र के समान था। नदी पार जो शोर गुल हो रहा था वह नदी की धार की आवाज से दब जाता था। हमें जो कुछ सुनाई पड़ा वह ठम्मा बन्दूक की आवाज थी।

शिकारी महाशय झाड़ी में घुसने के लिए उतने ही राजी थे जितने कि वे कुत्ते। फौरन ही शिकारी महाशय अपने साथियों से हट कर एक चट्टान पर जम गए मानो कह रहे हों मैंने थोड़ा काम किया है अब तुम कुछ करके दिखाओ। कुछ कुत्तों को तो पीटा भी गया पर उनमें से एक भी सूअर से मुकाबला करने झाड़ी में नहीं घुसा और बन्दूकधारी तो अलग बैठे ही गए थे। इस पर लड़कों और आदमियों ने झाड़ी पर पत्थर फेंकने शुरू किए।

जब पत्थर फिंक रहे थे तब हमने देखा कि सूअर झाड़ी के नीचे किनारे से निकला बालू पर आया कुछ तेज कदमों से बाएँ सामने आ गया कुछ देर खड़ा रहा फिर आगे बढ़ा फिर रुका और उसके बाद एक दौड़ लगा कर नदी में कूद गया। सूअर विशेषकर जंगली सूअर-बढ़िया तैराक होते हैं। यह धारणा गलत है कि वे तैरने में खुरों से गला काट लेते हैं।

नदी की धार तेज थी। जंगली सूअर से बढ़कर और कोई सूरमा पशु नहीं है। जब मैंने अंतिम बार सूअर को देखा तो एक चौथाई मील तक धार में बह गया था पर वह बड़ी तेजी और मजबूती से तैरता हुआ हमारी ओर आ रहा था और मुझे विश्वास है कि वह सुरक्षित पहुँच गया होगा।

साहब क्या सूअर आपकी राइफल की मार के भीतर है? लम्बे ने पूछा।

हाँ मैंने जवाब दिया 'सूअर मार के भीतर है पर भारी मैं गढ़वाल में अपनी राइफल सूअर मारने नहीं लाया हूँ जो जीवन रक्षा के लिए भाग रहा है पर उसे जिसे तुम प्रेता सा कहते हो और जिससे घबरा रहा हूँ।

'अपनी ही बात रखो' उसने उत्तर दिया 'अब तुम जा रहे हो और अब हम शायद कभी न मिलेंगे इसलिए मेरा आशीर्वाद लेते जाओ और

'अपनी ही बात रखो,' उसने कहा, 'और अब तुम जा रहे हो और अब हम शायद कभी न मिलेंगे इसलिए मेरा आशीर्वाद लेते जाओ और समय ही बतायेगा कि हममें से कौन ठीक था।'

मुझे अफसोस है कि मैं उस लम्बे से नहीं मिला। वह बड़ी शानवाला बूढ़ा था—स्वाभिमानी और मन प्रसन्न सिवाय उस अवस्था के जब बघेरे उसके बकरों को न मार रहे हों और कुत्तों को कोई सन्दिग्ध निगाह से न देखता हो।

२१

पेड पर से पहरेदारी

अगले दिन इबटसन तो पौड़ी को लौट गए और उसके दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं रुद्रप्रयाग के पूर्वी ओर के गावों का निरीक्षण कर रहा था मुझे एक गाव से बाहर जाते हुए आदमखोर के चिह्न मिले। उस गाव में गत रात को आदमखोर ने दरवाजा तोड कर घर में घुसने की कोशिश की थी। उस घर में एक बच्चे को बुरी खांसी थी। कुछ मीलों तक खोजों पर चलने के बाद वे खोज मुझे पहाड की बगल में मिले जहा कुछ दिन पहले इबटसन और मैं एक मिमियानेवाले बकरे पर बैठे थे जिसको बाद में बघेरे ने मार दिया था।

अभी देर नहीं हुई थी और यह सम्भावना थी कि इस ऊबड खाबड चट्टान पर बघेरा कहीं धूप लेता न मिल जाय। मैं बाहर को निकलती हुई एक चट्टान पर रुक गया जहा से बहुत दूर तक दिखाई पडता था। पिछली रात मेह बरस गया था इसलिए वायुमंडल से कुहासा हट गया था और बघेरे के खोज अच्छी तरह मालूम पडते थे। साफ दिखाई पडता था और बाहर निकली चट्टान से दृश्य इतना सुन्दर था जितना कि दुनिया के किसी भाग में हो सकता है जहा कि पहाड तेईस हजार फीट ऊचे खडे हों। ठीक मेरे नीचे अलकनन्दा की अनुपम धारा थी और अलकनन्दा एक चमकीली रुपहली धागे के समान टेढी-मेढी बह रही थी मानो वह धागा घाटी में भीतर और बाहर होकर निकल रहा हो। नदी के पार पहाड पर गाव बिन्दुओं के भांति अंकित थे—किसी में एक ही छप्पर के मकान और अनेक एक लम्बी पटट की छतवाले मकान थे। मकानों की ये कतारें वास्तव में व्यक्तिगत निवासस्थान हैं। वे एक दूसरे से सट कर बनाए गए हैं ताकि खर्चा कम हो और स्थान भी कम घिरे। यहां के निवासी गरीब हैं और गढवाल में प्रत्येक फुट कृषि योग्य भूमि की आवश्यकता है।

पहाडों के परे ऊबड-खाबड चट्टानों की घाटियां थीं जिनके नीचे दानवाकार और प्रारम्भिक समय में हिमखंड दहाडते हुए गिरते हैं। चट्टानों की घाटियों के

ऊपर और आगे हमेशा जमी रहनेवाली बर्फ है जो नीलाम्बर में इतनी साफ दिखाई पड़ती है मानो सफेद पट्ट में से उसे किसी ने काट लिया हो। इससे अधिक सुन्दर और शान्तिपूर्ण दृश्य कल्पनातीत है। हिम पर्वतों के दूसरी ओर सूर्यास्त के होने पर वह सब क्षेत्र जिसे मैं देख रहा था आतंक ग्रसित हो जायगा जैसा कि वह गत आठ वर्षों से रहा है। किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं है कि वह उस आतंक की कल्पना कर सके जब तक कि उसे भुगतना न पड़े।

मैं उस चट्टान पर जो घंटे लेटा हुआ था तो दो आदमी बाजार जाते हुए मेरी ओर से निकले। वे एक मील ऊपर पहाड़ पर स्थित गांव के निवासी थे। उन्होंने मुझे बताया कि सूर्योदय से कुछ पहले उन्होंने बघेरे को इस दिशा में बोलते सुना था। मैंने बकरे पर बैठ कर बघेरे को निशाना लेने की सम्भावना पर बात की। उस समय मेरे पास कोई बकरा नहीं था। उन्होंने गांव से एक बकरा लाने का वायदा किया और कहा कि सूर्यास्त से दो घंटा पहले वे आ जायेंगे।

जब आदमी चले गए तब मैंने बैठने की जगह के लिए इधर उधर देखा। पहाड़ के इस पूरे भाग में केवल एक ही पेड़ था। वह एकांतवासी पेड़ चीड़ का था। वह मार्ग के किनारे नीचे की ओर को एक धार पर खड़ा था। उसके नीचे से एक दूसरा रास्ता ऊबड़-खाबड़ जमीन में ऊपरी किनारे से पहाड़ की बगल में होकर जाता था। पेड़ से काफी दूर तक दिखाई पड़ता था पर उस पर चढ़ना मुश्किल था और उसमें छिपाव की जगह नाम मात्र को थी। पर वहां कोई और दूसरा पेड़ तो था ही नहीं जो मैं किसी अन्य पेड़ का चुनाव करता। इस कारण मैंने उसी पर बैठने का निश्चय किया।

जब मैं सायंकाल को चार बजे लौटा तो आदमी मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे और जब मैंने उन्हें बताया कि मैं चीड़ के पेड़ पर बैठूंगा तो वे हँसने लगे। उन्होंने कहा कि बिना रस्सी की सीढ़ी के वहां चढ़ना सम्भव नहीं है। अगर चढ़ने में सफल भी हुआ और रात भर बैठने के विचार को कार्यरूप में लाया भी तो

आत्मरक्षार्थ में बचाव नहीं कर सकूंगा क्योंकि उसके लिए पत्र कोई रुकावट नहीं है। गढ़वाल में दो एक गोरे थे जिन्होंने बचपन में चिड़िया के अंडे इकट्ठे किए थे। उनमें से एक इवटसन थे और दूसरा मैं था। मैंने आदमियों की दूसरी आपत्ति का उत्तर नहीं दिया वरन् अपनी राइफल की ओर संकेत कर दिया।

उस चीड़ के पेड़ पर चढ़ना आसान न था क्योंकि बीस फीट तक उसमें शाखाएं ही न थीं पर एक शाखा तक पहुंचने पर फिर कठिन न था। मेरे पास एक सूत की लम्बी रस्सी थी और जब आदमियों ने मेरी राइफल को उसके छोर से बांध दिया तब मैंने उसे खींच लिया और पेड़ पर चढ़ गया जहां पर मुझे चीड़ की सुईनुमा पत्तियों की आड़ मिल गई।

आदमियों ने मुझे विश्वास दिलाया था कि बकरा खूब चिल्लानेवाला है। बकरे को पेड़ की एक लम्बी जड़ से बांध कर आदमी चले गए और अगले दिन प्रातःकाल आने का वायदा कर गए। बकरे ने आदमियों को जाते हुए एक नजर से देखा और उसके बाद पेड़ की जड़ के पास की छोटी घास टूंगना शुरू किया। बकरा जरा भी नहीं मिमियाया था पर इससे मुझे चिन्ता नहीं हुई क्योंकि मुझे विश्वास था कि बकरा फौरन ही अकेलापन अनुभव करेगा और शीघ्र ही मिमियाने लगेगा। अगर वह रात में भी चिल्लाया तो मैं बघेरे को मार लूंगा।

जब मैं पेड़ पर चढ़ गया तब पर्वतों की छाया अलकनन्दा तक पहुंच गई। धीरे धीरे यह छाया पहाड़ के ऊपर बढ़ी, मुझे पार कर गई और पर्वत शिखरों की चोटियां रक्तवर्ण हो गईं। जैसे ही यह लालिमा क्षीण हुई प्रकाश की लम्बी रश्मियां हिम शिखरों से ऊपर उठीं जहां पर अस्त होनेवाले सूर्य की किरणें फिर फ्लार सी हो गईं और टकरा गईं। जो सूर्यास्त का देखना जानते हैं—और मुझे दुःख है कि ऐसे लोग बहुत कम हैं—उनका ख्याल है कि विश्व के उनके अपने भाग में सूर्यास्त सर्वश्रेष्ठ है। मैं भी अपवाद नहीं हूं क्योंकि मैं ख्याल करता हूं कि संसार में हमारे सूर्यास्त की तुलना करनेवाला सूर्यास्त कहीं नहीं है और

दूसरा नम्बर बढ़िया सूर्यास्त उत्तरी ढागानाका म ह जहा पर वायुमण्डल क किसी मन्द क कारण निम्न मद्धिम विलिमजारो और उसक ऊपर म जल्बर डूबत सूय के किरणो में पिघले हुए सोन क समान चमकत ह। हिमालय म अधिकाश सूर्यास्त गुलाबी लाल और सुनहर होत ह। जिस सूर्यास्त का म उस सायकाल चीड़ के पेड़ स देख रहा था वह गुलाबी रग का था और घाटियो स बरफ की नाक क समान प्रकाश क सफ़द तीर म निकल रह थ। व गुलाबी बादल होकर निकलत हुए आकाश म विलीन हो जाते थ। अनक मनुष्यो क समान बकर का भी सूर्यास्त में कोई दिलचस्पी नहा थी। अपनी पहच का घास खाकर बठन क लिए ज़मीन खरच कर लट गया सिकुड गया और सो गया।

भय एक उलझन थी। बघरा मान्द का लगभग आन्द स नीच मौन हुए बकरे पर ही था। मुझ आशा थी कि बकरा मिमियायगा और उसकी आवाज़ में बघरा आयगा पर बकरे न एक बार भी मह नहीं खोला। मुह खोला तो बस घास के तिनक काटन क लिए उसक बाद वह सुख की नीद सो गया। उस समय पड स उतर कर टाच वगल छोट आनक प्रयत्न करन क मानी थ कि म अपना नाम भी उस सूची में लिखा दू जो जानबूझ कर आत्महत्या करत ह। वघर न काई मार तो की नहीं थी। आदमखोर को मारन क लिए मुझ कुछ तो करना ही था इसलिए मन वहा रहना निश्चय किया और स्वय बघरा को बुलान की कोशिश की।

अगर कोई मुझस पूछ कि भारतीय जगलो में मन जो इतन वष बिताए ह उसमें सबस अधिक आनन्द मुझ किस बात म मिला ह तो म बिला सकोच कहूगा कि मुझ सबस अधिक आनन्द जगल क पशु-पक्षियो क स्वभाव और उनकी बोली क ज्ञान म मिला ह। जगली पशु पक्षियो की बोल एक भाषा नहा ह। एक प्रकार क हो पशु और पक्षियो की अपनी अलग अलग बोलिया ह और यद्यपि कुछ की बोली मामिल हैं जैस मरा और सिंह का पर हर जाति क जानवरो की बोली जगल के सब ही पशु पक्षी समझत ह। जगल क किसी भी जन्तु क पड़

के स्नायु के समान समन्वित नहीं है सिवाय कलगीदार भुजंगा के और इस कारण आदमियों के लिए सम्भव है कि वे अनेक प्रकार के पशु और पक्षियों की बोली समझ सकते हैं। जंगल के जीव जन्तुओं की बोली बोलने की योग्यता से आत्मानन्द के अतिरिक्त इच्छानुसार उसका सदुपयोग भी किया जा सकता है। इसके लिए एक उदाहरण ही काफी होगा।

ईटन के अभी हाल तक के एक हाउसमास्टर लायानल फौटस्क्यू और मैं १९१८ के बाद ही हिमालय में फोटोग्राफी कर रहे थे और मछली का शिकार खेल रहे थे। एकदिन सायंकाल को हम लोग एक विशाल पर्वत की तलहटी पर स्थित एक डाकबंगले पर पहुँचे। उसकी दूसरी ओर हमारा निर्दिष्ट स्थान कश्मीर की घाटी थी। कई दिन से हम कठिन भूमि पर चल रहे थे और हमारे बोझा ढोने वाले आदमियों को आराम की जरूरत थी इसलिए हमने एक दिन बंगले पर ठहरने का निश्चय किया। अगले दिन फौटस्क्यू तो लिखा पढ़ी में व्यस्त रहे और मैं पहाड़ को देखभाल को निकल गया कि कहीं कश्मीरी बारहसिंगा ही पल्ले पड़ जाय। जिन मित्रों ने कश्मीर में शिकार खेला था उन्होंने बताया कि बिना स्थानीय अनुभवी शिकारी की सहायता के कोई कश्मीरी बारहसिंगे को नहीं मार सकता। डाक बंगले के चौकीदार ने भी इस बात की पुष्टि की। पूरा दिन मेरे लिए पड़ा था इसलिए कलेऊ के बाद मैं अकेला ही चल पड़ा। मुझे इस बात का जरा भी अनुमान न था कि कश्मीर का वह लाल हिरन कितनी ऊँचाई पर रहता है किस प्रकार की जगह पाया जाता है। जिस पहाड़ में कश्मीर का दर्रा है वह बारह हजार फीट ऊँचा है। मैं आठ हजार फीट ऊँचा चढ़ा हूँगा कि तूफान आ गया।

बादलों के रंग से मैं समझ गया कि ओले पड़ेंगे। बचाव के लिए सावधानी से मैंने एक पेड़ चुन लिया। मैंने आदमियों और जानवरों को ओले और बिजली से मरते देखा है। ओलों के तूफान के बाद बिजली गिरने का डर रहता है इसलिए मैंने बड़े पेड़ को छोड़ कर छोटा पेड़ चुना जिसकी चोटी गोलाकार थी।

और नीचे काफी घना था। मैंने सूखी पत्तियाँ और सूखे ठोठा (fir cones) चुने। मैंने आग जलाई और मेरे सिर के ऊपर ओले पड़ते रहे तड़ित दूर होता रहा पर मैं पेड़ की जड़ पर बैठा बिल्कुल सुरक्षित महसूस करता रहा।

ओलों के रुकते ही सूरज निकल आया और मैं पेड़ के सुरक्षित स्थान से जो बाहर आया तो मुझे परियों का देश ही दिखाई पड़ा। ओलों की चादर बिछी थी उन पर सूर्य का प्रकाश पड़ता था तो करोड़ों स्थानों से रोशनी निकलती थी और घास के तिनके नालों की ओर भी बह रहे थे। मैं तीन हजार फीट और ऊँचा चट्टानों की एक श्रेणी पर जा पहुँचा। चट्टानों की तलहटी में नीली पहाड़ी पौपी दिखाई पड़ी। इनमें से अनेक हिमालय के जंगली फूलों से सबसे अधिक सुन्दर होते हैं। स्वच्छ-स्फटिक श्वेत धरातल पर नीलाम्बर रंग के फूल बड़ा ही सुहावना दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

चट्टानें बहुत ही फिसलनी थीं। पहाड़ की चोटी पर जाने से कोई मतलब भी नहीं था। इसलिए मैं चट्टानों की बगल से बाईं ओर गया और आध मील जाने के बाद मुझे विशाल देवदार (fir trees) का जंगल मिला और उसके बाद घास का लम्बा मैदान जो पहाड़ की चोटी से लगा कर कई हजार फीट नीचे जंगल तक चला गया था। पेड़ों में होकर जैसे ही मैं इस घासवाले ढलान पर आया तो मैंने उसके दूसरी तरफ एक छोटे टीले पर एक जानवर चरते पाया उसकी पूँछ मेरी ओर को थी। शिकार की किताबों में मैंने चित्र देखे थे और उनसे मैं समझ गया कि यह कश्मीर का लाल हिरन है। जब उसने अपना सिर उठाया तो मैंने जान लिया कि वह मादा है। घास की ढलान के मेरी तरफ और जंगल के किनारे से करीब तीस गज पर चार फीट ऊँची एक अकेली चट्टान थी। इस चट्टान और टीले के बीच का फासला कोई चालीस गज था। जब वह हिरनी चरने लगती तब मैं सावधानी से चलता और जब वह अपना सिर उठाती तो मैं चुप हो जाता। इस प्रकार मैं चट्टान की आड़ में आ गया। हिरनी स्पष्टतया पहरे का काम कर रही थी। जब वह अपना सिर उठाती तो अपने दाहिनी

ओर देखती थी इससे मैं समझ गया कि उसके साथी भी — और किस ओर हैं। हिरनी के पास छिप कर और अधिक नहीं जाया जा सकता था। जंगल में दुबारा प्रवेश करना और फिर ऊपर से आना कुछ कठिन नहीं था पर उससे मेरे उद्देश्य की सिद्धि नहीं होती क्योंकि हवा पहाड़ से नीचे की ओर बह रही थी। अब एक ही बात थी कि मैं जंगल में दुबारा घुसूं और घास की तरफ से निचले किनारे पर चक्कर काटने पर ज्यादा समय लगता और चढ़ाई कठिन थी। मैंने इसलिए वहीं रहने का निश्चय किया और सोचा कि मैं यह देखूं कि यह हिरन भी जिसको मैं जीवन में पहली बार ही देख रहा था उसी तरह की प्रतिक्रिया करता है जिस प्रकार कि बघेरे की आवाज सुन कर चीतल और साम्भर करते हैं। वहां कम से कम एक बघेरा तो था ही क्योंकि मैंने वहां मार्ग में उसके नाखूनों की खरोंचन के चिह्न देखे थे। केवल एक आंख बाहर करके मैंने देखा और जब हिरनी घास पर मुंह मार रही थी तब मैंने बघेरे की बोली बोली।

मेरी आवाज की पहली बोली पर हिरनी एकदम मुड़ी और उसने मेरी ओर मुंह कर लिया और अपने अगले खुरों को जमीन पर मारने लगी। वह अपने साथियों को सतर्क करने का सिगनल था पर उसके साथी जिनको मैं देखना चाहता था चले नहीं जब तक हिरनी आवाज नहीं देगी। बघेरे को देखे बिना वह आवाज करनेवाली नहीं थी। मैं भूरे रंग का ट्वीड का कोट पहने था। मैंने अपना बायां कंधा दो तीन इंच चट्टान से बाहर निकाला और ऊंचा नीचा हिलाया। कंधे की गति को हिरनी ने फौरन देख लिया। तीन चार कदम वह आगे बढ़ी और बोलना शुरू किया। जिस खतरे की चेतावनी उसने साथियों को दी थी वह नजर में था और साथियों की सुरक्षा इसी में थी कि वे उसके पास आ जायं। सबसे पहले एक साल भर का बच्चा आया मेरी जमीन पर फुदकता आया और उसकी बगल में खड़ा हो गया। बच्चे के बाद तीन नर आए और उनके पीछे आई एक बूढ़ी हिरनी। पूरे छः जानवरों का झुंड मेरे सामने पचास गज की दूरी पर था। हिरनी अब भी बोल रही थी और उसने दूसरे साथी बनौनी लिए

आगे और पीछे हवा और आवाज़ की जाँच कर रहे थे और चुपचाप मेरे पीछे के जंगल की ओर ताक रहे थे। गलते हुए ओलों पर मेरा आसन कष्टप्रद था और चुपचाप वहाँ रहने से मानो ठंड लगने लगी थी। मैंने कश्मीर के प्रसिद्ध हिरन के एक प्रतिनिधि समूह को देख लिया था। हिरनों की बोली भी सुन ली थी पर एक चीज़ मैं और जानना चाहता था। मैं हिरन की बोली और सुनना चाहता था इसलिए मैंने फिर चट्टान के बाहर दो-तीन इंच कंधा निकाला तब मुझे हिरन हिरनी और साल भर के बच्चे की आवाज़ सुनने को मिली। विभिन्न स्वरों में वे बोलने लगे और मुझे उससे बड़ा आनन्द आया।

मेरे पास एक हिरन मारने की आज्ञा थी और संभव है कि उनमें से एक का सिर काफ़ी बड़ा होता। मैं सुबह हिरन को देखने और कैंप के साथियों के लिए मांस प्राप्ति के लिए आया था पर मैंने महसूस किया कि मुझे फ़िलहाल किसी बड़े सिर की आवश्यकता नहीं है। साथ ही हिरन का मांस बड़ा कड़ा होता है इसलिए राइफल प्रयोग करने के बदले मैं खड़ा हो गया और वे छः स्तंभित हिरन बात की बात में आँख से ओझल हो गए और क्षण भर बाद ही टीले के दूसरी ओर मैंने उनके भागने की आवाज़ सुनी।

बकरे लौटने के लिए समय हो गया था और मैंने घास की ढलान से और पहाड़ की तलहटी से जंगल में जाने का तय किया। मैं खुले हुए सौ गज़ लम्बे मैदान के बीच में दौड़ रहा था और [illegible] सौ गज़ ही गया हूँगा कि मैंने बाईं ओर वाली चट्टान पर खड़ी एक सफ़ेद चीज़ देखी। जल्दी में ही देखने से मालूम हुआ कि वह 'मारखोर' जाति का बकरा है। एक पखवार से हमें मांस खाने को नहीं मिला था और पौष्टिक्य से मैंने वायदा किया था कि कुछ खाना ले आऊँगा। अब अवसर भी आ गया था। बकरे ने मुझे देख लिया था और अगर मैं संदेह मिटा सका और पास से निकल सका तो मैंने सोचा कि मैं उसकी टाँग पकड़ लूँगा। इसलिए मैं चल पड़ा और बाईं ओर को हुआ। चुपचाप मैं उस रास्ते जाता था। अगर बकरा वहाँ खड़ा रहा तो उस जगह

में बढ़िया उस पकड़ने की कोई जगह भी न था क्योंकि वह पांच फीट ऊंचा चट्टान जिसके किनारे वह खड़ा था रास्ते की ओर निकली थी। बिना उसकी ओर देखे चट्टान की तरफ मैंने झपट्टा मारा और बाएं हाथ से उसकी टांग पकड़ने का झपट्टा मारा। आतंकपूर्ण झांक के साथ वह पिछले पैरों खड़ा हुआ और मेरी गिरफ्त से बाहर हो गया। चट्टान से दूसरी ओर जाकर जब मैंने उसे देखा तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह जिसे मैंने बकरा समझा था दागला कस्तूरी हिरन था। हमारे बीच केवल दस फीट का फासला था और वह छोटा लजीला जानवर विराग स्वरूप झांक रहा था। वापिस होकर मैं पहाड़ के नीचे पचास गज चला तो मैंने देखा वह हिरन चट्टान पर खड़ा था और शायद वह अपने आपको धन्यवाद दे रहा था कि उसने मुझे डरा कर भगा दिया। कुछ सप्ताह बाद मैंने कश्मीर के शिकारी जानवरों के संरक्षक को यह घटना लिखी तो उन्हें इस बात से बड़ा अफसोस हुआ कि मैंने उस हिरन को मारा नहीं। वे इस बात को जानने के बड़े इच्छुक थे कि मैंने ठीक कहां उसे देखा था पर स्थानों के मामले में मेरा स्मरण शक्ति बड़ी खराब है। मैं नहीं ख्याल करता कि वह दागला कस्तूरी हिरन किसी अजायबघर की शोभा बढ़ा रहा है।

नर बघरे अपना एक शिकार क्षेत्र सा नियत कर लेते हैं और अगर कोई दूसरा बघरा उसमें आए तो उसके प्रवेश पर वे बड़े कुपित होते हैं। आत्मसात बघरे का क्षेत्र लगभग पांच सौ वर्ग मील के इलाके में फैला था और संभवतः इस क्षेत्र में और भी नर बघरे थे। पर फिर भी इस विशिष्ट किस्म में वह कई सप्ताह से था और एक प्रकार से यह उसी का इलाका कहा जा सकता था। बघरों के जोड़ का समय तो खत्म हो चुका था और मेरी बघरे की बोली का वह शायद मादा बघरे की बोली समझ जो नर की तलाश में हो इसलिए खूब अंधेरा होने तक मैं चुपचाप रहा। इसके बाद मैंने बघरे की बोली बोली। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही कि मेरी बोली का जवाब बघरे ने फौरन ही दिया। लगभग चार सौ फीट नीचे मेरे दाहिनी ओर से बघरे ने जवाब दिया था।

बघेरे और मेरे बीच में जमीन चट्टानों से भरपूर थी और उस पर कंटीली झाड़ियाँ थीं और मैं जानता था कि बघेरा सीधा मेरी ओर नहीं आयेगा। वह ऊबड़-खाबड़ जमीन का चक्कर लगायेगा और मेरे पेड़ के पासवाली धार पर जायगा। यह बात मैंने बघेरे की दूसरी बोली से मालूम कर ली। पाँच मिनट बाद उसकी आवाज़ उस रास्ते से आई जो मेरे पेड़ के पास होकर पहाड़ की बगल में गया था और मेरे पेड़ से दो सौ गज दूर था। बघेरे को निशाना बनाने के लिए मैंने फिर बोली बोली और तीन चार मिनट बाद बघेरा सौ गज की दूरी पर बोला।

रात अंधेरी थी। मेरी राइफल की नाल में बिजली की बत्ती बंधी थी। मेरा अंगूठा बत्ती जलाने के बटन पर था। पेड़ की जड़ से रास्ता सौ गज तक बिल्कुल सीधा गया था और उसके आगे उसमें एक तेज़ मोड़ था। इसलिए मेरे लिए यह संभव नहीं होता कि मैं टॉर्च की रोशनी को मोड़ पर वहाँ डालूँ और मुझे तब तक रुकना पड़ता जब तक बघेरा बकरे पर न आ जाय।

मोड़ के ठीक पीछे और बकरे से साठ गज दूर बघेरा फिर बोला और उसका जवाब एक दूसरे बघेरे ने ऊपर पहाड़ की ओर से दिया। यह स्थिति जितनी ही उलझन पैदा करनेवाली थी उतनी ही दुर्भाग्यपूर्ण भी थी। क्योंकि मेरा बघेरा इतने निकट था कि मैं उसके लिए बोली नहीं बोल सकता था। चूँकि उसने मुझे आखिरी बार दो सौ गज की दूरी से सुना था वह स्वभावतः यह अनुमान करेगा कि लजीली मादा पहाड़ पर और दूर चली गई और वह उसको वहाँ ढूँढ़ रहा है। हाँ, एक सम्भावना यह थी कि वह उसी रास्ते पर चला आवे और नीचे जानेवाले रास्ते के दुराहे में जाय। ऐसी दशा में वह बकरे को जरूर मारेगा चाहे वह उसे खाय नहीं। पर बकरे का भाग्य जोर पर था, मेरा भाग्य साथ नहीं दे रहा था क्योंकि बघेरे ने दोनों मार्गों द्वारा बनाए कोण को काटा और दूसरी बार जब वह बोला तब वह मुझसे सौ गज की दूरी पर था और लगभग डेढ़ सौ गज अपनी भावी साथी के निकट। दोनों बघेरों की आवाजें कमजोर होती गईं और अंत में रुक गईं। एक लम्बी नीरवता के बाद एक बड़ी बिल्लियों का रोना मार्जार-

प्रणय की ध्वनि वायु म तरती हुओ मेरी आर को आयी। व आवाज़ मरे अनमान स जहा घास का मदान शुरू होना और जगल खत्म होना था आई थी। वघरे के भाग्य न भी दुभाग्यवश उसका साथ दिया वह इसलिए नही कि रात अधरी थी क्याकि प्रणयकाल म बघरा का मारना बडा आसान होता ह। यही बात नरा के लिए भी लागू ह। लकिन शिकारी जो पदल नरो को उनके प्रणयकाल म रखन जाता ह उसे यह बात जाननी चाहिए कि क्या सचमच ही वह उन्ह दखना चाहता ह क्याकि एसे समय में शर नही नरनी बहुत ही भावुक होती ह और उसका कारण ह कि बिल्ली जाति क नर अपन प्रणय में बहुत ही भोंड होते ह और वे यह नही जानते कि उनके नख कितन तेज़ ह।

बघरा मरा नहीं था और न वह उस रात मरता। पर शायद कल मर जाय परसा मर जाय क्याकि उसकी जीवन घडिया खत्म होनेवाली थी और बहुत देर तक मन भी सोचा कि मेरा समय भी करीब आ गया ह क्याकि बिना किसी चेतावनी के एक आकस्मिक अधड पेड पर आ गया और मरे सिर और परा की जगह बदल गई। कुछ सकिण्डा क लिए मने सोचा कि पेड का अपनी ठीक स्थिति पर पहुचना असम्भव ही ह और मेरा उस पर बठा रहना भी असम्भव ह। पर जब अधड रुक गया तब पेड और म अपनी पुरानी जगह पर हो गए। इस आशका से कि हालत वहा और खराब न हो जाय मने राइफल को पड की शाखा स बाध दिया। चीड क पेड न वायु क एस प्रकोप बहुत स्रहे होग पर किसी आदमी के उसक ऊपर रह कर उसका सामा करन हुए एसा कभी नहा हुआ होगा। जब राइफल सुरक्षित हो गई तब म एक शाखा स दूसरी शाखा पर चढा और पड की जितनी ही फुनगियाँ मिली उन्ह तोड दिया। यह मरी कल्पना ही हो सकती ह पर जब मने पेड का हल्का कर दिया तब वह मरे ऊपर झुका सा नहीं मालूम पडा जसा पहले लगता था। भाग्यवश चीड का पेड मुलायम और जवान था उसकी जडें मजबूती स ज़मीन में थी क्याकि वह हवा म एक घटे तक घासकी तिनके की तरह झूमा और बाद म एकदम रुक गया जस वह जमा था।

बघर के लौटन की सम्भावना नहा थी इसलिए सिगरेट पीकर थकरे की भाति म मा मा गया। जस ही सूरज निकल रहा था वस ही कुई की आवाज़ सुनते ही नीचे उतरा। पड़ के नीचे मर पिछली रात के दो दोस्त थ। साथ म उनके दो आदमी भी थ। जब उन्होंने देखा कि म जगा हू तो पूछा कि क्या मन दो बघरा की आवाज़ सुनी थी और पेड पर क्या बीता। वे यह जानकर बड प्रसन्न हुए कि बघरो से मेरी दोस्ती की बात हुई थी और जब कुछ काम नही था तब पेड की शाखें तोडकर समय काटा। मन तब उनसे पूछा कि क्या उन्ह मालूम है कि रात में थोडी हवा चली थी। इस पर एक थकने वाला साहब बोला हवा! इतनी तो कभी सुनी भी नहीं थी। उसन मेरी झोपडी उडा दी। इस पर उसके साथी न कहा इसम अफसोस की क्या बात ह? नरसिंह तो अरना नई झोपडी बनान की धमकी द रहा था और हवा न तो उस पुरानी झोपडी गिराने की तकलीफ से बचा लिया ह।

२२

आतंकपूर्ण रात्रि

चीड़ के पेड़ में बैठने के अनुभव के कई दिनों बाद तक आदमखोर से मेरा कोई सम्पर्क नहीं रहा। वह उस ऊबड़-खाबड़ जमीन में नहीं लौटा और मुझे उसका कोई पता नहीं चला और न उस बाघिन का पता चला जिसने उसकी जान बचाई थी। मैंने मीलों पहाड़ों पर, जुते खेतों में भी जांच की पर उसका कोई खोज न मिला। इन जंगलों में मैं बिल्कुल निडर था और उन्हें समझता था। अगर बघेरे वहां कहीं होते तो उन्हें पा ही लेता क्योंकि जंगल में चिड़िया और जानवर थे जो मुझे खोजने में मदद करते। मादा अशांत थी और स्पष्टतया वह दूर जा रही थी जहां उसे मैंने पेड़ की चोटी से बोलते सुना था। बघेरे से मिलने के बाद वह अपने इलाके में चली गई और साथ में बघेरे को भी लिवा ले गई जिसकी मैंने मिलाने में मदद की थी। आदमखोर शीघ्र ही लौटेगा और अलकनन्दा के बाएं किनारे के निवासी बड़े सतर्क और सावधान थे इस कारण किसी आदमी को पकड़ना मुश्किल होगा। बघेरा अब पुल पार करने की कोशिश करेगा इसलिए मैं कई रात तक पुल पर चौकसी करने बैठा।

अलकनन्दा के बाईं ओर पुल पर जाने के तीन रास्ते थे एक था दक्षिण से पुल चौकीदार के मकान के पास होकर। चौथी रात को मैंने बघेरे को चौकीदार का कुत्ता मारते सुना। कुत्ता बड़ा स्नेही थी किसी खास नस्ल का न था। वह बिचारा जब मैं उधर जाता तब भागकर आता और पूछ हिलाकर स्नेह दिखाता। कुत्ता नाम मात्र का ही भौंकता था पर उस रात वह लगातार पांच मिनट तक भौंकता रहा और फिर भौंकना एकदम एक करुण आवाज में बदल गया। उसके बाद चौकीदार चिल्लाया। मैंने रात से कंटीली झाड़ी दूर कर दी गई पुल खोल दिया गया पर बघेरे ने उस रात्रि में पुल पार करने का प्रयत्न नहीं किया।

कुत्ते को मारकर और उसे सड़क पर छोड़ने के बाद बघेरा भीनार तक आया क्योंकि सुबह मुझे उसके खोज वहां मिले। अगर वह पांच कदम और आगे

धन्ना तो पुल पर आ जाने पर वे पाँच कदम उसने नहीं उठाये। इसके विपरीत वह मोड़ को मुड़ा और बाजारवाली पगडंडी पर थोड़ा दूर चलने के बाद वह लौटा और यात्रा-मार्ग पर पश्चिम को चला गया। सड़क पर एक मील के बाद मुझे उसके खोज नहीं मिले।

दो दिन बाद मुझे खबर मिली कि पिछली रात यात्रा मार्ग पर सात मील आगे एक गाय मारी गई है। शक यही था कि उसे आदमखोर ने मारा है क्योंकि एक रात पहले यानी जिस रात को आदमखोर ने कुत्ता मारा था उसने एक मकान का दरवाजा तोड़ने की कोशिश की थी। यह मकान उस जगह के निकट था जहाँ उसने अगली शाम को गाय मारी थी।

सड़क पर मुझे कई आदमी मेरी प्रतीक्षा करते मिले। यह जानकर कि रुद्रप्रयाग से वहाँ तक आना श्रमजन्य होगा उन्होंने बड़ी समझदारी से मेरे लिए चाय तैयार की थी। जब हमने तमाखू और चाय पी ली तब लोगों ने बताया कि गाय पिछली रात को झुंड के साथ नहीं आई थी और सुबह को जब उसकी तलाश की गई तब वह सड़क और नदी-तट के बीच पड़ी मिली। उन लोगों से मुझे यह भी मालूम हुआ कि गत आठ वर्षों में वे बघेरे से कष्ट झेलते चले आ रहे हैं। मैंने यह बड़ी दिलचस्पी से सुना कि बघेरे ने अपनी तीन बरस पुरानी आदत को फिर दुहराया है यानी मकानों के दरवाजों को तोड़कर भीतर घुसना। अनेक दशाओं में वह सफल भी हो जाता है। पहले तो वह उन्हीं लोगों को पकड़ने तक सीमित था जो मकान से बाहर होते थे उसके बाद वह दरवाजा खोल मकान में घुसकर पकड़ने लगा और अब तो यह शैतान इतना निडर हो गया है कि जब उससे दरवाजा नहीं खुलता तो मिट्टी की दीवार में छेद कर लेता है और इस प्रकार अपना मानव शिकार प्राप्त कर लेता है।

जो लोग हमारे पर्वत निवासियों को नहीं जानते या उनके करिश्मों से डरने की बात को नहीं समझते उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं होगा कि जो लोग अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं और जिन्होंने रणक्षेत्र में उच्चतम पुरस्कार

पाया है इस तरह बघेरे का दरवाजा तोड़ दे या मकान की दीवार में छेद कर दें। मकानों में आदमियों के पास कुल्हाड़ी जरूर रही होगी, लोगों पर खुखरी और बहुत हालतों में बन्दूक भी रही होगी। उन आठ वर्षों की अवधि में मुझे केवल एक ही मामला सुनने को मिला जिसमें मुकाबिला किया गया। उस दशा में भी मुकाबिला करनेवाला एक स्त्री थी। वह अपने मकान में अकेली सो रही थी, कुण्डा लगाना वह भूल गई। इस मकान के दरवाजे में जिसमें स्त्री बच गई थी पर वह बुरी तरह घायल हो गई थी भीतर को खुलता था। कमरे में घुसने के बाद बघेरे ने स्त्री की बाईं टांग पकड़ ली और जैसे ही बघेरे ने उसे कमरे में से खींचा स्त्री का हाथ गंडासे पर गया। गंडासे से स्त्री ने बघेरे पर वार की। बघेरे ने अपनी गिरफ्त नहीं छोड़ी वरन वह कमरे से बाहर आ गया और जब वह बाहर आया तब या तो स्वयं स्त्री ने दरवाजा बन्द किया या अकस्मात् दरवाजा भिड़ गया। दरवाजा चाहे कैसे ही भिड़ा हो परस्थिति ऐसी हो गई कि स्त्री कमरे के भीतर और बघेरा बाहर। बघेरे ने बाहर से जोर लगाया और उसकी बाँह तोड़ ले गया। श्री मुकन्दीलाल अगले दिन उस गाँव में यू० पी० व्यवस्थापिका चुनाव के लिए वोटों की खातिर आए और कमरे में रात बिताई पर बघेरा लौटा नहीं। व्यवस्थापिका सभा में श्री मुकन्दीलाल ने रिपोर्ट दी कि एक साल के भीतर बघेरे ने ७५ आदमी मार डाले हैं और सरकार से अपील की कि आदमखोर के विरुद्ध जिहाद बोल देना चाहिए।

एक गाँववासी और माधोसिंह के साथ मैं गाँव की लाश देखने गया। नदी से सौ गज की दूरी पर और सड़क से एक चौथाई मील की दूरी पर गाय मारी गई थी। नाले के एक ओर बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं जिनके ऊपर झाड़ियाँ थीं। नाले के दूसरी ओर कुछ पेड़ थे पर बैठने लायक उनमें एक पेड़ भी नहीं था। पेड़ों के नीचे लाश से लगभग तीस गज दूर एक चट्टान थी जिसके आधार में एक खोखला-सा था मैंने यहीं बैठने का निश्चय किया।

माधोसिंह और गाँववालों ने मेरे जमीन पर बैठने पर घोर आपत्ति की पर

इस प्रयाग में आने के बाद बघेरे द्वारा मारे गए जानवर की पहली ही लाश मिली थी इसलिए मुझे आशा थी कि बघेरा शीघ्र ही आ जायगा इस कारण मैंने उनकी आपत्ति की चिन्ता नहीं की।

मेरी बैठने की जगह सूखी और आराम देनेवाली थी। चट्टान से मेरी पीठ लगी थी और मेरी टांग छिपाने के लिए झाड़ी थी और मुझे विश्वास था कि बघेरा मुझे देख नहीं पायगा। उसके यह जानने से पहले कि मैं कहां हूं मैं उसे मार दूंगा। मेरे पास टॉर्च, चाकू व और राइफल थी घुटनों पर आड़ी रखी हुई थी। मुझे लगता था कि इस एकान्त स्थान में बघेरा मारने का अब तक के मिले मौकों से अच्छा मौका था।

बिना हिलेडुले और अपनी आंखों को सामनेवाली चट्टान पर लगाए हुए मैं घास पर बैठा रहा। प्रतिक्षण वह समय निकट आता प्रतीत हुआ जब बघेरा बेखटके अपनी मार पर लौटेगा। जिस समय की मैंने प्रतीक्षा की थी वह आ गया। और अब तो समय निकला जा रहा था क्योंकि हाथ के समीपवाली चीजें भी अस्पष्ट और धुंधली होती जाती थीं। मैंने जिस समय बघेरे के आने की आशा की थी वह निकला जा रहा था पर मुझे चिंता न थी क्योंकि मेरे पास टॉर्च थी और लाश केवल तीस गज की दूरी पर थी और मैं इस बात का ध्यान रखूंगा कि निशाना ठीक पड़े और घायल जानवर का सामना न करना पड़े।

गहरे नाले में धार निम्नगामी थी। पिछले दिन के सूर्य-ताप ने किनारे की सूखी पत्तियों को सुखा कर कड़क कर दिया था यह बड़े सहारे की बात थी क्योंकि अँधेरा हो गया था। और पहले तो मुझे रक्षा के लिए दृष्टि पर अवलम्बित रहना था तो अब अपनी श्रवणशक्ति पर निर्भर रहना था। मेरा अंगूठा टॉर्च के बटन पर था अंगुली घोड़े पर और मैं जिधर भी आवाज हो निशाना लगाने को तैयार बैठा था। बघेरे के न आने से मैं बेचैन था। क्या यह सम्भव था कि वह मुझे चट्टानों में किसी छिपे स्थान से इस पूरे समय देख रहा था और क्या

वह अपने होठ चाट रहा था इस आशा में कि वह अपने दांत मेरे गले में गड़ाएगा क्योंकि उसे बहुत दिनों से मानवी मांस नहीं मिला था ? मैं उसके न आने का कोई और कारण ही नहीं समझ रहा था। अगर भाग्यवश मैं ज़िन्दा नीचे को छोड़ सका तो मुझे अपने कानों पर कभी इतना अवलम्बित रहना पड़ेगा जितना मैं पहले कभी नहीं रहा।

मैंने अपने कानों पर इतना ज़ोर दिया कि मुझे मालूम दिया कि मैं घंटों से ही सुनने की साधना कर रहा हूं और जब मैंने देखा कि इतना अधिक अंधेरा हो गया है जितना नहीं होना चाहिए तो क्या देखता हूं कि गहरा बादल आकाश में लोटपोट-सा रहा है और तारे छिपते जा रहे हैं। थोड़ी देर बाद ही बड़ी-बड़ी बूंदें गिरने लगीं। जहां पहले नितान्त शान्ति थी वहां अब चारों ओर आवाज़ थी और अब वह अवसर आ गया जिसकी बघेरा प्रतीक्षा कर रहा था। जल्दी ही मैंने अपना कोट उतारा और गर्दन में लपेट लिया तथा आस्तीनों में जकड़ कर गांठ लगा ली। राइफल तो बेकार थी पर शायद ध्यान बटाने का काम दे जाय इसलिए उसे बाएं हाथ में रखा और चाकू बाहर कर मज़बूती से दाएं हाथ में पकड़ लिया। चाकू मेरे पास वह था जिसे सीमान्तवाला अफरीदी चाकू कहते हैं और मैंने हृदय से प्रार्थना की कि वह मेरी वैसी ही सेवा करेगा जैसी इसने स्वर्गीय मालिक की थी। जब मैंने इसे उत्तरी पश्चिमी सीमा में हंगू के सरकारी स्टोर से खरीदा था तब डिप्टी कमिश्नर ने चाकू पर लगे एक लेबिल पर मेरा ध्यान आकर्षित किया था जिस पर लिखा था इस चाकू से तीन कत्ल हो चुके हैं। वास्तव में यह एक भयानक स्मारक स्वरूप था पर चाकू को अपने हाथ में रख कर मुझे खुशी थी। जब मेह धड़ाधड़ बरस रहा था तब मैं इसे मज़बूती से पकड़ बैठा था।

जंगल के साधारण बघेरे मेह पसन्द नहीं करते और जब मेह बरसता है तब वे बचने के स्थानों की खोज करते हैं। पर रुद्रप्रयाग का आदमखोर साधारण बघेरा नहीं था पता नहीं कब क्या कर बैठे।

लौटते समय माधोसिंह ने पूछा था कि मेरा कब तक बैठने का इरादा था।

तब मैंने उत्तर दिया था कि जब तक बघेरे को न मार लूँ। माधोसिंह से सहायता की कोई आशा न थी पर उस समय सहायता की मुझे अति आवश्यकता थी। मैं वहीं बैठा रहूँ या घर जाऊँ ये दो प्रश्न मुझे परेशान कर रहे थे पर लौटना मैं मैं कोई आवश्यक न था। अगर बघेरे ने मुझे नहीं देखा था तो वहाँ से जाना सरल था क्योंकि ऐसा करने में बघेरा देख लेगा और उससे मुकाबिला कठिन मालूम होगा जिस पर होकर मैं जाऊँगा। इसके विपरीत अपने स्थान पर और छः घंटे बैठे रहना और प्रतिक्षण अपनी जीवन रक्षा के लिए ऐसे हथियार से लड़ने की सोचना जिसका मैं अभ्यस्त नहीं था अपने स्नायुओं और मस्तिष्क पर बहुत ज़ोर डालना था। इसलिए मैं खड़ा हो गया और कंधे पर राइफल रख कर चल पड़ा।

मुझे ज्यादा नहीं जाना था केवल पाँच सौ गज जाना था जिसमें आधी दूर तो भारी चिकनी मिट्टी पर होकर और आधी दूर जानवरों के खुरों से घिसी चिकनी चट्टानों पर होकर। आदमखोर को आकर्षित करने के डर से मैं टॉर्च का प्रयोग करने से डरता था। एक हाथ मेरा राइफल से घिरा था दूसरा चाकू से। ऐसी हालत में मैं अनेक बार गिरा। जब अन्त में मैं सड़क पर पहुँच गया तब मैंने पूरा गला फाड़ कर रात्रि में कूऽ की आवाज़ की और एक क्षण बाद ही पहाड़ के गाँव का एक मकान खुला और माधोसिंह तथा उसके साथी लालटेन लेकर आ गए।

जब वे आदमी मेरे पास आ गए तब माधोसिंह ने कहा 'जब तक मैंने नहीं देखा था तब तक तो आपके बारे में मुझे कोई चिन्ता नहीं थी पर बाद में मैं बहुत बेचैन हुआ लालटेन जलाओ और कान लगाए बैठा रहा। दोनों आदमी रुद्रप्रयाग जाने को तैयार थे इसलिए हम लोग साथ साथ चलने को तैयार हुए। बच्चीसिंह व्याध था उसके बाद माधोसिंह के पास लालटेन थी सबसे पीछे मैं। जब मैं अगले दिन लौटा तो गाय को अछूता पाया और सड़क पर आदमखोर के चिह्न देखे। यह कहना कठिन था कि हमारे सड़क पर आने से कितनी देर बाद बघेरा सड़क पर आया।

जब म उस रात्रि का ख्याल करता ह तब म उसे अपनी आतकपूण रात्रि समझता हू। अनेक बार म डरा हू पर म इतना कभी नही डरा जितना म उस रात को भयभीत हुआ जब आकस्मिक मेंह बरसने लगा और मेरे बचाव के सब साधन छूट गए, केवल एक ज्योतिष का भाव रह गया था।

२३

बघेरों की लड़ाई

रुद्रप्रयाग तक हमारा पीछा करने के बाद बघेरा गुलाबराय से होकर यात्रा मार्ग पर गया। नाले से गुज़र कर जिसके ऊपर से वह कुछ दिन पहले गया था वह उस ऊबड़ खाबड़ रास्ते पर गया जिसे रुद्रप्रयाग के पूर्व की ओर पहाड़ी पर रहनेवाले लोग हरिद्वार के लिए पगडंडी के रूप में प्रयुक्त करते हैं।

बदरीनाथ और केदारनाथ की तीर्थ-यात्रा फ़सली होती है और तीर्थ-यात्रा का प्रारम्भ और उसकी अवधि दो बातों पर अवलम्बित होती है – एक तो बरफ के गलने और दूसरे बदरी और केदार के निकटवर्ती उच्च पर्वत-शिखरों पर गिरने पर। कुछ दिन पूर्व बदरीनाथ के रावल ने तार दे दिया था कि मार्ग खुल गया है। इस प्रकार के तार का स्वागत चारों ओर हुआ और गत कुछ दिनों से छोटी टुकड़ियों में यात्री रुद्रप्रयाग होकर आने लगे थे।

गत वर्षों में आदमखोर ने यात्रा मार्ग पर कई आदमी मार डाले और आदमखोर की यात्रा के दिनों के लिए यह आदत सी हो गई थी कि वह इस सड़क पर जहाँ तक उसका गश्त था आया जाया करता था। वह रुद्रप्रयाग के पूर्व पहाड़ों पर स्थित गाँवों में चक्कर काट कर रुद्रप्रयाग से ऊपर पन्द्रह मील फिर सड़क पर आया जाया करता था। इस गोलाकार चक्कर काटने में उसको एक ही समय नहीं लगता था पर औसतन रुद्रप्रयाग और गुलाबराय के बीच के सड़क के टुकड़े पर पाँच दिन में एक बार उसके खोज मिलते थे। डाकबंगले के चौकीदार ने एक स्थान बताया जहाँ से मुझे सड़क दिखाई पड़ती थी और मैं अगली दो रातें बड़े आराम से घास की कुर्सी में बैठा। पर बघेरे के दर्शन नहीं हुए।

दो दिन तक मुझे पास के गाँव से आदमखोर की कोई खबर नहीं मिली। तीसरे दिन प्रातःकाल मैं यात्रा मार्ग पर छः मील तक गया यह मालूम करने के लिए कि क्या उस ओर के किसी गाँव में बघेरा हाल में आया है। इस बारह मील की यात्रा के बाद मैं दोपहर को लौटा और जब मैं नाश्ता कर रहा था

तब दो आत्मी आए और मुझ खबर दी कि गत रात भसवाड़ म एक लड़का मारा गया है। भसवाड़ा रुद्रप्रयाग के दक्षिण पूर्व अठारह मील दूर है।

इबटसन द्वारा स्थापित सूचना व्यवस्था बहुत बढ़िया ढंग से काम कर रही थी। इस व्यवस्था के अनुसार आत्मखोर के इलाके म बाघ द्वारा की गई प्रत्यक मार का समाचार एक निश्चित इनाम द्वारा पुरस्कृत हो। प्रत्यक बकरे की मार का खबर के लिए दो रुपय से लगाकर मनुष्य की मार की खबर के लिए बीस रुपय तक निश्चित थ। इन इनामो के लिए काफी होड़ रहती थी। इस तरह सब मारो के विषय में शीघ्र से शीघ्र समाचार मिलने का बीमा-सा था।

जब मने दोनो आदमियो को दस रुपया प्रति आत्मी दिया तब उनमें स एक तो मेरे साथ भसवाड़ा के लिए पथ प्रदशन को भी तयार हो गया। दूसरे ने कहा कि वह रात में रुद्रप्रयाग ही रहेगा क्योकि हाल ही में वह ज्वर पीडित रहा था और वापिसी के अठारह मील उसी दिन न कर सकेगा। जब म कलऊ कर रहा था तब वे अपनी बात सुनाते रहे। दोपहर म कुछ पूर्व ही म एक टाच राइफल और कुछ कारतूस लेकर चल पड़ा। जैसे ही डाकबगल के पास हमन सड़क पार की और दूसरी ओर की पहाड़ की चढाई पर चढने लगे मेरे साथी न कहा रास्ता दूर ह और अधेरे म सुरक्षा नहीं होगा। मन आत्मी को आगे और तेज चलन को कहा। अपनी तबियत स म भोजन के बाद फौरन ही चढाई पर तेजी चढना पर मेरे लिए विवशता थी। पहले तीन मील ही म हम चार हजार फीट चढ गए। अपन साथी का साथ देन में मुझ बडी कठिनाई हुई। तीन मील के बाद रास्ता कुछ समतल मिला और मझमें कुछ दम आ गया। उसके बाद म आग चला और काफी तेज चला।

रुद्रप्रयाग आत समय उन दोनो आत्मियो न मार्ग में पडनवाल आत्मियो स बघरे की मार के बारे में कह दिया था। लोगो म यह भी कह दिया था कि उनका इरादा यह ह कि वे मझ अपन साथ भसवाड़ा लान का आग्रह करग। मेरा ख्याल ह कि किसी न इस बात पर ध्यान न किया होगा कि म उनक

आग्रह को मानूँगा क्योंकि प्रत्येक गाँव में वहाँ की पूरी आबादी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। कुछ ने तो मुझे आशीर्वाद दिया और कुछ ने प्रार्थना की कि जब तक उनके दुश्मन को न मार लूँ तब तक गढ़वाल छोड़ कर न जाऊँ।

मेरे साथी ने विश्वास दिलाया था कि हमें अठारह मील चलना है और जैसे ही गहरी घाटियों को पार करते हुए एक पर्वत शिखर से दूसरे पर पहुँचे वैसे ही मैंने महसूस किया कि उन अठारह मीलों की यात्रा अत्यन्त कठिन थी। वे मील भी क्या थे? मैंने भी जीवन में कभी भी इतने कठिन और लम्बे मीलों का अनुभव नहीं किया था। साथ ही उन अठारह मीलों के लिए समय भी यथेष्ट नहीं था। सूरज लगभग डूब रहा था। जब उन असीम पर्वतों के एक शिखर से कई सौ गज हमसे आगे एक पर्वत मार्ग पर बहुत से आदमियों को खड़े देखा। जब हम पर उनकी नजर पड़ी तो उनमें से कुछ तो पर्वत मार्ग के दूसरी ओर विलीन हो गए और कुछ आगे बढ़े। स्वागत करनेवालों में भैंसवाड़े का मुखिया भी था। अभिवादन के बाद यह कह कर उत्साहित किया कि उसका गाँव उस पर्वत शिखर के ठीक परे है और गाँव में पहुँचकर मुझे चाय मिलेगी क्योंकि उसने अपने लड़के को इस काम को भेज दिया है।

१४ अप्रैल सन् १९२६ का दिन गढ़वाल में चिरस्मरणीय रहेगा क्योंकि रुद्रप्रयाग के आदमखोर बघेरे के जीवन में यह अन्तिम दिन था जब उसने अपना आखिरी मानवी शिकार मारा थी। उस दिन मायकाल की एक विधवा अपना गद नौ वर्षीया लड़की और बारह वर्षीय लड़के और पड़ोसी के आठ वर्षीय लड़के के साथ भैंसवाड़ा गाँव से कुछ गज ही दूर अपने मायकाल के भोजन के लिए मान पर पानी लेने गई। विधवा और दोनों बच्चे भैंसवाड़े के मकानों की एक लम्बी पंक्ति के बीच में रहते थे। ये मकान दुमंजिले थे। नीचे की छोटी छत वाली मंजिल गल्ला और लकड़ी रखने के काम में आती थी और ऊपरवाली निवास के लिए। मकानों के आगे चार फीट चौड़ा बरामदा था। ऊपर जाने को पत्थर की सीढ़ियाँ थीं जिनके दोनों ओर दीवारें बनी थीं। प्रत्येक दो मकानों

के लिए एक-एक सीढ़ी थी। मकानों की पंक्ति के चारों ओर एक छोटी दीवार थी। बीच में साठ फीट चौड़ा और तीन सौ फीट लम्बा एक बरामदा था। जब विधवा उसके बच्चे तथा पड़ोसी का बच्चा पानी भर कर लौटे तब आगे आगे पड़ोसी का लड़का था। जब लड़का सीढ़ियों पर चढ़ने लगा तो उसने एक जानवर को देखा। उस जानवर को उसने कुत्ता समझा। वह सीढ़ियों से कुछ नीचे के तल्ले के खुले कमरे में पड़ा था। उस समय उसने उसके बारे में कुछ नहीं कहा। पर दूसरों ने उसको देखा ही नहीं। पड़ोसी के लड़के के पीछे विधवा की लड़की थी उसके पीछे स्वयं विधवा सबसे पीछे यानी विधवा के पीछे उसका लड़का था। जब वह आधी सीढ़ियां चढ़ गई तब उसने अपने लड़के के सिर पर रखे बर्तन की सीढ़ियों के ऊपर गिरने और लुढ़कने की आवाज सुनी। लड़के की लापरवाही पर उसने बुरा भला कहा और बरामदे में पानी रख कर वह देखने को मुड़ी कि लड़के ने बर्तन का क्या नुकसान किया है। सीढ़ियों के नीचे उसने बर्तन औंधा पाया। वह नीचे उतरी बर्तन उठाया और लड़के की तलाश में आस पास दौड़ाई। कहीं वह नजर नहीं आया तब उसने समझा कि लड़का डर गया है और उसे बुलाना शुरू किया। पड़ोस के मकानवालों ने बर्तन की आवाज सुनी थी और जब मां को पुकारते सुना तो वे दरवाजों तक आए और पूछने लगे कि आखिर क्या बात है। यह सुझाव पेश किया गया कि नीचे के तल्ले के किसी कमरे में छिपा होगा इसलिए चूंकि अंधेरा था एक आदमी लालटेन जलाकर लाया और स्त्री की ओर को बढ़ा और जैसे ही उधर आया उसने स्त्री के निकट पत्थर पर खून की बूंदें दिखाई दीं। आदमी की घबराहट की चिल्लाहट सुन कर और आदमी झाने में उतर आए। उनमें एक बूढ़ा भी था जो अपने मालिक के साथ अनेक बार शिकार के मुहिम पर गया था। लालटेन वाले से लालटेन लेकर बूढ़ा झाने के पार खून की खोज पर चला। खून के खोज नीची दीवार तक गए और आगे एकदम आठ फीट नीचा खेत था। यहां मुलायम मिट्टी में बघेरे के पंजे के पग चिह्न थे। उस समय तक किसी को यह शक न

था कि लड़के को आदमखोर ले गया है क्योंकि हम लोग ने बघेरे के बारे में सुना तो था पर अब तक वह उनके गाँव में दस मील की सीमा तक हो रहा था। जैसे ही सबको यह मालूम हुआ कि लड़के को आदमखोर ले गया है स्त्री ने करुण क्रन्दन प्रारम्भ किया। आदमी अपने घरों में ढोल लेने भागे कुछ ने बन्दूक उठाई। उस गाँव में तीन बन्दूकें थीं—और कुछ ही मिनटों में वहाँ कुहराम-सा शुरू हो गया। रात भर ढोल पिटते रहे बन्दूकों के फायर होते रहे। सूर्य का प्रकाश होने पर लड़के का शव मिला और दो आदमी मुझे खबर देने आए।

मुखिया के साथ जैसे ही मैं गाँव के निकट आया स्त्री का करुणोत्पादक क्रन्दन सुना। वह मृतक बच्चे की माँ थी। वह ही सबसे पहले मुझे गाँव में मिली। मैं कोई डाक्टर नहीं हूँ पर यह स्पष्ट था कि दुखिया माता को बेहोशी का एक दौरा हो चुका है और दूसरा होनेवाला है। इस प्रकार के शोक-सागर में डूबे हुए मनुष्यों से बात करने की कला से अनभिज्ञ होने के कारण मैं इस बात का इच्छुक था कि उससे गत रात की दुर्घटना का वर्णन न करवाऊँ। पर वह तो बात कहने पर उतारू थी इसलिए मैंने बात करने में कोई रुकावट न डाली। जैसे ही वह करुण कथा कहने लगी वैसे ही स्पष्ट था कि अपनी दुखभरी बात कहने का उद्देश्य यह था कि वह गाँववालों के प्रति अपनी शिकायत की व्यथा कह सके क्योंकि गाँववालों ने बघेरे का पीछा करके उसके बच्चे को नहीं बचाया था। भरे दिल से हिचकी भरते हुए और दिल की वेदना को आँसुओं के तरल रूप में बहाते हुए उसने करुण अन्तर्वेदना प्रगट की कि गाँववाले उसके बच्चे को बचाने के लिए ठीक उस तरह जा सकते थे जैसा कि लड़के का पिता अगर जीवित होता तो उसे बचाने को जाता। मैंने उसे बताया कि गाँववालों के प्रति उसका दोषारोपण अन्यायपूर्ण है और मैंने उसे समझाया कि अगर उसका यह विश्वास है कि उसके लड़के को कोई जीवित बचा सकता था वह बिल्कुल गलत है क्योंकि जब बघेरे ने अपने कीले लड़के की गर्दन में गड़ा लिए तब उसके कीलों (नुकीले दाँतों) से उसका सिर गर्दन से टूट चुका था और बघेरे के उसके हाथ से

के जाने से पूर्व ही प्राण पखेरू उड़ चुके थे और कोई भी आदमी उसे जीवित रखने के लिए कुछ कर ही नहीं सकता था।

हाते में खड़े होकर मैं चाय पी रहा था और मेरे चारों ओर लगभग सौ आदमी खड़े थे। चाय पीते समय मैं इस बात को ठीक तौर से न समझ सका कि बघरे के आकार के जानवर ने बिना किसी आदमी के देखे दिन-दहाड़े हाते को कैसे पार किया। इसके अतिरिक्त एक दूसरा आश्चर्य यह था कि गाँव के कुत्तों ने उसके अस्तित्व को कैसे नहीं जान पाया।

मैं उस आठ फुटी दीवार के नीचे उतरा जिससे लड़के को मुँह में दबाए बघरा कूद गया था। खेत में खिचड़न के पीछे एक दूसरी बारह फीट ऊँची दीवार तक गया और आगे एक और खेत में। इस दूसरे खेत के किनारे चार फीट ऊँची एक घनी गुलाबों की झाड़ी थी। यहाँ बघरे ने लड़के की लाश को जमीन पर रखा था। झाड़ी में कोई मार्ग न पाकर उसने लड़के को पीठ पकड़ कर उसे मुँह में उठा लिया और झाड़ी को कूद कर दूसरी ओर दस फीट ऊँची दीवार के नीचे चला गया। इस तीसरी दीवार के नीचे गाँव के जानवरों का रास्ता था और बघरा इस मार्ग पर कुछ ही दूर गया होगा कि गाँव में भगदड़ शुरू हो गयी। बघरे ने लड़के की लाश को वहाँ गिरा दिया और पहाड़ी के नीचे चला गया। रात भर ढोल पिटते रहे बन्दूकें चलती रहीं इसलिए वह दुबारा लाश पर नहीं आया। ठीक बात मेरे लिए यह होती कि मैं लड़के की लाश को उस स्थान पर ले जाता जहाँ बघरे ने उसे छोड़ा था और बैठता। पर मेरे सामने दो कठिनाइयाँ थीं। एक तो बैठने को स्थान न था और अनुपयुक्त स्थान में बैठने को मेरी तबियत न करती थी।

निकटतम पेड़ वहाँ से तीन सौ गज दूर था और वह भी पत्तविहीन अखरोट का। इसलिए वहाँ बैठने का कोई सवाल ही न था। ईमानदारी की बात तो यह है कि जमीन पर बैठने का मुझमें साहस न था। सूर्यास्त समय मैं गाँव आया था। कुछ समय तो उस दुखिया माँ की बात सुनने में लगा कुछ चाय

पीने और कुछ बघेरे के बाज पर जाने में। इसलिए इतना प्रकाश न रह गया था कि ठहरने के लिए मैं सुरक्षित स्थान बना सकूँ, कम से कम ऐसा जो देखने में तो सुरक्षित मालूम हो। अगर मैं जमीन पर बैठता तो सब जगह एक ही सी थी, मैं कहीं भी बैठ सकता था। यह अंदाजा लगाने का समय न था कि बघेरा किस ओर से आवेगा। पर यह बात मैं अच्छी तरह समझता था कि यदि बघेरे ने आक्रमण किया तो मुझे वह हथियार प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलेगा जिसका मैं अभ्यस्त हूँ—वह हथियार है मेरी राइफल। क्योंकि जब बिना घायल बघेरे या शेर का सामना हो जाय तो बन्दूक या राइफल का चलाना सम्भव नहीं।

जब मैं निरीक्षण के बाद लौट आया तो मैंने मगनिया से कुल्हाड़ी, मजबूत खूँटा, मोगरा और कुत्ते की जंजीर मांगी। कुल्हाड़ी से तो हाल के बीच में गड्ढा खोदा और खूँटा ठोका और एक सिरे में जंजीर बाँध दी। तब मगनिया की सहायता से लड़के की लाश को वहाँ ले गया और जंजीर से बाँध लिया।

वह अज्ञेय शक्ति जो जीवन शृंखला का प्रतिनिधित्व करती है जिसे कोई भाग्य कहता है कोई किस्मत अगम्य है। पिछले कुछ दिनों में इस शक्ति ने घर के असहायों के जीवन का अन्त किया—उसी शक्ति ने उस लड़के के थोड़े से जीवन की शृंखला को काट लिया था—उस लड़के को जिसे उसकी विधवा माँ ने बड़े लाड़ प्यार से पाला पोसा था—उस बुढ़िया को अन्तिम दिनों में शोक-सागर में डाल दिया था। आशा थी कि वह कुटुम्ब का भरण-पोषण करेगा और माता की सेवा करेगा। लड़के की आकृति इस बात का प्रमाण थी कि माता ने संचित प्यार उड़ेल कर उसकी देखभाल की थी। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि हाय आज पर टुनिया मां अवरुद्ध कंठ से यही कहती हे परमेश्वर! मेरे बच्चे ने तेरा क्या पाप किया था? मेरा बच्चा जिसे सभी प्यार करते थे—जिसके कारण वह अपने जीवन के प्रारम्भ में ही इस भयंकर मौत के घाट उतरा। बघेरे का अपने स्थान पर रखने से पहले मैंने मगनिया से कह दिया था कि टुनिया मां और उसका

न जान से पूर्व ही प्राण पखेरु उड़ चुके थे और कोई भी आदमी उसे जीवित रखने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था।

हाथों में खड़े होकर मैं चाय पी रहा था और मेरे चारों ओर लगभग सौ आदमी खड़े थे। चाय पीते समय मैं इस बात को ठीक तौर से न समझ सका कि बघरे के आकार के जानवर ने बिना किसी आदमी के देखे दिन-दहाड़े हातों को कैसे पार किया। इसके अतिरिक्त एक दूसरा आश्चर्य यह था कि गांव के कुत्तों ने उसके अस्तित्व को कैसे नहीं जान पाया।

मैं उस आठ फुटी दीवार के नीचे उतरा जिससे लड़के को मुँह में दबाए बघरा कूद गया था। खेत में खिचड़न के पीछे एक दूसरी बारह फीट ऊंची दीवार तक गया और आगे एक और खेत में। इस दूसरे खेत के किनारे चार फीट ऊंची एक घनी गलावा की झाड़ी थी। यहां बघरे ने लड़के की लाश को जमीन पर रखा था। झाड़ी में कोई मार्ग न पाकर उसने लड़के की पीठ पकड़ कर उसे मुँह से उठा लिया और झाड़ी को कूद कर दूसरी ओर दस फीट ऊंची दीवार के नीचे चला गया। इस तीसरी दीवार के नीचे गांव के जानवरों का रास्ता था और बघरा इस मार्ग पर कुछ ही दूर गया होगा कि गांव में भगदड़ शुरू हो गया। बघरे ने लड़के की लाश को वहीं गिरा दिया और पहाड़ के नीचे चला गया। रात भर ढोल पिटते रहे बन्दूकें चलती रहीं इसलिए वह दुबारा लाश पर नहीं आया। ठीक बात मेरे लिए यह होती कि मैं लड़के की लाश को उस स्थान पर ले जाता जहां बघरे ने उसे छोड़ा था और बैठता। पर मेरे सामने दो कठिनाइयां थीं। एक तो बैठने का स्थान न था और अनुपयुक्त स्थान में बैठने को मेरा तबियत न करता था।

निकटतम पेड़ यहां से साठ सौ गज दूर था और वह भी पत्तविहीन अखरोट का। इसलिए वहां बैठने का कोई सवाल ही न था। ईमानदारी की बात तो यह है कि जमीन पर बैठने का मुझमें साहस न था। सूर्यास्त समय मैं गांव आया था। कुछ समय तो उस दुखिया मां की बात सुनने में लगा कुछ चाय

पत्ते और कुछ बघेरे के मारने पर जाने में। इसलिए इतना प्रकाश न रह गया था कि बैठने के लिए मैं सुरक्षित स्थान बना सकूँ कम से कम ऐसा जो देखने में सुरक्षित मालूम हो। अगर मैं ज़मीन पर बैठता, तो सब जगह एक-सी थी मैं कहीं भी बैठ सकता था। यह अन्दाज़ा लगाने का समय न था कि बघेरा किस ओर से आवेगा। पर यह बात मैं अच्छी तरह समझता था कि यदि बघेरे ने आक्रमण किया तो मुझे वह हथियार प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलेगा जिसका मैं अभ्यस्त हूँ—यह हथियार है मेरी राइफ़ल। क्योंकि जब बिना घायल बघेरे या शेर का सामना हो जाय तो बन्दूक या राइफ़ल का चलाना सम्भव नहीं।

जब मैं निरीक्षण के बाद लौट आया तो मैंने मनिया से कुल्हाड़ी, मज़बूत मोटा सोटा और कुत्ते की जंजीर माँगी। कुल्हाड़ी से तो हान के बीच में गड्ढा खोला और खूँटा ठोंका और एक सिरे से जंजीर बाँध दी। तब मनिया की सहायता से लड़के की लाश को बन्द ले गया और जंजीर से बाँध दिया।

यह अजेय शक्ति जो जीवन शृंखला का प्रतिनिधित्व करती है जिसे कोई भाग्य कहता है कोई किस्मत अगम्य है। पिछले कुछ दिनों में इस शक्ति ने घर के असन्तोष के जीवन को जन्म दिया—उसी शक्ति ने उस लड़के के थोड़े से जीवन की शृंखला को काट दिया था—उस लड़के को जिसे उसकी विधवा माँ ने बड़े लाड़-प्यार से पाल-पोसा था—उस बुढ़िया को अन्तिम दिनों में शोक-सागर में डाल दिया था। आशा थी कि वह कुटुम्ब का भरण-पोषण करेगा और माता की सेवा करेगा। लड़के की आकृति इस बात का प्रमाण थी कि माता ने संचित प्यार उड़ेल कर उसका लालन-पालन की थी। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि होश आने पर बुढ़िया माँ अकस्मात् कह उठी "हे परमेश्वर! मेरे बच्चे ने तेरा क्या बिगाड़ किया था?" मगर वहाँ जिसे सभी प्यार करते थे—जिसके कारण वह छोटे जीवन के प्रारम्भ में ही इस भयंकर मौत के घाट उतरा। पत्थरों की ढेर स्थान पर रखने से पहले मैंने लोगों से कह दिया था कि बुढ़िया माँ अब —

लड़की मकानों की पंक्ति के अंतिम कमरे में चले जायं। सोते समय मैंने पयाल माँग कर उस बुढ़िया के मकान के दरवाज़े के सामने के बरामदे में बिछा लिया।

अंधेरा हो चुका था। उपस्थित लोगों से मैंने कहा कि वे रात भर बिल्कुल चुप रहें और अपने-अपने घर जायं। मैं बरामदे में अपने स्थान पर बैठ गया। खम्भे में बगल के सहारे लेट कर सामने पराल डाल कर लड़के की लाश को देख सकता था पर लाश से मैं नहीं दिखाई पड़ सकता था।

यह ठीक है कि लड़के की लाश को ढूंढने में हल्ला मचा था पर फिर भी बघेरा आयगा और जब लाश स्थान पर न मिलेगी तो वह गांव में आयगा ऐसा मेरा विचार था। जिस आसानी से उसे पहला शिकार भसवाड़ा में मिला था वह उसे फिर भी आने को प्रेरित करेगी। मैंने पहरेदारी शुरू की।

सायंकाल में बादल इकट्ठे हो गए थे मानो स्त्री के रुदन और लड़के की लाश को देख कर आकाश का दिल उमड़ रहा हो और आठ बजे बुढ़िया के रोने के अतिरिक्त सब गांव शान्त मुद्रा में लीन था। बिजली चमकी, बादल गरजा और तूफान के प्यादों ने घोषणा कर दी कि प्रकृति का कोप प्रारम्भ होने वाला है। एक घंटे तक तूफान रहा। बिजली की जिह्वाएं-सी एक घंटे तक दिखाई पड़ती रहीं जिनसे होने में इतना प्रकाश था कि यदि चूहा भी निकलता तो मैं ठीक निशान लगा लेता। मेह तो बाद में बन्द हो गया पर आकाश घिरा रहा, कोई चीज़ हाथों-हाथ दिखाई नहीं पड़ती थी और बघेरे के लिए अब मौका था। पता नहीं वह किस दिशा से आवे पर उसे गांव के आने में उतनी ही देर थी जितनी उसके छिपाव के स्थान से यहां पहुंचने में।

स्त्री का रोना धोना अब मन्द था और चारों ओर प्रकृति में अब नीरवता थी। इसी तरह के शान्त वातावरण को मैं चाहता था और मैं केवल कानों से मालूम कर सकता था कि बघेरा आया है या नहीं। इसीलिए मैंने रस्सी के स्थान में कुत्ते की जगार काम में ली थी।

पराल जो मुझे दिया गया था बारूद की तरह सूखा था। मेरे कान लाश की

ओर लगे थे। पहली आहट जो मुझे मिली वह ठीक परों के पास मालूम हुई। कोई चीज धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ रही थी और पराल के ऊपर से जिस पर मैं लेटा था आ रही थी। मैं शाल पहने था जिसके कारण घुटने खुले थे। शायद ही इन खुले शरीर पर जानवर के बाल मन सा नरम प्रतीत हुए। यह सरकना आदमखोर के अतिरिक्त और किसी का नहीं हो सकता और वह तब तक सरकेगा जब तक मेरी गरदन न पकड़ ले। बाएं कंधे को मैंने सहारा दिया ताकि पैर जमा लूं और जैसे ही मैं घोड़ा चलाने वाला था कि एक छोटा जानवर मेरी छाती के बीच कूद आया। यह बिल्ली का बच्चा था जो तूफान में बाहर गया था और हर दरवाजा बन्द पाकर गर्मी और रक्षा के लिए मेरे पास आया था।

मेरे कोट के भीतर बिल्ली के बच्चे को अभी आराम मिला ही था और डर से मैं अभी चैन हो रहा था कि पुतलार खेतों से दूर एक धीमी गुर्राहट सुनाई पड़ी। वह गुर्राहट धीरे धीरे तेज हुई और अंत में वह एक अत्यंत क्रूर लड़ाई में परिवर्तित हो गई—इतनी क्रूर कि उसमें पूर्व लड़ाई की आवाज मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। स्पष्टतया आदमखोर उस जगह पर आया था जहां उसने पिछली रात लड़के की लाश को छोड़ा था। जब उसकी तलाश कर रहा था एक दूसरा नर बघेरा जो इस क्षेत्र विशेष को अपने शिकार का स्थान समझता था अनायास वहां आ गया और उस पर टूट पड़ा। जिस प्रकार की लड़ाई की आवाज को मैं सुन रहा था उस प्रकार की लड़ाइयां बड़ी असाधारण होती हैं क्योंकि मांसभक्षी पशु अपने इलाके में सीमित रहते हैं यदि किसी कारण एक ही जाति के एक ही लिंग के दो पशुओं की मुठभेड़ हो जाय तो एक नजर में ही एक दूसरे की ताकत पहचान लेते हैं और कमजोर बलवान के सामने से भाग जाता है।

आदमखोर बूढ़ा था पर वह आकार में बड़ा और शक्तिशाली था। उस पाचमी बगमीरू के इलाके में कोई दूसरा नर बघेरा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। पर भैंसवाड़ में वह अजनबी था और वहां उसका दखल मना था। जो मुसाफिर

यहां आकर उसने मोल ली थी उससे जान बचाने को लड़ना ही था। इसलिए वह लड़ रहा था।

बघेरे पर निशाना लेने का मेरा अवसर अब चला गया था। क्योंकि आदमखोर अपने आक्रमणकारी को हराने में सफल भी हुआ तो उसके घाव कुछ समय के लिए किसी को मारने में दिलचस्पी न लेने को बाध्य करेंगे। यह भी सम्भावना थी कि यह लड़ाई आदमखोर को घातक सिद्ध हो। ऐसी दशा में उसका अंत अव्याख्यात ही रहेगा। उसकी मौत एक बघेरे से मुठभेड़ में ही रहेगी जब कि सरकार और जनता के आठ वर्ष के सबके प्रयत्न अब तक उसके मारने में असफल ही रहेंगे।

पहली पकड़–कुश्ती–लगभग पांच मिनट चली और निरंतर क्रूरता से होती रही। पर रही वह अनिर्णीत। क्योंकि पकड़ के बाद में दोनों जानवरों की आवाजें सुनता रहा। दस या पंद्रह मिनट के अवकाश के बाद लड़ाई फिर शुरू हो गई। पर दुबारा कुश्ती पहले स्थान से दो सौ तीन सौ गज दूर हुई। यह स्पष्ट ही था कि स्थानीय मौरा–चम्पियन लड़ाई में जबरदस्त पड़ रहा था और धीरे-धीरे वह आदमखोर को अखाड़े से बाहर निकाल रहा था। तीसरी पकड़ पहली दो की अपेक्षा थोड़ी देर चली पर क्रूरता में वह किसी प्रकार कम न थी और जब एक लम्बे अवकाश के बाद कुश्ती शुरू हुई तो अखाड़ा हट कर एक पहाड़ की बगल में बना था जहां कुछ मिनटों के बाद लड़ाई की आवाज सुनाई न पड़ी।

अभी अंधेरे के छः घंटे बाकी थे और मुझे मालूम हो गया कि मुठभेड़ का निशाना असफल हो गया है और मेरी आशा कि बघेरों की कुश्ती आदमखोर की मौत में परिणत होगी केवल दुराशा ही रही। कुश्ती में आए घावों से उसकी न तो मानव मांस की इच्छा ही धीमी होगी और न उसको प्राप्त करने की क्षमता ही कम होगी।

बिल्ली का बच्चा रात भर आराम से सोता रहा। सूर्य की पहली किरण